ऊजळी आभा

(निर्मोही व्यास)

विकास प्रकाशन
4, चौधरी क्वाटर्स, स्टेडियम रोड, बीकानेर-334001

लेखक

सस्करण – 2001

मूल्य रुपये एक सौ

लेजर टाईप
राजश्री कम्प्यूटर्स
मोहता चौक बीकानेर
☎ 201392 (R)

प्रकाशक
विकास प्रकाशन
4 चौधरी क्वार्टर्स स्टेडियम रोड़ बीकानेर 334001
फोन–

मुद्रक
कल्याणी प्रिण्टर्स
अलख सागर रोड, बीकानेर

OOZLI ABHA (Rajasthani Short Stories) *by Sh. Nirmohi Vyas* Rs 100/

म्हारी बात

'ऊजळी आभा' म्हारो पैलो कहाणी सग्रह है। सन् 1958 सू लेय'नै अदाळ तई कहाणिया तो निरी रची अर राजस्थानी री चावी–ठावी पत्रिकावा में कणै–कणै छपती भी रैयी। क्यूकै म्हारो घणकरो जुडाव नाटका सू रैयो इण कारणै कहाणिया कानी घणो ध्यान नीं दे सक्यो।

विकास प्रकाशन रै भाई बृजमोहन पारीक रो म्हैं घणो आभारी हू जिका म्हनै म्हारी कहाणिया नै पोथी–पाठका साम्ही आगै लावण सारू हेलो मार्‌यो।

ईं पोथी री भूमिका लिखबा खातर जद घणा मानीजता डॉ प्रकाश अमरावत सू अरज करी तो राजी–राजी त्यार होय'नै बा जिकी लाबी–चवडी भूमिका लिखी इण री म्हनै घोत खुसी है अर म्हैं बानै धन्यवाद अर्पित करू।

अै कहाणिया पढ र जे अेक भी पाठक समाज मे विकराळ रूप धारण करती कुरीतिया अर बुराइया मेटण नै अळख जगा सक्यो तो म्हैं म्हारो रचनाधरम सुफल होयो मानसू।

– निर्मोही व्यास

दिनाक 05 07 2001
(गुरु पूर्णिमा)
अनुराग
1 स 22 पवनपुरी
बीकानेर–334003

अनुक्रमणिका

भूमिका

धोरा री धरती बीकानेर रा घणा नामी नाटककार निर्मोही व्यास रा कैई राजस्थानी नाटक छपिया अर पाठका वानै सराया। साहित्य जगत वानै मान दियौ। मायड भाषा राजस्थानी री आ मोटी विशेषता मानू कै आ भाषा आपरै लेखका अर पाठका रै अतस मे ऊडी जडा जमाय लेवै उण हेज री प्रेम री जिण सू मिनख बध जावै। राजस्थानी रै उणीज हेज में हळाबोळ व्हीयोडा निर्मोहीजी नाटक लिखता–लिखता कहाणिया लिखण लागग्या अर साहित्य ससार में वारी दोवडी पिछाण व्हेगी नाटककार अर कहाणीकार। भाषा रो हेत लेवै कीं कोनी। देवै ई देवै है।

निर्मोही जी रौ ओ राजस्थानी कथा सग्रै जिकौ साहित्य जगत मे बेगो'ई कू कू पगल्या माडण री उडीक मे है। उणमे छोटी–छोटी सौळै क कहाणिया है। विषयवस्तु री दीठ सू सब अपणै आप मे ठावी अर न्यारी। जुग बोध अर जनसदेस रा उद्देश्य सू अै कहाणिया लिखीजी। नैनी नैनी कहाणिया रा नैना–2 सवाद हिये ढूकै जैडा। घणी मोटी लम्बी अर घूमावदार कथावस्तु सू लेखक कोसा अळगा रैह्या।

सामान्य तबकै रा मिनख ई आ कहाणिया रा पात्र है। वारै बोलण मे वारी भावनावा री अभिव्यक्ति मे वारै व्यवहार मे साच निजर आवै। ओ इज राजस्थानी जनजीवण है। भलाई वो गाव मे रेवै कै सैर मे। पण सामान्य वर्ग ई साचै अर्था मे इण प्रदेस रौ समाज है। आ कहाणिया रा पात्र वारी रेवणगत वारा सगळा काम–कळाप साव सैंदा अर लौकिक जीवण रै घणा नेडा ढूकता सा दीखै। लेखक री भाषा मे सेरीपणौ सुमट लखावै पण कहाणी रै नूवै हाव–भाव रै कारण आ कमी पूरीज जावै। छोटी कहाणिया मे घणो उळझणो नी पडै झट कहाणी रो मूळ पकड में आय जावै अर एक रै पछै एक कहाणी सारगर्भित रूप सू आगै चालती रेवै।

इण कथा सग्रै री घणकरी कहाणिया नारी पात्रा नै लेय'र लिखीजी है। सुखिया रौ सुख दादी मा विदोत्तमा ऊजळी आभा निपूती पछतावो भीखली दुनिया दीखे जैडी कोनी गीदकी बायला बाई लेतू अर माजी। अै सगळी

कहाणिया लुगाई रा न्यारा न्यारा रूप अर गुणा नै लये'र लिखीजी है। औ सब नारी चरित्र समाज रा नारी वर्ग नै धीज पतीज त्याग समर्पण सेवाभाव स्वाभिमान सतीत्त्व री सीख देवै। दूजी कहाणिया'ई घर परिवार अर समाज री अबखाया नै उघाडै अर निवेडौ करण रा जतन करै।

सुखिया रो सुख— ग्रामीण जीवण रौ दरसाव जिणमें कैथा री नायिका सुखिया दु:ख अर दौरप मे ई आपरै, सुहाग (सवाग) रिछ्यां री बात सोचे। सुखिया रै बूढे बाप री छैली सासा समझोतो कर राख्यौ है सुखिया रा सुख सू। कै एक आवै तो दूजी जावै। इण अर्थ मात्र मे ई सवेदना है।

आछो करयो— आज दिन ताई बूढा माईत नाजोगा अर सवारथी बेटा–बहुवा रा ओहडा सुणता आया है। पण इण कहाणी नै कथाकार नूवो मोड देवै। बूढा अर अेकाकी बाप महादेव जद बेटा–बहू री खरी–खोटी काना सुण लेवै तो आपरै उमर री अस्हाय गवरी बाई सू कोरट मेरिज कर बेटा–बहु नै पादरा कर देवै। बूढा रै वास्तै नूवे जीवण रौ सदेस है। महादेव रौ ओ काम समाज अर सतान दोनू रै वास्ते एक चुनौती है।

दादी मा— एक साख नी एक सम्बन्ध नी फगत दुखा रौ प्रतीक है। तोटा–नफा अठै ताई के मिनखा रा घाटा'ई वे सहन करै पण चरित्र माथै काळख (कालख) लियौडी बहू घर मे कीकर सवावै ? सासा है जितरै भूडौ भलौ बगत देखणो ई पडै। पण कठै ताई ? सदमा ऊपर सदमा सू आखिर मिनख री हिम्मत तूट ई जावै। **भीखली**–बाल विधवा री जूण काटती एक हिमतण अर परकजू लुगाई है। ठाली बैठा नै फितूर सूजै इण वास्तै भीखली सरीर सू काम धन्धो कर'नै सब री मदत्त करै। आपरै काम सू सब रौ जीव सोरौ करै। नौकराणी होवता थका ई वा मन री राणी है। बाल विधवा रै वास्तै पाछो ब्याव करणो ई सुखी जीवण रौ रस्तौ नी बताय लेखक नूवै ढाळै जीवण री सीख दी है।

विदोत्तमा— मध्यकाल री वीरागना रौ चरित्र है। कायर अर दोगला पति रौ साथ छोड पेट मे कटार खाय आपरी इहलीला मेट देवै। कहाणी राजस्थानी सस्कृति री जूनी रीत नै पाछी जीवती करै। आज रा जुग मे नूवी कहाणी है एक ऐतिहासिक कहाणी है।

पछतावो— मिनख भूल करनै पछतावो कर लेवै तो मन रो सगळो मेल धुप जावै। पछतावै रा दोय आसू अतस न ऊजळो कर न्हाकै। बाई (सुगनी बाई) रौ निरमळ वेवार (व्यवहार) सीमा रै कूडै 'मैं नै तोड देवै। क्यूकै अपणायत आपरौ–परायो नी देखै। भैला रैह्या रा मोह है आ कैवत साव साची है।

बगत— बगत सब नै लारै छोड र आगै बध जावै। बगत सू आगै कुण गियो है ? एक परिवार री सवेदनशील कहाणी है। एक बगत अेडो आवे कै

भाया–भाया में खार पनप जावै अर बिछड जावै। एक बगत बायरी ओडो वाजै कै सबनै एक कर मिलाय देवै। बगत ई मिलावै अर बगत'ई विछोह री पीड देवै।

ऊजळी आभा रो चरित घणो ऊजळो है। सेवा भाव सू सगळा रौ मन उण जीत लियौ। आभा तो बाइज ही पण 'सलमा' अर 'आभा' जद एक व्हेगी तो उणरै पति सुधीर री आख्या खुलगी अर आभा रा ऊजळा दिन धिर आया।

निपूती– लापरवाही गलतफेहमी अर बिना सोचिया समझिया गळत काम कर्या लारै पछतावौ रैह्य जावै। निरासा में आस री एक किरण'ई मिनख रौ जीवण सवार देवै पछै धीजो राखणिया रौ साथ तो रामजी सदा'ई देवै।

आ दुनिया दीखे जैडी कोनी साव साची बात है। एक जीवणी रौ चरित्र भीखलै नै आखी दुनिया री पिछाण कराय देवै। बगत रै साथै ई जुडियौडो है जोग सजोग। बैमाता रा लिख्यौडा लेख कुण बाच सक्यौ है ? जोग सजोग सू दो बिछड्यौडा प्रेमी मिलै अर एक अटूट सम्बन्ध में बध जावै।

गीदकी आज री बेटी है। आपरी मन्साबा नै दबावै कोनी। मन'ई मन में छीजै कोनी। जद उणरौ काको चार–टाबरा रा बाप (दूजवर) सू उणरै ब्याव री बात करै तो मा बायरी गीदकी आपरा दादा नै मन री बात बताय देवै।

राजस्थानी मे आ कैवत है कै 'बळद अर बेटी बोल'र कद केवै' अर्थात् जिण खूटै बध जावै। पण गीदकी काल री बेटया री पात तोडती कैवता–ओखाणा नै नकारती मन री बात केवै अर साईना मोटयार सू ब्याव कर आपरौ जीवण सुधारै। नारी चेतना नै जगावण वाळी है आ कहाणी। बायला बाई एक दूजी सावचेत चतुर नारी रौ उदाहरण है। आपरी सूझ–बूझ अर हुसियारी सू भोळा–ढाळा धणी नै कैवट'र आपरौ घर जमाय लेवै। समाज में पैठ जमाय लेवै। नौकरीदार अर घर रा कामकाज मे घरै बैठी लुगाया सू ई आगै जावै। सुभाव बायला बाई रौ दुस्मिया भैळा खटै जैडौ। वा री भावनावा हरैक मिनख रै हिये ढूकै जैड़ी है। सब बाता रै साथै एक आछा पड़ौसी रा गुण वामे हैं।

सवेदनावा रै साथै वेदना अर मनोरजन ई आ कहाणिया में है। 'चोखाराम रो घोळको' एक कजूस सेठ री बात सू मेळ खावै। विषय साव न्यारी निरवाळी है। सेठ रौ कमायौडो सगळौ धन जिणरी तीजी गति होवणी सुभाविक है अर वा है 'नास'। पण सेठाणी री चुतराई सू राजू रौ घर परिवार वसै अर बधै। लेतू एक असहाय विधवा री वेदना है। 'एक रति बिन पाव रति' है। घरधणी बिना ढोर'ई सूना फिरै। धणी रै खूटिया पछै सासू, जेठ जेठाणी सब लेतू माथै अत्याचार करै। भगवान कोई तो स्यारौ करै ई है। देवर लेतू री पीड़ नै जाणै अर दु:ख मे भागीदार बणै। दुखियारी लेतू सुख री चावना मे ई आपरी आख मींच लेवै। माजी उण बूढी मा री कहाणी है जिणरै कनै धन अर ममता दोनू है। 'रोटी री किसी कोर खारी अर किसी मीठी।' माईता वास्तै तो

कपूत अर सपूत दोनू औलादा बरोबर व्है। माजी गाव रौ मकान अर गैणा–गाठ
बेटा–वहू नै सूप र बताय देवै कै माईता वास्तै सब टाबर बराबर है। उणा
सम्पत्ति मे सब रो सीर है।

निर्मोहीजी री सगळी कहाणिया जन मानस नै सावचेत करे चेत
जगावै मानखै नै सीख देवै समै रै साथै बगत बायरै रै साथै चालणो सिखावै
आटो अर अबखो मारग'ई जै मजिल लग पूगाय देवै तो वो सबखो पाधरो सा
सोरो बण जावै। मजिल मिळिया मारग री अबखाया नै मिनख भूल जावै।

कामना करू कै आपरो सिरजण आगै बधतौ रेवै। कहाणीकार रै रू
मे आपरौ जस बधै।

डॉ श्रीमती प्रकाश अमरावत
विभागाध्यक्ष–राजस्थानी विभाग
डूगर महाविद्यालय बीकानेर

सुखिया रो सुहाग

अजकाळै अजोगती बाता रो कोई छेडो कोनी। सासा रै चौखटै पर बुझण वाळा दीया काळी–पीळी आधी मे भी जळता देख्या जा सकै। तेज हवा रै थपेडा सू जोत भला ही अधमरी अर फडफडाती सी लागो पण हप्प करती बुझ जावै आ बात कोनी।

घणा अळगा क्यू जावा। धनजी नै ही देखो। अस्सी रै नेडैछेडै पूगता ही अेकर तो इस्या मादा पड्या कै जीणै री आस ही जावती रैयी। दरखत रै सूखै ठूठ दई आधी रै वेग मे आज गिरै–काल गिरै। पण च्यार साल सू बत्ती होयग्या अजू तई वारो की नीं बिगडयो। हा धासी आज भी बानै जिज नीं लेवण दै पण सास उखडणै जिस्यी कणै कोई सरसराट नीं सुणी।

रात रो राकछस बरसती विरखा मे ज्यू–ज्यू मू फाडतो अरडावै धनजी री धासी भी पळ–पळ आगै बधती बाज नीं आवै। इस्यो ही बारो बोदो पडवो। ठीक वारी तरिया ही बस ढैवू–ढैवू हो रैयो है। उण रै आगै छाज्योडै छपरै रा डाखळा तो हेटै खिरणै रो तातो ही लगा राख्यो है।

पाणी रो टपूकडो पडवै सू वेसी छपरै मे बैगो इतराया करै। सिझ्या जद वादळ थोडा गरजता देख्या तो धनजी री खाट पैला सू ही माय पडवै मे घतवा दी।

इया धनजी री असली बैठक तो छपरै मे हीज है। बठै ही खाट पर पडया–पडया खासता रैवै। सुखिया रै ब्याव सू बोत पैला ही होयग्या होवैला बीसेक बरस धनजी पडवै सू छपरै मे आयग्या हा। सरू–सरू मे सुखिया अर बीं री मा पडवै मे सूया करती। अबै सूवै सुखिया अर बींरो बींद छोटूराम। सुखिया री मा थोडा'क बरस होया चालती रैयी। अबै धनजी कनै छपरै मे सुखिया रो बेटो जीतू आपरी माची ढाल लेवै।

पडवै मे लेटया धनजी नै आज आपरी धासी सू बत्ती जवाई राणा री फिकर सता रैयी है। रेय–रेय नै सुखिया नै हेलो देय'नै पूछै–जवाई सा आयग्या काई ?

सुखिया री जगा जीतू ही झट उथळो देंवतो होवै–नानाजी थे घणी चिन्ता ना करो। जी सा रै आवण रो कोई पुख्ता टैम कोनी। आ जावैला आपैई।

छोटूराम री दारू पीवण री लत अब कीं वेजा ही बधगी। इण कारण सुखिया रै दुखा री बाढ भी आयै दिन उछाळा खावती रैवै। इया भी बा अणभागी रैयी जद सू ब्याव हुयो। कदै आ जाण ही नीं सकी कै सुख रो अरथ काई होवै। परणीजण रै बाद घर मे कदै सायती देखी होवै तो जाणै।

आज दिनूगै छोटूराम जद सिझ्या री दारू खातर रिपिया माग्या तो सुखिया पडुत्तर मे अेकदम हाथ झडका दिया। रीस रा कूडा दग्गड दिखाती बोली– पी रै मे रिपिया रो कोई खजाणो नीं गाडयोडो कै खोद'र रोजीना देंवती रैवू। बोला–बोला चल्या जावो नीं जणै इस्यो घमसाण मचैलो के लोग देखता ही रैय जावैला।

ई बात माथै छोटूराम रो पारो आसमान पर चढग्यो। गुस्सै मे इस्यो रातोपीळो होयो कै बींरा होठ फडकण लागग्या। बस गनीमत समझो कै माराकूटी नीं करी। बारै जावतो–जावतो मू मे आवै ज्यू आवळ–कावळ बोलग्यो। अेडी गदी–गदी गाळया बकग्यो कै कैवण मे नीं आय।

सुखिया नै तो इयाकला कडवा बोल सैवण री आदत सी पडगी ही। अै फडफडाटा तो बा आयै दिन देखती रैवै। फेर बा आ भी तो जाणै कै धणी रै साम्है मढण री हिम्मत जुटावणी बोत ओखी। लुगाई री जात। बोलै तो मरै नीं बोलै तो मरै। अणपढ मरद रो काम कूटणो अर लुगाई रो काम कूटीजणो– आ बात बडेरा री सुणती आई है। इण कारण ओ सोच र बा चुप्पी साध लेवै कै भाग भुआळी खायोडै नै अै दिन तो देखणा ही पडै।

बाप जद बेटी नै दुखी देखै तो काळजो तो माय सू कळपै हीज। ध ानजी रै जी मे सोर्‌प कोनी। हियै रै माय कणै–कणै तो इस्या सलूका उठै कै निरी ताळ तई कपकपी बद ही नीं होवै।

असल मे धनजी रै मन मे आ बात घर करगी कै सुखिया रै दुखा रा असली दोसी बैहीज है। अक्सर कैया करता– बारी अकल रो पैंदो उगडग्यो जिको बै रिस्तेदारा री बाता मे आयग्या। उण बगत ओ पतो नीं लगायो कै बारा होवण वाळा जवाई किस्या'क है। लोगा बतायौ कै खानदान चोखो है। छोरै रा बाप केसरीजी बोत मानीजता सरपच है। बै मानग्या। सोच्यो–इस्यी मोटी गवाडी दूजी ठौड मिळबा री नीं। केसरजी रै पाच–पाच मोटियार बेटा है। दस–दस गाया–भैंस्या दुइजै। काईं कमी है ?

धूमधाम सू ब्याव होयो अर सुखिया सासरे व्हीर होयी। पण जद पूठी आई तो वेरो लाग्यो कै बींद तो दारू रै आगै बीनणी नै तो कीं समझै ही कोनी। सुखिया रा तो सारा सुपना ही बिखरग्या। अबै काईं होवै ? फेरा लेवणा हा लेइजग्या। जी नै थावस देवण रै सिवाय दूजो कोई चारो नीं हो।

धनजी तो माय-माय कझलाइजग्या। इस्यी तो बा कदै सोची ही कोनी कै बेटी रै भाग मे ब्याव होंवता ही अेडी भगदड मच जासी। बस ओ सोच'र जी नै जजमाता रैया कै केसरीजी रै होवतै थका चिंता री बात कोनी। इस्यो कुण बाप होसी जिकै नै बेटै री फिकर नीं होवै। अेडै बेटै नै भी पळोटणै में बारै वास्तै कोई दिक्कत कोनी। पण कुजोगती री बात अेक दिन केसरीजी री भी आख्या मींचीजगी। बस बारै जाता ही गवाडी अेकदम गताघम होयगी।

माथै सू बाप रो सायो उठता ही सगळा बेटा न्यारा-न्यारा होयग्या। बडोडा च्यारू आप-आपरी नुवी गवाडी बसाली अर निकम्मो छोटूराम सुखिया नै लेयर सासरै मे आ धमक्यो। बो अेडो कुमाणस कै आपरी पाती री सारी जायदाद दारू मे उडाय काढी अर अबै सुखिया रो काळजो खावण नै तुलियोडो है।

सुखिया घणो ही समझायो कै बेकार बैठणो आज रै जुग में कोई नै सोभा नी देवै। कोई न कोई धन्धो करणै मे ही स्याणप है। फेर घरजवाई वास्तै तो आ बोत ही जरूरी है। नीं जणै लोग टोट कस्या बिना नीं रैवे। पण चोपडै घडै छाट ठैरै तो छोटूराम रै माथै की असर होवै। बीं तो अेकदम नागाई हीज धार ली। जिको भी बींरै माथै आगळी उठावै बो बीं नै अेडा-अेडा उथळा देवै कै साम्है वाळै री बोलती बन्द। बीं नै ओ कैंवता रत्ती भर भी लाज नीं आवै कै म्हैं कमावू, चावै म्हारी लुगाई थानै काई ? मौजमस्ती म्हैं म्हारै भाग में लिखार लायो हू। थे क्यू जळो ? इण कारणै लोग फेर बींनै कैवणो ही छोड दियो।

अबै तो छोटूराम री आ हालत कै जिकी दारू नै पैला बो होठा सू लगावण खातर ऊतावळो रैंवतो बाहीज दारू आज बींनै सरैआम गळै लगावण सारू छलकती निजर आवै। सुखिया जद ओ नजारो देखै तो मन मसोस र रैय जावै। काई करै ? कणै-कणै तो जी में इस्यी आवै कै कठै जाय'नै कूवो-खाड कर लेवै। साची बात है। अेड़ै अकरमी अर अन्यायी धणी रै सागै रैवण सू तो मरणो चोखो। पाणी कठा तईं आ जावै तो दूजी बात और सोच ही काई सकै ? फेर ख्याल आवै-रे जिवडा कळाप कर्या सू काई होवै ? किसमत में जिकी विपदावा झेलणी लिखी है बै तो झेलणी ही पड़सी।

अजूबै री बात कै इतरा कैवा काढण रै बावजूद भी सुखिया कदै आपरै धरम-करम सू नीं डिगी। बा हमेसा कैवे-म्हारो मोटियार जिस्यो भी है म्हारो है। जणै हीज तो अताळ निरी ताळ सू अेकली बैठी धणी री बाट जोवण मे आख्या बिछा मेली है। नींद तो सौत बण'र कणकरी रिसाणी होय'र अळगी होयगी। इण बीच बुरा अर अणचाया विचारा रा कई बार बवाळ उठया पण फेर आपैई आप थमग्या।

धनजी सूता-सूता चिन्ता करै-जवाईसा इत्ती देर तो कदै को लगावै नीं आज काई होयो ? अबै तो छाटा भी मोळी पड़गी। अवार तईं तो बानै आ

जावणो चइजतो। फेर सोचबा लाग्या-- करयो भी तो काई जावै ? बारो कोई ठायो-ठिकाणो भी तो कोनी। कोई दूढै भी तो कठै ? वारा यार-भायला भी तो निरा है। रोज बोतला खुलै। कणै कीं रै अठै तो कणै कीं रै अठे। आज फेर इयै बरसते पाणी मे वारी बोतला भी तो बरसी होवैली। बे जद बरसे तो बैगी सी थमै भी कोनी।

सूता-सूता नै ही अेकाअेक पुराणी मायली टीस फेरू काळजो कचोटणै लागे-सुखिया रै भविस वास्तै जे बै कीं गइराई सू छानबीन करता तो आज बीं नै अै दिन देखणा नीं पडता। खुद री नासमझी सू बेटी नै कसाई रै खूटै बाधण रो हीज ओ फळ है कै बारै मायलो पिछतावो आज तई गयो कोनी। खुद री गळत्या ही गदी नाळ्या रा कीडा बणर आज बारै साम्हैं सापरतेक किलबिळावै अर बै चमगूगै ज्यू देखणे रै सिवाय और कीं नीं कर सकै।

उठीनै छोटूराम आज रीस मे उफणतो दिन भर अठीनै-बठीनै कोरो धूड खावतो फिर्‌यो। रोटी भी नीं जीमीं। सिझ्या भायला कनै गयो तो अेकदम मूढो लट्‌कायोडो सो। भायला भी बीं सू कीं उकतायोडा हा। सासरै में दुक्कडखोर सू बत्ती बारै आगै छोटूराम री कोई औकात नीं ही। ईं कारण बै आयै दिन बीरा छोडा उतारता। आज जद बींनै खाली हाथ आयो देख्यो तो बै उबळ पडया। पैला तो ललबायारो कैय'नै बींरो सागीडो पाणी उतार्‌यो अर फेर मुफतरी दारू पीवण सारु आवै ज्यू भूडण लागा। छेकड रीसा बळता बीं रै मूढै मे जोरधिगाणै इत्ती दारू उडेल काढी कै नसे रा सगळा कण छोटूराम रै माय तई खळखळाइजग्या।

ठौड-ठौड ठोकर खाय'नै गिरतो-सभळतो छोटूराम टापरै पूग्यो जित्तै आधी रात ढळगी। उण वगत भी सुखिया बैठी अडीकै ही। फुरती सू उठ'र बींरो हाथ झाल्यो अर लेजाय'नै पाधरो माचे पर ही लिटायो। अतस मे उग्योडी रीस-खीस री सगळी जडा नै झट उखाड'र अळगी न्हाखी अर मन ही मन खुद नै कोसती पैला तो बींरा जूता खोल्या कादै सू भर्‌योडा कपडा उतार'नै अेक तरफ पटक्या अर फेर गमछै सू सगळो डील पूछयो। पण बो तो इस्यो बेसुध कै बींनै कीं ठाह ही नीं। बस अणबोल्यो सूतो रैयो। ना रोटी मागी ना पाणी पीवण रो कैयो। सुखिया ओ सोच'र कै बिरखा बरसी है इण कारण आज आ कीं घणी चढा ली है चुपचाप आपरी चटाई माथै पग भेळा कर'नै आडी होयगी।

भोर में धनजी रो खखारो सुण्यो कै सुखिया उठर ऊभी होयी। जीतू अजू तई जाग्यो कोनी। छोटूराम री भी आख लाग्योडी ही।

सुखिया छपरै में अेक कानी राख्योड़ी आली थेपडिया माय सू सूखी टाळ-टाळ'र अळगी करी अर चूलो सुळगायो। चाय त्यार हुई जित्तै जीतू भी जागग्यो।

गा'रै–दोइतै नै चाय रा कप झलार बीं छोटूराम नै हेला पाडया। नीं जाग्यो तो कनै जाय नै चिचोडयो। पण वो होस मे होवै तो जागै।

धनजी तो देखता ही समझग्या कै हालत ठीक कोनी। अजू तई उठया नीं इण रो मतळब है दाळ में कीं काळो है। जीतू सू बोल्या– भाज'र दवाखाणै तईं री रिक्सा ले आ।

दवाखाणै रो नाव सुणता ही सुखिया रा तो हाथ–पाव फूलग्या। बस रूलाई फूटणी बाकी ही।

जीतू भाजर रिक्सा ले आयो। मा–बेटा दोनू बैगा सा छोटूराम नै दवाखाणै लेयग्या। धनजी मे इत्ती सरधा नीं ही कै वै उणा रै सागै जावता। जवाई री इस्यी हालत देख'र बारी तो इया ही धूजणी छूटगी। रैय–रैय नै इस्या बुरा ख्याल आवण लागा कै काळजै मे जाणै सी बड़ग्यो होवै।

दवाखाणै पूगता ही सुखिया तो अेकदम फीस गडी। रोवती–रोंवती डाक्टर सू बोली–म्हारो सुहाग बचाल्यो डॉक्टर साब म्हारो सुहाग बचाल्यो। नीं जणै म्हैं तो रूळगी समझो। थारी जिकी भी फीस है म्हैं देवा नै त्यार हू। खून चईजै तो म्हारो सगळो ही खून निकाळ लेवो। पण जिया–तिया म्हारै जीतू रै जी'सा नै सावळ कर दो।

डाक्टर बोल्यो– बाई थावस राख। डरणै जेडी बात नीं है। जरूरत सू ज्यादा दारु पेट मे जावण सू ईं रै फेफडा मे धचको लाग्यो है। जे आगै ध्यान नहीं राख्यो तो दोनू फेफड़ा गळ जासी। इत्तो कैय'नै डाक्टर आपरै उपचार में लागग्यो। दो–अेक अेडी खुराका दीन्ही कै छोटूराम रै मायलो सारो कादो बारै निकळ आयो। घडी क नै बीं नै होस भी आयग्यो।

धणी रै आख्या खोलता ही सुखिया रै सास में सास आयो।

डाक्टर कीं समझावण लागो कै घर री सायती मे दराड घातण वाळी ई दारू सू जिको नातो नीं तोडै तो समझो खुद रै सागै आखै खानदान री बरबादी रो भी वो भागीदार होवै। डाक्टर री आ सीख छोटूराम नै अेकाअेक भायगी। वो अणबोल्यो ही उणा रै साम्है आपरा कान अपडया तो सिराणै ऊभी सुखिया रै होठा हरख री हरियाळी सी छायगी।

साची लुगाई तो सदा मिनख रै लारै ही भली। उण रै विना वा अेकदम अधूरी है। सुहाग रो रग किस्यो भी होवो सुहाग तो आखर सुहाग ही है। लुगाई जात नै दुनिया री निजरा सू कोई बचावण वाळो है तो बींरो सुहाग हीज है।

दवाखाणै सू छुट्टी मिळता ही तीनू झट घरै पूगता ही होया। धनजी नै देख्यो बै छपरै में खाट पर सूता गहरी नींद लेवै हा। माफी मागणै री दीठ सू छोटूराम बारो काधो झकझोर नै उठाणो चायो तो ठाह लागी कै हसो तो उडग्यो।

जी टैम दवाखाणै मे डाक्टर साम्है छोटूराम आपरा कान अपडर आईन्दा दारू नीं पीवण रो मानस बणावै हो उणी टैम धनजी आपै ई लखग्या कै वारो पिछतावो अब पूरो होयग्यो। उण रै बाद ही बारी बरसा सू अटक्योडी सास आपरी चोखट छोड'र अळगी जावती रैयी।

छोटूराम आख्या फाडया जठै धनजी नै अेकटेक देखतो ओ सोचै हो कै बेटी रै सुहाग री चिन्ता बानै माय–माय झुळसगी बठै सुखिया रै मूढै अेकाअेक इस्यी बाक फाटी कै आखती–पाखती रा लोग भेळा होवता देर नीं लगाई।

□□

आछो करयो

जद सू पारवती रो साथ छूट्यो महादेव रो जीवण दिनोदिन नीरस होंवतो गयो। अबै वारो कोई काम में जी नीं लागै। आ च्यार–पाच बरसा में सरीर सूक'र काटो होयग्यो। मूढै माथै दाढी वधगी नै आख्या भी मायनै धसगी। पैरण–ओढण री भी सुध नीं रैयी। पारवती रै लारै ही वारी सारी सुखसायती जावती रैयी।

नौकरी सू रिटायर होवण में ओजू दो साल बाकी है। पण इया लागै जाणै रिटायर हुया नै दस–बीस बरस होयग्या होवै। बस आ भली समझो'कै नसड़ी हिलबा नीं लागी। नीं जणै जावक डोकरा हीज दीखण लाग जावता।

लारलै कई दिना सू महादेव रो डील सावळ नीं है। अमूझणी भोत आवै। रात मे नींद नीं आवण सू माथो भी भारी–भारी रैवै।

रैय–रैय'र पारवती रो चैरो महादेव री आख्या साम्है आ जावै। अेड़ी बगत लुगाई री याद आया बिना रैवै ही नीं। फेर पारवती सू सनेव भी तो निरो हो। वा भी धणी रै लारै हरदम चिप्योडी हीज रैंवती। महादेव जठै जावता पारवती छाया री तरिया वारै सागै रैंवती।

कदै कदास पारवती नै मायकै जावणो पडतो तो महादेव दूजै दिन ही पूठा लेवण नै पूग जावता। साची बात आ है कै एक दूजै सू कोई कदै अळगो हुयो हीज कोनी। एकर जरूर दो–ढाई मईना पारवती मायकै रैयी जद धीरज होयो। पैली सुवाड़ जद मायकै में हीज हुया करती। उण रै बाद तो पारवती मायकै जावण रो कदै नाव ही नीं लियो। एकाध दिन वास्तै जावती तो महादेव सागै जावता। नीरज तो अठै हीज हुयो।

आज महादेव की वैगा ही उठग्या। न्हाया–धोया अर फेर बारै सू बारणो ओढाळ'र मदिर चला गया। तबियत दो–तीन दिन सू ठीक ही। नीरज अर बींरी बऊ जानकी अबार ताईं उठया ही नीं हा।

मदिर जाय'नै पूठा आया अर घर में घुसबा लाग्या'कै काना में जानकी रा कीं कड़वा बोल सुणाई पड़्या। महादेव रा पग चौखट पर ही थमग्या।

जानकी धणी नै कैवै ही– म्हैं तो थारै बापूजी सू नाकोनाक आयगी। ज्यू–ज्यू बूढा होंवता जा रैया है बुद्धि भी वारी सठियाती जा रैयी है। आ तो

भली हुई कै म्है बैगी सी उठगी। नीं जणै बारै भावै तो कोई भी चुपकै सी आय'नै सामान उठा'र ले जावो परा।

पण आ तो बता होयो काईं ? या कोरी बडबड हीज करती रैसी ? –नीरज बात री सच्चाई जाणनी चायी।

थानै तो सदा म्हारी बडबड ही सूझै। ओ नीं होवै था सू कै बूढियै नै समझा देवो के जद बारै जावै तो कोई नै जगा र जावै। ताकै माय सू कूटो बद कियो जा सकै। इया नीं कै बारै सू ही बारणो ओढाळ र चल्या जावै। अर्जी बानै तो इत्ती भी अक्कल कोनी कै ओढाल्यै बारणै रो भी कोई भरोसो होवै। हवा सू भी खुल सकै। अर खुल्योडो देख र तो कोई भी माय आ सकै। कदै कोई चोळको होयग्यो जद ! लोग आपा रै माथै ही धूड घातसी। बानै कोई नीं कैवै। नुकसाण होसी जिको पाखती। – जानकी रीस मे उफणती मू मे आवै ज्यू बोलै ही।

तू तो इया उछळ रैयी है कै कोई साची ही सामान चुरा लेयग्यो। बापूजी नै बूढियो कैंवतै भी को चूकी नीं। इया काईं करै ? बोळती बेळा की तो सरम राख्या कर।

अजी म्हनै मत सिखावो अै बाता। पैला खुद तो सरम राखणी सीखो। थे भी तो बानै डैण कैंवता को लखो नीं।

म्है कद कैयो बानै डैंण ?

कैयो क्यू नीं ? बीं दिन मूळी भुआ नै काईं कैवै हा कै डेण कमावै जद तई तो हुकम बजावा बाद री बाद मे सोचसा। – नीरज रा पोत चवडै करणै मे जानकी भी लारै नीं रैयी।

तो काईं हुयो ? म्हैं बारो बेटो हू। पण तू तो घर री लुगाई है। तनै तो इण तरै नीं बोलणो चाइजै। जिकी सीख म्हनै देवणी चइजै बा थे म्हनै दे रैया हो। थे भी जबरा हो। अजी म्हैं तो काईं भी कैवू तो चालै पण थे कैंवता चोखा को लागो नीं।

म्हैं तो कैयसू। हजार बार कैयसू। म्हैं बारो भार अेकली हीज क्यू सैवू। जेठाणी तो लाडै रै सागै मौज उडावै अर म्हैं बैठी अठै सारै–सारै दिन पचती रैवू। भेजो क्यू नीं बानै बठै ?

नौकरी छुडवा र काईं ?

तो म्हैं सू तो बेमतलब रो खोरसो नीं हुवै। दिनूगै सू लेय'नै सिझ्या ताईं बै तो एक मिनट भी सास नीं लेवण दै। माचै सू उठ्या नीं कै हेलो मारसी–फलाणै री बऊ थोडो पाणी रो लोटो झलाये। फेर कै सी–म्हारी पेंट धोयी'क नीं ! कुडतियै रै बटण लगा दिया काईं ? लगा दिया हुवै तो ल्या झला दै।

दफ्तर उखड़ै जद ताईं नाक में दम कर देवै।

अरे बावळी बापूजी वास्तै इया हियो मती खायै कर। दो बरस तो थावस राख। रिटायर तो होयण दै बानै। अबार जे बानै बेराजी कर दियो तो रिटायरमैंट रै बाद जिका लाख दो लाख मिलणवाळा है कोनी मिलैला। खामखा बा सू हाथ धोवणा पड़ जासी। थोडी–घणी की समझ राख्या कर– नीरज लुगाई नै असली बात समझावतो बोल्यो।

लाख–दो–लाख मिल जासी तो कोई किरयावर है ? साल पाच होया है पूरिया घोंवता नै। जेठाणी तो एक दिन आय'र नीं फुरकी। सेवा करणी सोरी कोनी।

सेवा करै जिको ही मेवा पावै। बापूजी रै मरया बाद सगळी जायदाद आपा नै हीज मिलसी।

मिलसी नीं · बाट जोंयता रैया । इया थारा बापूजी बैगो सो पिण्ड नीं छोडै। अबार सोरै सास मरणैवाळा नीं है। घणा दुख देवैला।

अबै इण बारै में तो कोई काई कैय सकै ? सावरियै री मरजी है जठै ताईं तो केवा काढणा ही पडसी। कोई जैर देय'र तो मारणै सू रैया।

म्है तो कैवू, रिटायर होंवतै ही जेठजी कनै भेज दयो बानै। फेर बै जाणै बारो काम। म्हानै कोनी चइजै बारी पेनसण। रिटायर होवण पर आपरै हाथा सू जिको दे देसी बोहीज बहोत है।

तो फेर बठै ताईं सायती राख। अबार तो कपड़ा सू बारै मती आ। आ वता चाय बणायी'कै नीं ?

पैला बानै तो आवण द्यो। फेर सगळा री सागै ही बणा देसू।

आज बा इत्ती ताळ कठै लगा दी । रोजीना तो बैगा ही घिर जावै।

ऊभग्या होसी कोई भायलै–भोपाळै कनै। अबै आवण वाळा हीज समझो। – इत्ती कैय नै जानकी रसोई साफ करबा लागगी।

महादेव ऊभै–ऊभै एकर तो सोच्यो पूठो ही कठै चल्यो जाऊ पण मन री मन में दबा'र बारणै माथै थाप दी। जानकी आय'नै दरवाजो खोल्यो अर बै बोला–बोला आपरी खाट पर जाय नै आडा होयग्या। आज बानै ठाह पडी कै बेटै–वऊ रो असली रूप कियाकलो होवै। अब ताईं तो ओहीज भरम रैयो कै नीरज बारो लाडेसर बेटो है। इण रै होंवता बानै कोई चिन्ता कोनी। रैयी–खैयी ईं रै सायरै निकळ जासी। बडोडो किन्नी काटग्यो तो काटग्यो। मा री तेरवीं पर आयो जिको आयो बीं रै बाद तो मूडो हीज नीं करयो अठीनै। साल भर होयो कागद भी न्हाखणो छोड़ दियो। ईं छोटोडै कानी सू की थोडी–घणी उम्मीद ही या भी आज जावती रैयी।

जानकी चाय रो कप झलायगी पण पीणै रो मन नीं हुयो। बार–बार नीरज रा अै बोल कचाटता रैया–बापूजी रै मरया बाद आ सगळी जायदाद आपा नै हीज मिलसी।

तो काई जायदाद वास्तै ही बेटो बाप री सेवा करै ? जायदाद नीं हुवै तो काईं बेटै रो फरज नीं बणै के वो बाप री सेवा करै ?

महादेव रै काळजै पर नीरज रा सुवारथी बोल चोट माथै चोट करता रैया अर वै माय–माय कळपता रैया। सोचता रैया'कै आज म्है बेटा वास्तै काईं इत्तौ बोझ बणग्यो'कै बानै म्हारै मरणै री दुआ मागणी पड़ रैयी है ? काईं म्हैं इत्तौ बूढो अर लाचार होयग्यो कै नीरज अर जानकी म्हैं सू छुटकारो पाणो चावै ! भगवान नीं करै जे म्हैं मादो पडग्यो अर माचो झाल लियो तो फेर अै म्हारै कनै ही नीं फटकैला। म्हनै कदै सभाळणनै भी नीं आवैला। –सोचता–सोचता पारवती नै याद करबा लागग्या कै वा जे आज होवती तो म्हनै आरै माय सू कोई री दरकार नीं ही। म्हारै सू बेसी चिन्ता वीं नै रैंवती।

पारवती याद आवतै ही महादेव री आख्या डबडबायगी। फेर जी नै करडो कर्‌यो अर उठ'र बैठा हुया। बैठ्यै–बैठ्यै ही मन में फेरू विचार आयो कै लै रे जिवडा इया हारणै सू काईं होसी ! जित्ती लिख्योडी है बा तो काटणी ही पडसी। ओजू ठालो तो बैठ्यो कोनी। नौकरी करू हू। ढाई–तीन हजार री पगार लाऊ हू। म्हनैं कीं रै आगै भीख तो मागणी कोनी। फेर म्हैं जी दोरो क्यू करू ? दुनिया मे इस्या भी तो मिनख है जिका कदै ब्याव ही नीं कर्‌यो। बै भी तो आपरो जीवण जी रैया है। ओ सोच'नै ऊभा होया अर पगरखी पैन्ह'र बरसाळी माय सू होंवता पूठा बारै कानी निकळग्या।

चाय पडी–पडी ठडी होयगी।

थोडी देर बाद जानकी कप उठावण नै आयी तो देख्यो कप है ज्यू ही मेल्योडो है। धणी रै कनै जाय'नै बोली–काईं बात है बापूजी पूठा कठै चलाग्या ? चाय भी कोनी पी।

कोई जरूरी काम याद आयग्यो होसी। नीं जणै तो चाय पियै बिना कठै बारै हीज नीं जावै। और तो काईं हो सकै ? – नीरज इत्तौ ही कैय'नै न्हावणघर कानी जाबा लाग्यो कै जानकी फेरू बोली– नीं आवै तो उणा रै दफ्तर में टेलीफून कर'नै ठा तो कर्‌या'कै काईं बात है ! पाधरा दफ्तर ही क्यू चलाग्या ? इया रोटी जीम्या बिना तो दफ्तर जाया नीं करै।

जाणा हा थोडी'क ताळ में आ जावैला। अठै–कठैई गया होसी। नीं जणै कैय'र जावता।

अठीनै महादेव रै आज काईं जची कै दिन भर आया ही कोनी। ना रोटी जीमी ना कोई बात। दफ्तर मे पतो लगायो तो बठै भी पूग्या कोनी।

जानकी घर मे चिन्ता करै। नानकियै नै भेज'र आसैपासै ठाह करवाई पण कठै नीं मिल्या। नीरज भी सोच में पडग्यो। वापूजी छेकड़ गया कठै ? सिझ्या पड़्या लागगी। याद में जाय'र कठै दूढसा। फेर ध्यान आयो कै देवकी बाबू रै अठै नीं गया परा होवै। दोनू वाळगोटिया है। पैला कई वार जाता रैया है।

नीरज वैगो सो देवकी वावू रै अठै गयो। वठै वेरो पड्यो कै दुपारै सी'क वा वानै वासुदेवजी वकील कनै कोरट में ऊभा देख्या हा। वींरै वाद कठै गया पतो नी।

वासुदेवजी वकील सू जाय'र पूछ्यो तो वै वोल्या– महादेवजी वारै कठैई नीं गया। अठैई है। चिन्ता ना करो। थोडी'क देर में आपैई घरै पूग जासी।

अव जाय'र नीरज रै जी में जी आयो। वकील सा'व कैवै जिकी साची वात। ओरै कनै आया होसी कोई काम सू।

रास्तै में फेर एकाएक ध्यान आयो'कै वकील सा'व सू वापूजी नै काईं काम हो ? कठै कोई वसीयत रो चक्कर तो कोनी । वसीयत में कठै धीरज भाईसा रै नाव तो जायदाद नीं कर दी ? – 'कै होठा पर हसी दौड जावै। धीरज भाईसा नै तो वापूजी कदै याद ही नीं करै।

इया लोकलाज रै नातै कोई एकाध कमरो वारै नाव कर दै तो भला ही कर दो। नीं जणै वांरै कानी तो वापूजी रो ध्यान ही नीं जावै।

घरै आयो तो जानकी वोली– ओजू तईं नीं आया। नानकियो बोल्यो– म्है तो सगळी जगा दूढ आयो म्हनै तो दादोसा कठैई नीं दीख्या।

अधेरो घिरवा लाग्यो'नै गळी रै थम्मा पर लोटिया चसग्या। देवकी बाबू खाता–खाता पग उठावता आया अर वोल्या– बधाई है नीरज वेटा। अबार थोडी देर पैला ही वकील सा'व आय'र वतायग्या कै महादेव नै कोई नुवो साथ मिलग्यो। अव ताईं जो सरणाटो हो वो सारो टूटग्यो। अबै वो अेकलो नी रैयो। आज वीं गवरी बाई सू कोरट मैरीज कर लीवी।

कोरट मैरीज ! ओ थे काईं कैय रैया हो काकोसा ? नीं–नीं वकील सा'व था सू कोई मसखरी करी होसी ! इयाकली अणूती वात तो वापूजी सोच ही नीं सकै। – नीरज नै देवकी बाबू री बात पर भरोसो नीं होयो।

अरै ईं में काईं अणूती वात है ? म्है तो कैवू महादेव जे ओ काम कर्‍यो है तो घ्होत आछो कर्‍यो। इण में कोई बुराई कोनी। गवरीबाई भी घ्होत भली लुगाई है। आठ–दस बरसा सू लायण अेकली जिदगी काटै ही। वींरो तो जीवण ही सुधरग्यो। थारै वापूजी नै भी एक सायरो मिलग्यो।

पण काकोसा दुनिया काई कैसी ! ई बुढापै मे आ काईं सूझी ? बारै अर म्हारै माथै लोग धूड नीं न्हाखसी ?

अरै तू तो सफा ही बावळो है। ईं में भला दुनिया रो काईं लेणो-देणो ? बा कैंती रैवो। बीं री काईं परवाह करणी ? दुनिया तो चढ्योडै नै भी हासै अर उपाळो चालणियै नै भी। अरै लाडी तनै तो खुस होवणो चइजै कै थारी आफत टळी। अबै थानै कोई चिन्ता नीं करणी। महादेव री चिन्ता अबै गवरी बाई करसी। – देवकी बाबू नीरज नै समझावता बोल्या।

तो बै अबै काईं अठै ही रैवैला ?

क्यू ? और कठै जावैला ? हा जे था लोगा नै बींरै सागै रैवण में की अटपटो लागै तो थे कोई दूजी ठौड दूढलो। महादेव तो ईं ऊमर मे अबै और कठै तो जावण सू रैयो। बीं कर्‍यो जिको आछो कर्‍यो।

नीरज सोचबा लाग्यो कै बगत भी किस्यो क है ? कद कठै गुचळकी खा जावै कोई नीं जाण सकै। काईं सोच्यो हो अर काईं होग्यो ! इणी टैम महादेव गवरी नै सागै लिया माय आवै कै नीरज अर जानकी री धूजणी छूट जावै। अकर तो देखता ही इस्या आकळ-बाकळ हो जावै 'कै जाणै कोई अजूबो आयग्यो। फेर जद ध्यान आवै तो होळै-होळै आगै बध'नै दोना नै पावधोक देवै।

महादेव अर गवरी आसीस देवता थकै कोनी।

☐☐

दादीमां

टैक्सी रो किरायो चुका'र खातो–खातो घर रै पगोथिया चढ्यो कै माय वडतै ही पैला दादी मा रै पगा लाग सू। ड्योढी मे सब सू पैला बारा ही दरसण होसी। म्हनैं देखता ही बै अेकदम हरखा होय नै फूल्या नीं समासी। अेकलै नै आयो देख नै पैलडकै में ओहीज पूछसी– टाबरिया कठै है ? बीनणी नैं क्यो नीं लायो ? पण म्हारो ओ सोच घर में पग राखता ही गुचळकी खायग्यो। दादीमा नीं ड्योढी में दीख्या नीं आगणै में। म्हारो माथो ठणक्यो। आज ओ सण्णाटो किया ? दादी मा तो आ जगा नै छोड़'र कठै जावै ही कोनी। आज इस्यी काई बात है ?

बरसाळी कानी जावण लाग्यो कै ऊपर माळियै सू काकी रा हसीठट्ठा सुणाई पड्या। म्हारा पग अेकाअेक थमग्या। काकोसा तो बिजनस रै काम सू विलायत गयोड़ा है। लारलै दिना ही बारो कागद आयो कै वै डेढ–दोय महीना ठैर आसी। बठै बानै कोई जरूरी काम है। तो काई काकोसा फेर बीच ही में आयग्या ? फेर अेक दूजो ख्याल आयो कै काकोसा री गैर मौजूदगी में कोई और लफडो तो कोनी। काकी रै बारै में लोग इया ही तरै–तरै री बाता बणावै काई वै साची तो कोनी ?

सोच–सोच'र मन में वेजा ही उथळ–पुथळ होवण लागगी। लारली बगत जद आयो तो दादीमा साची ही कैवा हा–थारै काकोसा सागै तो धोखो होयो। थारी काकी रा रगढग म्हनै आछा नीं दीखै। बीं तो लाई आ समझ'र ब्याव री हा भरी कै घर में म्हारै कनैं कोई बोल–बतळावणियो चइजै। म्हारी भी मत मरगी कै बेमतळब रो भाठो उठाय'र माथै लियो। अबै भोड खुल्यो जद चेतो होयो। गोपाळदास री भाणजी इस्यी कुळखणी निकळसी म्हैं क्यू सोचै ही ? बडी फूटरी अर स्याणी–समझणी दीखै ही। इस्यी नीं चींती कै आगै जायर आ सगळा नै ही धोय काढसी। नीं जणै म्हैं थारै काकोसा आगै दूजै ब्याव री बात ही क्यू छेड़ती। पण म्हनैं तो म्हारी चिन्ता खावै ही नीं कै छोरया सीमा अर रेखा तो परणीज'र सासरै चली जासी पछै लारै म्हारै कनैं कुण रैसी ?

म्हनै आछी तरिया याद है कै दादीमा गळगळा हावता कैयो– थारी नौकरी जे बारै नीं होवती तो म्हैं इस्यी अणूती बात होठा पर ही नीं लावती। पण अब पछताया काईं होवै ? बरबादी री आ आधी आणी ही जिकी आयगी।

उण बगत दादीमा नैं समझाणो चायो–इया डरो क्यू ? नूवी–नूवी है। दुनियादारी अजू ताईं देखी कोनी। धीरै–धीरै आपैईं सभळ जासी। नुवी बैडकी नुवै खूटै बधती बेळा थोडी घणी तो उछळकूद करै ही ई। बाद मे मतैई रस्तैसर आ जावै।

आज दादीमा री कैयोडी बाता सापरतेक आख्या साम्है आती दीखै है। काकोसा तो लाई पैला ही कैंवता हा– म्हारै धोळा मे धूड क्यू घतावो रे ? म्हनैं काम सू ही फुरसत कोनी इयै जजाळ मे फसाय'नै काईं करसो ?

पण होणी होवै जिकी टळै कोनी। क्यू तो पैलडी काकी री अकाळ मौत हेंवती अर क्यू दादीमा नै दूजी बऊ लाणै री बात सूझती ? लारली बाता री माखिया उड–उड र जद आख्या आडै घणीसारी भेळी होबा लागी तो म्हैं फुरती सू हाथ रो फटकारो देय'र वा नै परणै करी।

फेर आगण मे ऊभै–ऊभै ही जोर को खखारो कर्‌यो कै अेक जणो हडबडातो सो माळियै सू बारै निकळ्यो अर म्हनै देखतै ही बाको–बाया ऊभो रैयग्यो। हाथ मे चाय रो कप खळबळग्यो। चैरो अेकदम फक पडग्यो।

म्हैं ऊपर गयो। बो बिना पूछ्या ही थूक गिटतो सो बोल्यो– 'इया ही बीबीजी कनैं चल्यो आयो। बीं रो चैरो म्हनै की जाण्या–पैचाण्यो सो लाग्यो। चावै तो बीं नै सिनेमा रा टिकट ब्लैक मे बेचता देख्यो होवै चावै कठै हेराफेरी करता। पण आ बात पक्की है कै बीं री गिणती भलै मिनखा मे नीं है।

जी में आयो कै पूछू – भाया तू कुण है ? पण फेर मायलै भतूळियै नै माय–माय ई समेटतो बोल्यो – 'तौ काईं हुयो ? आपणो होवै जिको तो आवै ही।

इत्तै मे माथे पर पल्लो लेंवती काकी बारै आयगी। चोरी री काळख नैं बाता री सनलाईट सू धोवण री जुगाड करती बोली– 'कणै आया बन्ना ? ठाह ही नीं घाती। आवण सू पैला कोई कागद तो न्हाख देवता। इया अचाणचकै कींकर आयग्या ? इस्या मोह–बायरा ना बणो। कम सू कम बीनणी नैं तो सागै लेयर आवता। टाबरा नै देखबा रो म्हारो ब्होत जी है। निरा मईना होग्या बा सू मिल्या नैं।

अबकाळै जरूर सागै लासू। आज कोई दफ्तर रै काम सू आणो पडग्यो। – म्हारो असली ध्यान तो बीं अणजाणी पर हो जिकै रै पाव तळै सू धरती खिसकती जावै ही। माथे पर पसीनै री बूदया चमकबा लागगी। वो चाय पीवणो ही भूलग्यो।

काकी लखगी। बाता नैं पसवाडो देंवती बोली– थारै काकोसा रै लदन जाणै सू म्हारो तो सगळो ही काम चरमरायग्यो। कुण तो बाजार सू सामान लावै अर कुण कोई दूजो काम करै। ओ तो भलो होवै ईं रामलखणै रो जिको कैंवता ही सायरो देवा नैं न्हायस्यो चल्यो आवै। अबार दिनुगै टेलीफून कर्‌यो'कै घर मे सब्जी कोनी। तो लाई झट पूगावण नैं आयग्यो।

म्हैं तो अबै चालू। – मौकै री अडीक मे ऊभो रामलखण इत्तो सो कैयर फुरती सू बोलो–बोलो बारै जावतो रैयो।

'कुण है ओ ? कठै काम करे ? – म्हारो इत्तो ही पूछणो होयो कै काकी झट री उथळो दियो– अजी ईं नैं नीं जाणो ? आपणी फरम मे तगादे रो काम करै है नीं। जणै ही तो ओफिस में फून करता ही आ जावै।

अच्छा–अच्छा। तो ओ आपणो ही आदमी है। अरे हा दादीमा को दीख्या नीं। –म्हारी ऊतावळ तो दादी मा नैं देखवा री ही। रामलखण जावो भाड में म्हनै काई लेणो हो बीं सू।

'दीखै कींकर। लारली बैठक म मूढो सुजाया बैठ्या है। ना कुण सू बोलै ना चालै। – काकी रो इया नाक सिकौडतै बोलणो म्हनैं बोत ई बुरो लाग्यो।

म्हैं पूछ बैठ्यो– 'पैला तो इस्यी कोई बात नीं ही। लारलै साल म्हैं आय नै गयो हो। अबै अेकाअेक काईं होयग्यो।

ईं रो जवाब काकी और भी मू विगाडती दियो– 'म्हनै काईं पूछो ? म्हैं तो जद सू आई हू, अेक दिन भी थारी दादीमा रा मीठा बोल को सुण्या नीं। ओ जाण ही नीं सकी 'कै सासू रो सुख किस्योक होवै। राम जाणै म्हारी किसमत मे काईं लिख्योडो है ? बडबड करती काकी पृठी माळियै मे जाय'नै ढोळियै माथै पोढगी।

म्हारै तो साची पूछो सुणता ही लाय लागगी। म्हनैं खटको होयो कै हो न हो दाळ में कीं काळो है। हेटै उतर नै नळियै माय सू होंवतो सीधो लारली बैठक में गयो। बठै दादीमा नै देख्या जणै जायर जी म जी आयो।

दादीमा खिडकी रै कनैं तख्त पर बैठ्या हा। म्हैं जावतै ही बारा पाव छूया। बीं वेळा बारो ध्यान बारै अकास में उडतै कबूतरा कानी हो। म्हैं जद पाव छूया तो अेकर तो म्हारै कानी जोयो पण फेर अणबोलो ही मूढो पाछो फेर लियो। म्हैं हकबको सो रैयग्यो। सोच्यो आ काईं बात है ? दादीमा तो म्हनैं देखता ही खुसी [illegible] लबालब होय जावै। आज आ उळटी बात कींकर ? म्हनै देख'र निजर [illegible] फेर [illegible]

म्हैं होळैसी'क जाय[illegible] उणा रै कनैं बैठग्यो। फेर ओळै–ओळै कांधै माथै हाथ फेरतो बोल्यो– 'दादीमा ओळ[illegible] म्हैं [illegible] थारो पोतो।

होठा पर येमन री हसी लावता योल्या– ओळखू क्यू नीं ? अेक–अेक नैं जाणू हू। म्हैं किस्यी बावळी हू ? म्हैं सू कोई भी छानो कोनी। ननकू रै वास्तै आयो है नीं ? बो परदेस गयो परो। भाजग्यो अठै सू, लुगाई सू डरग्यो। –इत्तो कैयने दादीमा पूठा अकास कानी देखवा लागग्या जाणै म्हारो तो अठै आवणो ही नीं हायो।

थोडीक ताळ मे पतो नीं क्यू, आपैई आप हसबा लागग्या अचाणक ही। निरी देर ताई फेर हसता ही रैया अकारण ही। थम्या ही कोनी। बारी अेडी हालत देख र म्हैं म्हारो माथो पीट लियो। दादीमाँ री आ दुरगत किया हुई समझणै री जरूरत ही नीं रैयी। भगवान पर वोत गुस्सो आयो कै बा सगळा दुख दादी मा नै ही देवण री क्यू ठाण्योडी है ? दूजो कोई कोनी काई ? आखै जीवण म दुखा रै सिवाय दादी मा नैं मिल्यो ही काई है ?

दादीमा कैया करै है कै दादाजी रो जद सरीर सात होयो उण बगत बै उगणीस–वीस बरस रा ही नीठ होवैला। बापूजी अर काकोसा दोनू ही गोद मे हा। आगै–लारै कोई नीं हो। उण जमाने में विधवा होय'र जीणो ब्होत ही दोरो काम हा। ज कोई विधवा स्वाभिमान रो जीवण जीणो चावती तो समाज रा मोटोडा ठेकैदार बीं नैं जीवण नीं देंवता।

दादीमा रै साम्हैं पैलीपोत अेक ही समस्या मुह फाड़र खडी ही कै तीन जीवा रो पेट कींकर पाळै ? आ बात दूजी है कै जिकै चूच दीवी है बो ही चुग्गो देवैलो।

छेकड अेक पोसवाळ मे दादीमा नै चपडोसन री नौकरी मिलगी। फेर तो जीवण री गाडी दोरी–सोरी आगै गुड़कण लागगी। इया तो मारग मे घणा ही काटा आया पण सै नै बुहारती चाली। हिम्मत हारणो नीं सीख्यो।

बाद में पैला वाळो बगत भी नीं रैयो। बापू जी अर काकोसा दोनू पढ–लिख र हुसियार होयग्या। आपरै धन्धै लागग्या। मा अर काकी भी आयगी। म्हा टाबरा री किलकारया सू आगणो भी गूजबा लागग्यो।

पण भगवान नीं जाणै क्यू, दादीमा सू आटा–टेढा ही रैया। बा रो पिण्ड नीं छोड्यो। मौको देखते ही बानै कोई न कोई पटकणी देवता ही रैया।

अेक दिन तो दादीमा रै माथे भगवान दुखा रो इस्यौ मोटो पहाड तोड'र न्हाख्यो कै सै रा हास ही उडा गेरया। आखै घर नै आसुवा में डूबो दीन्हो।

बापूजी कोई साथी सू मिलबा नै स्कूटर माथै मा नैं सागै लिया जावै हा कै, लारै सू अेक तेज रफ्तार सू आवती जीपडी इस्यो टिल्लो दियो कै स्कूटर समेत ही दोनू झटकै सैं हेटै आ गिरया। लोही सू लथपथ होयग्या। लोग अस्पताल ले जाय नै, पुगाया कै दोनू अेकै सागै ही आख्या मींचली।

ओ सदमो अजू मिट्यो ही कोनी हो कै दो साल बाद ही काकी भी दुनिया सू जावती रैयी। कूडी म पाणी भरवा नै झुकी कै पग आखडगयो। दो परणीजण सावै छोरया रा हाथ पीळा करवा री इच्छा मन री मन मे रैयगी।

अवै दादीमा रै टूटणै में काई बाकी नीं हो। पण पोतै–पोत्या री जिम्मेदारी बानै इया ही ऊभी राखी। सोरै सास जीणो बारी किसमत में कठै लिख्यो हो ?

बगत पर म्हा सगळा रा ब्याव करया।

दादीमा रै कनै री तखत पर बैठ्यो–बैठ्यो म्हैं अेकटक बारै डावै कान में पड्यै बेजकै नैं देखतो रैयो जिको आगळी घातै जित्तो चवडो होग्यो हो। माथे रा धोळा उड–उड'र कान री लटकती चामडी रै आडा आवै हा। गळै में पड़ी मोटै मिणिया री माळा बतावै ही कै विपदा सू जूझती रैवण वाळी दादीमा नैं भगवान पर हमेसा भरोसो रैयो।

पण आज म्हनैं दीखै बो भरोसो सागीड़ी भुआळी खायग्यो। कूड कोनी दादीमा अवै पैला वाळा दादीमा नीं रैया।

□□

हर बखत अमूझणी री शिकायत रैवै अर कामकाज मे जीव नीं लागै। ओ रोग कोई आज रौ नीं लारला दो ढाई बरसा सू है।

अवार कोई महीनो भर होयो भीखली अठै ठाकरा री कोठी मे काम करै। कचन अर उणरै टाबरा माथै घणो जीव है उणरो। राम जाणै बीं रै कामकाज मे कोई जादू है कै उणरी बोली–वैवार में कोई विशेषता है जिणसू उणरै अठै काम माथै लाग्या पछै कचन जिकौ साजी–मादी रैंवती अवै ठीक रैवण लागगी। अवै उणनै भूख ई लागै अर अमूझणी ई कम होवै। कचन नै मन में इणवात रौ भरौसो है के उणरी तबियत में सुधार भीखली रै आवण सू ई होयो है। इण कारण वा भीखली नै आपरी सगी बैन रै ज्यू मानै। कोठी मे ई अेक कमरो उणनै देय दियौ अर अबै वा अठै रैवण लागगी।

कचन री अपणायत सू भीखली घणी प्रभावित हुई। सवेदना रै जळ सू दुख री माटी नै गाळ नाखी। भीखली रै विगत जीवण बाबत कचन उणनै पूछयौ तो उणरौ हिवडौ भरीजग्यो। सगी बैन पात ई वा कचन नै नैडी समझण लागी हीं। उणरै सामी वा काई छिपावती अर क्यू छिपावती ? वा बीतै बखत रै पडदै नै हटाय नै अपणायत सागै कैवण लागी– 'म्हैं ई बाईसा अेक आछै खावतै–पीवतै घर री कन्या ही। माईता री अेकाअेक बेटी अर भाईया लाडेसर बैन। घर मे रामजी राजी हा जिणसू कोई बात री कमी कोनी ही। टाबरपणो म्हारौ घणै लाड–दुलार अर सुख मे बीतो। आज इण बाता नै याद करू तो अेक सुपनौ – सो लखावै। घर म सोरी–सुखी होवण सू बारै बरस री ही तद ई चवदै–पनरै री लागती। म्हैं पाचवी पास करी कै म्हारै बापूजी नै म्हारा हाथ पीळा करावण री चिता सवार होयगी। वे पुराणै विचारा रा आदमी हा सो कन्या नै फेरौ देयनै नचिता होवणो चावता। इण कारण वा म्हारौ ब्याव बेगौ ई रचाय दियो।

साव काची उमर मे परणीज'र म्हैं सासरे पूगी तो घणौ अटपटौ–सो लाग्यो। टाबर होवण सू म्हारी तो उमर खेलण खालण री ही पण मजबूरन सासरै आवणो पड्यो। म्हारै ज्यू म्हारै धणी री उमर ई काची ही। वे दसवीं मे पढता।

म्हैं थोडाक दिन सासरै रही पण आ नीं जाण सकी के मरद लुगाई रौ आपसरी मे काई सबध होवै ? म्हारै पीहर आया पछै लारै म्हारै सासरै मे अेक दुखद दुर्घटना घटित होयगी। इण सू म्हारौ ससार सफा सूनो होयग्यो। म्हारै बापूजी दायजै मे अेक मोटर साईकिल ई दीवी ही। म्हारा पति उणनै चलावणी सीखता। नुवौ–नुवौ अभ्यास हौ सो चलावता–चलावता अेक ट्रक सू टक्कर होयगी। उणमें म्हारा पति रामचरण होयग्या। घर वसियो पैली उजडग्यौ। बहार आया पैलीज चमन उजडग्यौ। म्हारी जिदगाणी मे च्यारूमेर अधार घोर छायग्यौ।

भीखली

'काई कह्यो ? भीखली ? ओई कोई नाम है ? म्हैं तो भीखी ई कह्या करसू। रसोई मे फोफलिया रौ साग वघारती कचन बोली।

'नीं ओ बाईसा ! म्हैं तो भीखली ई भली। म्हारा बापूजी म्हनै इण नाम सू ई बतळावता। आगणै रौ गच्छ पूछती भीखली उथलो दियो।

अर थारी मा ? वा तनै काई कैय नै बुलावती ?

'मा तो म्हारी जद म्हैं बारेक महीना री ही तद ई चालती रही। हाँ दो वडा भाई हा वे ई म्हनै भीखली ई कैंवता। हाँ यू स्कूल म म्हारो नाम भीखी मड्योडो हो पण कैंवता म्हनै सगळा भीखली ई।

कचन बात आगै वढावती बोली– थारै नाक–नक्शा सू ठा पडै कै तू खासी फूटरी रही होसी। आ बात तो साचीक ?

'इण बाबत अब म्हैं काई कैवू ? भीखली बीतै बखत नै याद ई नीं करणी चावती। यू वा आपरी उमर मे खासी सरूपवान रैयी।

'बुरो नीं मानै तो म्हैं थारै विगत जीवण बाबत कीं पूछणी चावू। यू म्हनै पूछण रौ कोई हक कोनी। पण थारै सागै इतरौ लगाव होयग्यो है कै पूछ्या विना ई कोनी रहीजै।

'तो पूछो क्यू नीं ओ बाईसा ! आपनै ना कुण देवै ? म्हारै जीवण री पोथी तो अगा ई खुली अर साफ सुथरी है। उणमे अेक आखर ई आडो–डोढो कोनीं। भीखली मुळकती थकी बोली।

'तो आ बता कै तू अेकली क्यू है ? कचन रै बोलण में अपणायत ही। भीखली री आपबीती सुणणै री बा री कई दिना सू इच्छा ही।

भीखली बाबत लोगा नै इतरौ जरूर ठाह हौ कै वा कई बरसा सू लोगा रै घरा मे बरतण माजै अर झाडू–पौंछौ लगावै। आपरौ काम वा इतरौ सुथराई अर सुघडता सू करै कै कोई नै दो शब्द कैवण रौ कदैई अवसर ई नीं मिळै। सै सू बडी बात आ कै वा लोगा रै साज–माद अर आडै बखत में जरूर काम आवै। इण कारण सगळा ई उणनै चावै।

कचन सावतसिह री विधवा बेटी है। तीनेक बरस होया उणरौ धरधणी चालतो रह्यो। अबै ताई वा पीहर मे ई रैवै ही। पण उणरो शरीर ठीक नीं रैवै।

हर बखत अमूझणी री शिकायत रैवै अर कामकाज मे जीव नीं लागै। ओ रोग कोई आज रौ नीं लारला दो ढाई बरसा सू है।

अबार कोई महीनो भर होयो भीखली अठै ठाकरा री कोठी मे काम करै। कचन अर उणरै टाबरा माथै घणो जीव है उणरो। राम जाणै बीं रै कामकाज मे कोई जादू है कै उणरी बोली–बैवार में कोई विशेषता है जिणसू उणरै अठै काम माथै लाग्या पछै कचन जिकौ राजी–मादी रैंवती अबै ठीक रैवण लागगी। अबै उणनै भूख ई लागै अर अमूझणी ई कम होवै। कचन नै मन में इणबात रौ भरोसो है के उणरी तबियत मे सुधार भीखली रै आवण सू ई होयो है। इण कारण वा भीखली नै आपरी सगी बैन रै ज्यू मानै। कोठी मे ई अेक कमरो उणनै देय दियौ अर अबै वा अठै रैवण लागगी।

कचन री अपणायत सू भीखली घणी प्रभावित हुई। सवेदना रै जळ सू दुख री माटी नै गाळ नाखी। भीखली रै विगत जीवण बाबत कचन उणनै पूछयौ तो उणरौ हिवडौ भरीजग्यो। सगी बैन पात ई वा कचन नै नैडी समझण लागी हीं। उणरै सामी वा काई छिपावती अर क्यू छिपावती ? वा बीतै बखत रै पडदै नै हटाय नै अपणायत सागै कैवण लागी– 'म्हैं ई बाईसा अेक आछै खावतै–पीवतै घर री कन्या ही। माईता री अेकाअेक बेटी अर भाईया लाडेसर बैन। घर मे रामजी राजी हा जिणसू कोई बात री कमी कोनी ही। टाबरपणो म्हारौ घणै लाड–दुलार अर सुख मे बीतो। आज इण बाता नै याद करू तो अेक सुपनौ – सो लखावै। घर में सोरी–सुखी होवण सू बारै बरस री ही तद ई चवदै–पनरै री लागती। म्हैं पाचवी पास करी कै म्हारै बापूजी नै म्हारा हाथ पीळा करावण री चिंता सवार होयगी। वे पुराणै विचारा रा आदमी हा सो कन्या नै फेरौ देयनै नचिता होवणो चावता। इण कारण वा म्हारौ ब्याव वेगौ ई रचाय दियो।

साव काची उमर मे परणीज र म्हैं सासरे पूगी तो घणौ अटपटौ–सो लाग्यो। टाबर होवण सू म्हारी तो उमर खेलण खालण री ही पण मजबूरन सासरै आवणो पड्यो। म्हारै ज्यू म्हारे धणी री उमर ई काची ही। वे दसवीं मे पढता।

म्हैं थोडाक दिन सासरै रही पण आ नीं जाण सकी के मरद लुगाई रौ आपसरी मे काई सबध होवै ? म्हारै पीहर आया पछै लारै म्हारै सासरै मे अेक दुखद दुर्घटना घटित होयगी। इण सू म्हारौ ससार सफा सूनो होयग्यो। म्हारै बापूजी दायजै मे अेक मोटर साईकिल ई दीवी ही। म्हारा पति उणनै चलावणी सीखता। नुवौ–नुवौ अभ्यास हौ सो चलावता–चलावता अेक ट्रक सू टक्कर होयगी। उणमें म्हारा पति रामचरण होयग्या। घर बसियो पैली उजडग्यौ। बहार आया पैलीज चमन उजडग्यौ। म्हारी जिदगाणी मे च्यारुमेर अधार घोर छायग्यौ।

म्हनै तो पेली इण दुखद घटना री ठा ई नीं पडी। म्हारै सासूजी आयनै जद म्हारे माथै रौ सिदूर अर लिलाड री बिंदी पूछली तद म्हनै बेरो लाग्यो।

इण दुर्घटना सू सासरे मे सगळा रौ म्हारै प्रति रुख ई बदळग्यौ। सगळा म्हनैं यू देखण लाग्या जाणै म्हारै पति री मौत वास्तै म्हैं जिम्मेवार हूँ। थोडाक दिना में अे बाता ई म्हारै काना मे पडण लागी के म्हैं डाकण हू सा आपरा पति नै खायगी। इण घर मे म्हारौ पगफेरौ ई खोटौ लागण लाग्यौ अर म्हारी गिणती कुमाणस अभागण रै रूप मे होवण लागी।

तेरवै दिन म्हारा बापूजी आया अर म्हनै पीहर लेयग्या। कई दिना ताई म्हैं आकळ–बाकळ रही। चमगूगी बणयौडी बैठी रही। कीं समझ मे ई नीं आवै हौ कै म्हनै काई करणौ चाइजै ? थोडाक दिना पछै जीव कीं ठावै आयौ तो म्हैं बापूजी नै कह्यौ के म्हैं आगे पढणो चावू, पण बापूजी म्हारी बात रो तुरत कोई पडूत्तर नीं दियौ। पछै होळै–होळै बोल्या– 'बेटी तू बाळ विधवा है। थारै वास्तै समाज रा जिकौ नेम कानून बण्यौडा है उणरै मुताबिक थारौ पढणौ उचित कोनी। आपणौ औ समाज घणो खराब है। म्हैं तनै पढण नै बारै भेजू तो मिनख काळै सौ बाता करसी। वे कोई नै ई नीं बख्शै। तू अबार जिण हालत मे है उण हालत मे म्हैं तनै नीं तो पढण ताई बारै भेज सकू अर नीं घरा मास्टर राखनै पढाय सकू। इणसू सगळी ठौड थारी अर म्हारी दोनू री थू–थू होसी। ओ म्हारै सू सहन कोनी होवै। थारै दो वखत रोटी अर पेहरण नै कपडा चाइजै। इण सिवाय कोई लाबौ खरचौ है कोनीं। घर मे रामजी रौ दियोडौ सै कीं है। कोई बात री कमी है कोनी। तू बेटी पेट मे खटगी तो हाडी मे ई खट जासी। म्हैं बैठौ जितरै थारै कोई चिता कोनी अर पछै थारा भाई सपूत है सो कोई बात री दैंण है कोनी।

म्हैं चुपचाप वारी बात सुणती रही। वारै आगै काई बोलती। पण मन ई मन इण निर्दय समाज नै कोसती रही अर गाळया देवती रही कै जिणरै डर सू म्हारै जीवण रौ रह्यौ–सह्यौ जुगाड ई हाथ सू निकळग्यौ। उण वखत जे म्हारै पढाई आळी बात बैठ जावती तो आज म्हनै अे दिन नीं देखणा पडता।

खैर थोडाक बरस तो गाडी जिया–तिया गुडकती रही पण म्हारै बापूजी रै सुरग सिधारता ई दोनू भाईया रौ वैवार म्हारै सागै देखता–देखता बदळग्यौ। इणमे म्हारा भाईया रो नीं म्हारी भौजाईया रौ कसूर बेसी हौ। करमाय नमो। किण नै दोष देवती ? जे कुदरत नै ओ खेलौ नीं करणौ होवतौ तौ टाबरपण मे ई म्हारौ घर क्यू भागतौ।

छेकड निजोरी री काळी चादर ओढ'र अेक दिन म्हैं पीहर रौ घर छोड'र रवानै होयगी। म्हारी आख्या सू आसू झरै हा। घर री पेढी लाघता म्हनै

वार–वार बापूजी री याद आवै ही। म्हारी इण हालत माथै वारी आत्मा ई अवस कळपती होसी। इण भात घर रौ ठायौ तो छूटग्यौ अर सासरै मे म्हैं बरसा पैली डाकण घोषित होयगी ही। इण वास्तै अबै म्हारै सामी घर नाम री कोई चीज नीं रैयगी ही।

आख्या सामी विखर्यौ पड़्यौ हौ असीम दरियाव रै उनमान ओ ससार जिणनै देखतै ई काळजौ कापै हो। म्हैं इणरी उबड़–खाबड गळिया मे कठै ई मारग नीं चूक जावू कठै ई आखड़ नीं जावू, कोई रै बहकावै में आय'र ऊधी–पाधरी भटक नीं जावू। इण भात डर री भावना हर बखत म्हारै पग री पींडी पकड़्या रैयी।

पण आ ईश्वर री उण दीन–दयाळू री महान किरपा ई समझौ कै म्हैं छेवट ठायै पूगगी। म्हनै अेक भलै घर में बरतन माजण रौ काम मिळग्यौ अर जीवण रौ अेक सहारौ हाथ लागग्यौ।

'तो थै पछै आगै पढाई आळी बात नीं सोची ?' कचन विचाळै ई पूछण लागी।

आगै पढण री बात उण वेळा किणनै सूझै ही बाईसा ? उण वखत तो दोनू टैम पेट रौ खाडौ भरण री समस्या सै सू मोटी ही। ससार में पापी पेट री समस्या घणी विकट है बाईसा ! भूख भूडी घणी होवै। इण रै आगै दूजी कीं नीं सूझै।

अेक बात पूछणी चावू तनै ! कचन थोडी शकीजती थकी पूछण लागी– 'यू तो थारौ सुहाग टाबरपणै में ई लुटग्यौ पण जिदगाणी में तनै आदमी री कमी महसूस नीं हुई ?

आप ई काई बात करी बाईसा ? भीखली नीचा नैण किया आगणै कानी देखती बोली– आदमी रै विना लुगाई रौ जीवणौ ई कोई जीवणौ है ? ठीक है जूण पूरी करणी है। विधवा हुई उण बखत म्हैं सफा टाबर ही पण ज्यू–ज्यू मोटी हुई ओ दुख भाखर रै उनमान म्हारै हिवडै माथै बढतौ ई गयौ। म्हैं म्हारै पति नै अेक दिन ई नीं भूल सकी। कैवता–कैवता उणरी आख्या जळजळी हुयगी। वा आख्या पूछती बोली– 'समाज मे विधवा रौ जीवण अेक अभिशाप है। उणनै पग–पग माथै फोड़ा भुगतणा पडै। समाज री निजर में विधवा अेक सफा तुच्छ प्राणी है अर इण अवस्था वास्तै वा खुद जिम्मेवार है। नारी जीवण री कितरी अजब विडबना है ?

कचन ई उणरी करुण गाथा सुण'र भीजगी। वा थोडी ताळ तो कीं बोल ई नीं सकी। विचारा में उळझयौडी बैठी रही अर पछै की याद आया कैवण लागी– "म्है अेक बात तनै पूछणी चावती। जद पीहर अर सासरै मे दोनू ठौड थारौ कोई नीं है तो तू दिन मे कई बार कठै जावै अर क्यू जावै ?

भीखली मुळकती थकी बोली— 'बाईसा बारै म्हारै जिम्मै मोकळा काम है। सही अर असली बात आ है कै म्हनै कोई रै दुख में आडौ आवणौ कोई रै काम मे हाथ बटावणौ अर कोई रै काम आवणौ घणौ आछौ लागै। इणसू म्हारै मन नै घणौ सतोष मिळै। शाति मिळै। ससार मे मिनखा नै अेक दूजै रै सहारै री घणी जरूरत है। इण बात नै म्हारी जिसी दुखिरायण सू बत्ती औरू कुण जाणसी ? सरोज बीबीजी रै जापौ होयौ है। घर मे कोई सभाळण आळौ कोनी। म्हैं घडी भर जाऊ अर वारौ सगळौ काम निवेड आवू। गिरधारी री मा रौ डोकरी रौ माथौ घणौ दुखै। बापडी डोकरी रै आगै—लारै कोई कोनीं। सफा अेकल पड है। म्हैं उणनै ई सभाल आवू। छोटौ—मोटौ टापौ ई टाळ दू। माथौ दबाय आवू। सुमन भाभी सा नै तो आप जाणौ ई हौ वारौ सुभाव म्हनै घणौ चोखो लागै। वे जद नौकरी माथे स्कूल जावै परा तो वारै नान्हा टाबरा नै म्हैं अेकर जाय र सभाळ लेवू। राम बाबू रौ नौकर सूरजियौ नशौ—पतौ घणौ करै बीं री लुगाई बापडी सफा सैणी है। घर में हर बखत तगाई भुगतै। जरूरत पड्या उणरी ई दो पैसा री मदद कर दू।

कचन उणरी बाता कान लगाय र सुणती रही। वा बोली— आ बता के तनै इण बात रौ पतौ किया रैवै कै किणनै काई जरूरत है ? म्हैं इण बात रौ घणौ अचूभौ आवै कै तू दुनिया रै दुख दरद नै जाण किया लेवै ?

'बाईसा कह्यौ है कै घायल री गत घायल जाणै। यू आ दुनिया घणी मोटी है। पण बारै जायनै देखा तो मतै ई ठाह पड जावै कै कुण किण हालत मे है अर उणने किण चीज री जरूरत है। अै बाता लोगा रै सपर्क मे आया ई ठाह पडै। घरै बैठा कीं पतौ नीं लागै। म्हैं आपने साची कैवू कै म्हारी तो प्रकृति ई भगवान इसी बणाई है कै म्हनैं दूजा री मदद करण मे इज आणद आवै। इणसू म्हने जिकौ सुख सतोष मिळै दूजा कोई काम मे नीं मिळै। म्हैं जद दूजा री तकलीफा देखू तो खुद री तकलीफा भूल जावू। पछै बखत बीतता कीं देर ई नीं लागै। अणचाही अर अपरोखी बाता तौ वै सोचै जिणा रै कनै फालतू रौ बखत है। फालतू बैठणौ सै बुराईया री जड है। खुद नै हर बखत काम मे उळझ्योडा राखौ तो बुराई नैड़ी ई नीं आवै।

आ बात तो खरी है थारी। पण आ बता कै तनै कदेई थाकेलौ नीं आवै ?

'बाईसा आ बात आप आछी तरिया समझलौ कै जिण दिन म्हैं थाकगी उण दिन जाण लीजौ कै भीखली ससार मे नीं है ! कैवती—कैवती भीखली टोगडियै नै नीरण ताई बाडै कानी जावण लागी अर कचन उणनै खरी मीट सू देखती रैयगी।

□□

बिदोतमा

चित्तौड़ रै पा'डा री अेक रात। दूधा न्हायी चादणी छिटक्योडी ही। सदा री तरिया बिदोतमा आज भी वीं जगा बैठी कुदरत री सोभा नै निरखै ही जिण जगा बा आयै दिन बैठया करती। हिवडै में कल्पनावा रो समदर उमडै हो। रय-रय'र प्रीतम री याद झकझोरा मारै ही।

च्यारु कानी सरणाटो छायो हो। बायरियो हौळे-हौळे व्हैवै हो। कै इतरै में केयी रै आणै री खड़को होयो। बिदोतमा ध्यान स्यू अठीनै-ऊठीनै देखण लागी कै अेक मिनख वीं नै आपरै कानी आतो दीख्यो। आख्या सजग हो चाली। हाथ कमर रै पसवाड़ै लटक्योडी कटारी पासी गयो परो पण वीं मिनख रो जद कनैसी'क आणो होयो तो बिदोतमा यो देख'र अचभै भरगी कै बो कोई परायो नीं वीं रो खुद रो भरतार समर सिघ है। वीं रै मन-मदिर रो देवता। मीठी यादा री जीती-जागती मूरत।

'बिदोतमा हो ! -समरसिघ थौडे'क अळगै स्यू ही आवाज दीन्ही।

आपरै प्रियतम रा बोल सुणतै ही बिदोतमा न्हास'र समर री छाती स्यू जा लागी।

समदा री लै'रा ज्यू दोना रै हिवडा में प्रेम हिलौरा लेवण लाग्यो।

'म्हारा देवता पधारग्या। बिदोतमा हरख स्यू फूली नीं समावै ही। रिझाळू आख्या मतवाळी होवै ही।

'हा सा। तैं स्यू म्हे अळगा कींकर रैय सकता हा।

'यो तो म्हनै पूरो-पूरो विश्वास है। -समर रै चोळै री गुड्या बीड़ती बिदोतमा कैयो।

थारो यो विसवास ही तो म्हानै अठे खींच ल्यायो।

'खाओ म्हारी सौगध।

थारी सौगध।

सरम स्यू बिदोतमा री आख्या हेटी नै झुकगी। फेर बोली- अच्छा अबै यो तो बताओ रण में जीत तो राजपूता री ही रैयी ना ! यो तो म्हनै पैला ही बूझाणो चइजै हो।

चित्तौड रै राणा अर अल्लाउदीन खिलजी रै विचाळै मच्योड़ै जग रो हाल जानणो चावै ही।

'नइ अदाळ जग खतम नइ होयो। अल्लादीन खिलजी री सेना आधी री तरिया आगी नै वध रैयी है। राणैजी रा इण्या–गिण्या सैनिक जग री ज्वाळा मे झुळसता जावै है। –समरसिघ बोल्या।

'जणै फेर आप अठै कींकर पधार आया। –बिदोतमा अचभो करती बोली।

'यो ना बूझो।

'क्यू नीं बूझू ?

'या सै थारै प्रेम री माया है। पतो नइ थारै प्रेम मे ऐडी काईं सगती है कै म्हे रण रै बिचाळै स्यू आपैइ आप खींच्या चल्या आया। –बिदोतमा रै गाला माथै हाथ थपथपातै समरसिघ बोल्या।

'यो आप कइ फरमावो हो ? –बिदोतमा थोडी'क अळगी होवती बोली। बीं नै समर री बात्या माथै अवै थोडो कम बिसवास होवै हो।

'म्हे ठीक कैय रैया हा सा। –कैय'र समरसिघ बिदोतमा नै पूठी आपरै सीनै स्यू लगाणी चायी। पण बिदोतमा पाछीनै सिरकगी। रीस करती कैयो– 'इण रो मुतळब तो यो है कै आप जग रै बीच स्यू भाज'र चल्या आया ?

उथळै मे समरसिघ खिलखिला र हस पडया।

'ऊपर स्यू फेर हसो हो। कितरी बुरी बात है। समर नाव राख'र भी थे समर मे नइ टिक सक्या तो इण स्यू बेसी लज्जा री काईं बात होवैली। –समरसिघ रै इण तरिया पीठ दिखाणै स्यू बिदोतमा रो काळजो फाटणो चावै हो।

'पण म्हारी भी तो सुणो ! –सफाई मे समरसिघ काईं कैवणो चाता हा पण बिदोतमा बीच ही मे जाडा भींचती बोली– 'पण काईं ? प्रेम रै लारै मतवाळा बण र थे रजपूती आण नै ही भूल बैठ्या। पैला यो तो पै चाण्यो होवतो कै देस रै प्रति थारो काईं कर्त्तव्य है। –बिदोतमा नै आज बोत ही दुख हो रयो हो।

'पैला म्हारी बात तो सुणो। या बात म्हे माना हा कै म्हे बठै स्यू केयी नै कयै बिना ही चल्या आया पण म्हे इण रै सिवाय करता भी काईं ? मोटा–मोटा रजपूती जोधा खिलज्या रै खाण्डा हेटै भचाभच कटीजै हा। इयै बात री थोडी–घणी भी आसा को रैयी नीं कै रजपूती सेना जीत रो सै रो पेन्ह सकैली बस यो सोच'र कै धींगाणै मोत बुलाणै स्यू कइ हाथ लागैला म्हे थारै हिंगळू री लाज राखणै चल्या आया। जे आपा रो प्रेम साचो है तो यो नेचै

जाणिज्यो कै अेक दिन म्है खिलज्या री धज्ज्या नइ उडा दा तो म्हारो नाव समरसिंघ नइ। —समर बिदोतमा पर इयै रो कइ असर नइ होयो। अपूठो यो होयो कै छतराणी रो लोई उबळ पड्यो। सेरनी री तरिया गुर्राणै लागी। आखर चित्तौड रै अेक वीर जोधा री बेटी ही। नागिण सी फुफकारा मारती बोली— 'धिक्कार है थारै इयै प्रेमीपणै नैं। मातभौम रै पेट माथै लो रगता रा न्हाळा व्हैवै है अर थे मायड़ रा अेडा पूत कै रण स्यूं भाज'र प्रेम री चरचावा करो। रजपूता री बेट्या अेड़ै प्रेम माथै सैंकड़ू बरिया थूक्या करै। बै यो कदैई नइ चावै कै बा री जीवण री डोर केयी बळहीण स्यूं बधै। लुक'र भाजणै स्यूं तो आछो हो कै आप बठै ही रणदेवी रै भेंट चढ जावता। ताकै म्है म्हा'रा जीवण तो सुफल होयो जाणती। म्हारा सिरदार यो जमारो फेरू नइ आणै रो। अबै भी बगत है।

बिदोतमा रौ चै'रो रीस स्यूं तमतमावै हो। रग–रग में रजपूती खून खोळै हो।

'जाऊं हूँ सा। — बिदोतमा री राती आख्या स्यूं ढळकतै क्रोध नै देख'र समरसिंघ इण दा सबदा स्यूं आग को नइ बाल्या अर माथो झुकाये उळटै पगा पूठा टुरग्या।

खिलजी री सेना अर चित्तौड रै राजरुखाळा में घमासाण जग ठण्यो हो। दोना कानी रा अणगिण्या जोधा खेत रैंता ज्यावै हा। जदपि खिलजया री सेना अगाडी राजपूती सेना नइ रै बरोबर ही पण फेर भी खिलज्या रो सरदार अल्लाउदीन राजपूता रै अणतोल्यै जोधपणै नै देख र दाता हेटै आगळी दबावै हो। केसरिया बाना पैन्होड़ा राणा रै रण–बाकडलै वीरा रो उफण्यो जोस देखता बणै हो। बा री प्यासी तलवारा यवना रो खून पीवै ही।

समर में राजपूता रो करार अेडो साम्है आयो कै दुसमणा री सेना में खळबळी मचगी। यवना रो सफायो होवणै लाग्यो।

पण या 'खळबळी' घणी ताळ नइ रयी। बेगी ही सात हो गी। यवना नै राणैजी रै पडदै ओटा रहस्या री जानकारी मिलगी ही। फेर काईं हो। रण री धधकती ज्वाळा री लपटा आपरो रुख बदल लीन्हो। खिलजी रा सैनी राजपूता माथै अेकै सागै पिळ पड्या। देखता–देखता राणा रा तीर गाजर–मूली री तरिया काटीजण लागा। घडी'क नै जग री राती भोम पर यवना रो झण्डो लै रा उठ्यो।

आपरै यवनी बेलीडा स्यूं घिरया समरसिंघ खिलखिला र हसै हा। आज बीं री खुसी रो छेडो नइ। कारण कै सतरज री अेक चाल मे बा प्यादी मात जो कर दीन्हीं ही। अल्लाउदीन रै सेनापत्या नै राजपूता री गुप्त बात्या बताळा'र बा आपरो काम जो साध लीन्हो हो। आपरो बचाव जो कर लीन्हो हो।

विदोतमा स्यू मिलणै री मोकळी आस लिया वै थोडी'क ताळ खातर आपरी सुधबुध गुवा वैठ्या।

छेकड आपरै ठावै–ठावै साथ्या नै सागै ले र चित्तौड खानी दुर पड्या। आख्या मे विदोतमा नै देखण री हद बायरी प्यास ही अर हिडदै में वीं स्यू मिलणै री घणी उतकण्ठा।

समरसिघ चित्तौड पूग्या।

अबकली आपरै मनभायै प्रीतम नै साम्है निरख र विदोतमा रा होठ मुळकणा चावै हा पण समर रै सागै यवना नै देख र बा ठिठकगी। फेर थाडी सोच–बिचार र बोली– आपरै सागै अै कुण है ?

अै सगळा तो म्हारा साथी । – समरसिघ री जबान उथळो देणै में हिचकिचावै ही कै बिदोतमा सारी घात समझगी। जाणगी कै समर जरूर राजपूता सागै केयी तरै रो दगो कीन्हो हुवैला। बा री जीत में केयी तरै स्यू रोडा बण्या है। दात किटकटाती चीखी– 'सरम आणी चाइजै .. सिघजी। अक वार रजपूत रा बेटा हा'र था राजपूता री आण न माटा म मिलाणै री कोसीस कीन्ही। म्है अेडै कायर अर काळै मिनख रो मू भी नइ देखणो चावू। जे था मे अदाळ भी मिनखपणै नाव री कोई चीज बाकी है तो चळू भर पाणी मे डूब मरो।

अेडा तीखा ताणा ना मारो। –समरसिघ बात नै अणसुणी करता बिदोतमा नै आपरै अक पास मे बाधणी चावी।

'परे हट ज्यावो म्हारी आख्या स्यू। म्हारै साम्है ऊभा रैणै री अब थे मन मे कदै सोचो ही ना। गादडै ज्यू डोळ बणा र सेरणी स्यू मिलणै री तिरसणा छोड दो। अबै आपनै बिदोतमा कदै आख्या देखण नै भी नइ मिल सकैली। – अळगी खिसकती बिदोतमा कैयी अर फेर कामी कीडै स्यू बचणै खातर कटारी काढ र आपरी छाती मे घुसेड न्हाखी। लाजा री मारी बिदोतमा राजपूती–आण पर आपैईआप बळि चढगी।

यो देख र सरम रै मारै समरसिघ रो माथो अवनी में गडग्यो। अेक कानी अळगा ऊभा यवनी सैनिक भी हकबका सा देखता रैयग्या।

□□

बगत–बगत री बात।

बगत कींनै कद गुआळी खवा देवै कोई नीं जाण सकै। बगत रै आगै भूत ई भागै। बगत री माया इज न्यारी हैं। वौ मोटा–मोटा नै धूड चटा देवे तौ छोटा नै सिखरा चढाता ई देर नीं लगावै।

कैवत में कैया करै भाई सू वत्तौ मितर नीं अर भाई सू वत्तौ दुस्मण नीं। ओखाणो ई बगत रै कारण इज ऊपजयौ। बगत माडौ आवै तौ रिस्ता री रस्सी ई फटाक–सी टूट जावे।

म्हारा जी'सा अर दीपू रा बापूजी सगा मा जाया भाई । अेक मोटा दूजा छोटा। मोकळो हेत दोना मे। जीया जद ताई सागै ई रैया। रोटी दोना री अेकैदात टूटी। दोना री अेक इज मानसा ही उणा रै बाद टाबरिया ई भेळा रैवै।

काकोसा रै दीपू अेकलौ अर म्हे होवता दो भाई। घणो चवडो परिवार नीं हो। भवर भाई म्हारै सू बड़ा हा। दीपू म्हारै सू च्यारेक साल छोटो पण डील रो कीं सेंठो।

अेक रोज स्हैर सू रुई रा व्यौपारी हेतरामजी आपरी अेकाअेक बेटी जुगली रै सगपण खातर गाव आया तौ दीपू बारै चित्त चढग्यौ। थोड़ा'क दिना बाद ई दोना रो ब्याव होयग्यो।

स्हैर में हेतरामजी 'कॉटन किंग' रै नाव सू जाण्या जावता। करोडा री जायदाद ही। पइसै रौ कोई पार ई नीं हो।

स्हैर में रैयोड़ी अर लाड–प्यार में पळयोडी जुगली परणीज'र गाव में आयी तौ बठै बीं रो जी नीं लाग्यो। रैयी तो सरी पण माडाणै। मन हरदम पीहरै में हीज वस्यो रैयौ।

काकोसा रैया जद ताई तो सगळा भेळा रैया। गाडी भी अेकैचीला चाली। पण बारै आख्या मींचता ई घर रा दो बारणा होयग्या।

जुगली तो माळा ई इण बात री फेरया करती कै कद मौकौ आवै नै स्हैर में जायनै बसै। काकोसा री तेरवीं पर हेतरामजी मोकावण नै आया तौ जुगली बारै सागै ई स्हैर गई परी। लारै सू दीपू नै ई बठै बुला लियौ।

हेतरामजी ई औ इज चावता कै बेटी–जवाई आयनै वांरै कारोबार में हाथ बटावै। दूजौ कोई हौ कोनी वारै।

काकौसा रै गुजर्‌या पछै म्हारा जी सा ई घणा दिन नीं रैया। छोटै भाई री अकाळ मौत रो सदमौ वानै वैगौ ई ले डूब्यौ।

आज आ बाता नै पूरा दस बरस होयग्या। बगत म्हारै कानीं सू रूस नै दीपू माथै मेहरवान है। दीपू भागसाळी रैयौ, कै [illegible] सारी जायदाद बीं नै हीज मिली।

जुगली रौ नाक तौ पैली ई चढयौ रैंवतौ अर अबै कीं घणौ हीज चढग्यौ। सैर रै बीचौ बीच गाधी चौराहे सू लेयनै गणेशजी रै मदिर ताई बाईस दूकाना री लाबी कतार री धणियाणी काई होयगी कै अबै अपणै आपनै कीं बेसी हीज समझवा लागगी। औ तौ भगवान बीं नै रूप नीं दियौ नीं जणै बींरा पग तौ धरती माथै हीज नीं पडता। पइसै री लोभण ई घणी। देवणवाळै बेथाग दियौ है पण फेर ई बींनै सतोस कोनी। मन री देखौ तौ इसी ओछी कै मत पूछौ। दीपू तौ फर इ कीं कवळै दिल रा ह पण बा ता जाबक हीज जबरी है। अकदम भाठौ होयै ज्यू।

बात सागै बात। दीपू रै ब्याव मे हेतरामजी अेक भैंस दीवी दाइजै मे। थोडा बरस तौ बीं भैंस दूध दियो फेर बा मरगी। बींरै तीन–च्यार पाडिया हुई जिकै मे अेक पाडी तौ पतौ नीं कोई लेयग्यौ। बाकी पाडक्या जायदाद रौ जद बटवारौ होयौ जुगली किणी दूजै नै बेचगी।

निरा दिना बाद कोई नै बा पाडकी कठैई मिलगी जिकी गुम्याडी ही। बौ बीं पाडकी नै लाय'र म्हारै घरा नडायग्यौ।

सैर मे जुगली रै काना मे जद आ बात पूगी तौ बीं आव देख्यौ न ताव म्हानै अेक नोटस भिजवाय दियौ के– 'या तौ म्हे बीं पाडकी री कीमत अदा करा नीं जणै म्हारै माथै कोरट मे मुकदमौ ठोक दियौ जासी।

ई घटना रै बाद तौ बा लोगा सू रैया–खैया सबध भी जावता रैया। नीं म्हे नोटस रौ जवाब दियौ अर नीं ई बा रै कानी सू कोई दूजौ तगादौ आयौ। बात ही जठैई रैयगी।

बगत बदळाव रौ ठैकेदार भी है। कदैई किणी रौ लिलाड अेकर चमका दै तौ बाद मे बीं नै झुरिया सू भर काढै। खैर म्हारै माथै तौ बगत सरू सू हीज बेराजी रैयौ। च्यार साल होयग्या स्हैर मे नौकरी करता नै बगत कदैई कोई हेत नीं दिखायौ। तबादळै वास्तै घणा ई ताब तोडया पण बगत आपरी जगै अडयौ हीज रैयौ। टस सू मस नीं होयौ। अबै गाव सू रोज आऊ रोज जाऊ। दुख झेलणा लिख्या है तौ झेलू। भवर भाई गाव मे खेत समाळै अर म्हैं अठै दफ्तर मे बैठयौ कागद काळा करू।

स्हैर मे दीपू री ब्होत बडी हवेली। उणरै आगै सू हीज रोज म्हारौ दफ्तर जाणौ। केई दफै दीपू सू मिलवा री मन में आवै पण फेर औ सोच'र रैय जाऊ के मिलणै मे अब कोई सार कोनीं। जी सा रौ सुरगवास होयौ तौ अै लोग आया नीं अर मा'सा मरया तौ कोई परचावणी रौ कागद लिख्यौ नीं। जणै रिस्तौ रैयौ हीज कठै। फेर दीपू री लुगाई रा तेवर ई तीखा। पाडकी री कीमत नीं नडायी उण री रीस ई औजू।

रोज री तरिया उण दिन ई दफ्तर सू छूट'र खातौ-खातौ बस अड्डै जावै हौ के भैरूजी रै मोड़ माथै अेक हादसौ होयग्यौ। टाबरा सू लदयोडी अेक इस्कूल बस सडक रै नाकै कोई थभै सू टकरायगीं। टक्कर होवता ई खळबळी मचगी। आसैपासै रा सै लोग भेळा होयग्या। म्हैं ई बठै भाज र गयौ। टाबरा नै झाल-झाल बस सू बारै निकाळया। मरयौ तौ खैर कोइ नीं पण चोटा सू घायल घणाई होया। केई तौ लोही सू लथपथ होयग्या।

टैक्सी में घात'र सगळा नै फटाफट अस्पताळ लेयग्या। अेक छोरै री तौ माथळ ई फाटगी। सारौ लोही बैयग्यौ। उणरै वास्तै रगत री दरकार हुई तौ केई जणा रक्तदान करवा नै आगै वध्या। खून टेस्ट होयौ। म्हारौ ई होयौ। मायैजोग म्हारौ खून मेळ खायग्यौ अर छोरै री जान बचगी।

अस्पताळ सू दीप नै वेरौ लाग्यौ के बींरै बेटै नै खून देवणवाळौ जाखळसर गाव रौ कोई जेसराज है तौ बींनै पैला तौ म्हारौ इज ध्यान आयौ। फेर सोच्यौ के म्हारौ नाव तौ जसियौ है जेसराज कोई दूजौ होवैलो। तौ ई मन मान्यौ कोनी। जेसराज रौ ठिकाणौ लेयनै सीधौ म्हारै दफ्तर आयौ। म्हैं काम में लाग्योडौ हौ के म्हनै देखता ई दीपू रौ हिवडौ भर आयौ। आख्या सू खुसी रा आसू ढळक पडया। धोलौ-धोलौ आयनै म्हारै कनै ऊभौ होयग्यौ कै म्हैं चौक्यौ। देख्यौ तौ दीपू। अेकाअेक बींनै साम्ही देख'र म्हैं तौ अेकर आकळ-आकळ हीज होयग्यौ। जद बौ पगा लाग्यौ तौ ध्यान आयौ के औ तौ साची दीपू है। झट उठ'र गळै लगाता बोल्यौ- 'दीपू !' इण सू आगै तौ कीं बोल इज नीं निकळया। इत्तौ हीज बोल सक्यौ कै म्हैं ई गळगळौ होयग्यौ। बीं री तौ सिसक्या हीज फूट पडी।

बडी मुस्किल सू बींनै राजी कर्यौ। कनै बैठा र पाणी पिलायौ। फेर पूछ्यौ- 'तू आज अठै किया ?

बोल्यौ- 'भाईसा आज म्हैं जाण पायौ के आपरौ खून आपरौ हीज होवै। म्हनै तौ डागदरा बतायौ के उण दिन जे अेनवगत थै आयनै खून नीं देवता तौ पुनीत रै बचणै री कोई उम्मीद नीं ही।

'तौ काई बौ आपणौ पुनीत है जिकै री साथळ फाटगी ?

'हाँ भाईसा ! बौ पुनीत ई है। अबै बींनै कोई खतरौ कोनी। था हीज बींनै नुवौ जीवण दियौ है।

अरे लाडी बचावणवाळौ तौ बौ महादेव है। म्हैं तौ उण टैम बस एक निमत्त बणग्यौ। खैर औ जाण र म्हनै घणौ हरख है कै म्हारै खून सू किणी री जान बची अर बा ई म्हारै पुनीत री।

'म्हनै तौ आज हीज ठाह पडी के थै अठै हीज बिराजौ हौ।

'बुरौ नीं मानौ तौ आज म्हैं थानै घरै ले जाणौ चावू। पुनीत नै अस्पताळ सू छुट्टी मिलगी हैं बींनै देखणै रौ मिस ई अेकर म्हारै घरै तौ पधारौ। दीपू म्हारै आगे हाथ जोडबा लाग्यौ।

'पण लाडी अबार म्हारौ चालणौ ठीक कोनी। थारी लुगाई म्हनै देखसी तौ बींनै दुख पूगसी।

अजी वा देखसी जद नीं।

'क्यू ? वा कठै–गयौडी हैं ?

'गयोडी तौ कठैई कोनी। पण सावरियौ बीं सू रूस्योडौ है।

'म्हैं समझ्यौ कोनी।

'बींनै अब आख्या सू सूझणौ बद होयग्यौ भाईसा। दो [illegible] अेक अेक्सीडेट मे बींरो आख्या री जोत जाती रैयी। घणौ ई इलाज करायौ पण बात बणी नीं।

आ तौ बुरी खबर है। म्हानै तौ पतौ हीज नीं लागयौ।

'ई रौ कसूरवार तौ म्हैं हू। म्हारी हिम्मत हीज नीं हुई कै थानै खबर भेजणै री। पाडकी नै लेय र थारै सागै जिकी बेजा बात हुई बींरौ दुख म्हनै अजै ताई रैयौ है। अबै तौ बा ई ब्होत पछतावै। कैतो–कैतौ दीपू फेरू उदास होयग्यो।

अरे बावळा इया अणेसौ ना कर। पछतावै मे तौ सौं कुई आपैई धुप जावै। वगत रै आगै सगळा नै हारणौ पडै। कालै म्हैं थारै अठै अेकलौ नीं सै नै सागै लेय र आऊला बस। अबै तौ राजी।

'साची भाईसा।

'तो कोई कूड थोडे ई। माईता री मनसा पूरी नीं करणी काई ?

दीपू रौ मुरझायोडौ चैरौ बाग–बाग होयग्यौ। बगत म्हा माया नै पूठो मिलवा दियौ।

पछतावौ

सिझ्या ओफिस सू घरै आयौ तो सीमा ढोलियै माथै बैठी विनीता रौ माथौ दाबै ही। चैरौ अेकदम उतर्‌याडौ। लागै बतळावता ई रोय देसी।

म्हारौ सोचणो सही हौ। म्हनै देखता ई वा कैवण लागी-- आ टींगरा तो म्हारो जीणौ ईं ओखौ कर दियौ। अठीनै देखौ ई विनीता नै। दो दिन मे किसी'क नसड़ी न्हाखी हैं। दिनूगै सू आख्या ई नीं खोलै। लोथ होवै ज्यू पडी है।

अेडी बात ही तो म्हनै फोन कर देवती! विनीता रौ हाथ देख्यौ तो डील तातै तवै ज्यू तप रैयौ हो।

सीमा बोली- 'फोन तो थानै कई बार कर्‌यो पण घंटी जावती रैयी कोई उठायो ई कोनी।

'खैर दीपू कठै गयौ ?

'भायला सागै बारै रमतौ होसी।

'डाक्टर माथुर नै फोन कर्‌यौ हौ ?

'कर्‌यो हौ वे आ'र देख भी गया। बोल्या – नमूनियौ है। थोडा'क दिन सावचेती बरतणी पडसी।

'कोई बात कोनीं। दो दिना रौ सकट है। आपैई टळ जासी। तू चिन्ता मत कर। इण मिस तनै'ई आराम करणै रौ मौकौ मिलसी।

'म्हनै नीं चाइजै इस्यो आराम। दिनूगै सू सिझ्या ताई खूटै सू बध्यौ रैणौ म्हारै बस रौ कोनीं।

'बस रौ कोनीं तो गिरस्थी क्यू खिडाई ? इणरै बिना के ओसर्‌यौ जावै हो ? यू कैय'र पैली तो म्हैं मीठी झिडकी दी। फेर समझावतै थकै बोल्यौ–'सीमा अै बोल अबै थारै मूढै सोभा को देवै नीं। टाबर होग्या है तो आनै पाळणा भी है। यारै वास्तै पतौ नीं काई-काई दुख झेलणा पडसी।

'म्हारै सू ओ तसियो नीं होवै। चावै काई भी कैवौ। सीमा कैंवती-कैंवती उदास होयगी।

'यू जाबक ही आपौ नीं न्हाखणौ। म्हैं थारी बात नै समझू हू। सुगनी बाई रै रैता थका ओजू तनै घर–गिरस्थी री ज्ञान नीं होयौ। अबै सगळौ भार अेकाअेक माथै पर पडणै सू थारौ हडबडाईजणौ सहज है। कैवै ता अेक बार फेरू पूछताछ करू। हो सकै कोई भली नौकराणी मिल जावै।

म्हारौ इतरौ कैणौ होयो कै वा बरस पडी– 'म्हनै अबै कोई नौकराणी नीं चाइजे। अेक महीनै मे म्हैं तीन–च्यार नै राख'र सगळा रो नखरो देख लियो।

बाता तो देखौ आरी ? दोनू टैम री खाणौ पेहरबा री कपडौ डेढ सौ रुपिया रोकडी टैम सू आणौ नीं पण जाणौ टैम सू। आठ घटा सू अेक मिनट देरी नीं अर हफ्तै मे अेक दिन री रेस्ट। ऊपर सू औ जोर न्यारौ जतावै कै क्रीम–पाउडर लगाणै री छूट रैसी। जोर सू कैयोडी बात सही नीं जासी। तो पछै यानै घर मे घाल र यारी पूजा को करणी नीं। म्हानै इसी नौकराणिया री दरकार कोनीं।

फेर थोडी नरम होवती बोली– थानै कैवू नीं ! म्हनै अेक बार सुगनी बाई रै अठै ले चालौ। म्हैं बीं रै आगै माफी माग लेसू। बींरा पग झाल लेसू। पण थे हो कै सुणो ही कोनीं।

सुगनी बाई रै अठै जावणरी अबै म्हारी हिम्मत कोनी। बीं रै सागै जिकी भली–बुरी होयी बा तू जाणै है। म्हैं म्हारी बेबसी बखाण करी।

'इण मे थारौ तो कोई दोष है कोनीं। कसूरवार तो म्हैं हू। धणियापै रै नसै मे आधी हो र म्हैं कदैई बींरी भावनावा नै समझणै री जरूरत इ को समझी नीं। थै ता बींनै सगी मा री तरिया मानता रह्या अर म्हारौ राम निकळोडौ हो कै म्हैं बीं पर सदा ही रीस करी। न जाणै काई–काई दोष मढती रही बीं पर। साची कैवू आज जद लारली बाता याद करू तो अपणै आप रै माथै ग्लानी होवै। – सीमा नै अबै साचाणी पछतावो हो रह्यौ हो।

म्हैं बात नै पसवाडौ देतौ बोल्यौ– अबै आ बाता नै तो भूल जा अर टाबरा कानी ध्यान दैं। नमूनियै खातर होमियोपैथी रो इलाज सगळा सू ठीक हैं। म्हैं डाक्टर कोचर नै बुला र लाऊ। जाणा क्लीनिक मे ई मिल जावैला।

'बेगौ कर आवौ।

म्हैं कोचर री ठा करणै उणी टैम बारै निकळग्यौ। उपाळौ ई। रास्तै भर म्हारी आख्या रै आगै सुगनी बाई रौ पळकौ पडतो रैयौ।

म्हैं छोटो थको ई हो कै म्हारै सिर सू मा रौ सायौ उठतौ रैयौ। दादी री सूझी कम ही। सुगनी बाई ई म्हनै पाळपोस र बडौ करयौ। म्हैं बीं नै 'बाई' ही कैया करतौ। म्हारी साचैली मा ही वा।

बाई भी अेकली। जावक अनाथ। 'बाळपणै में ही माग बिखरगी। कोई आगै न कोई पीछैं। म्हारै अठै ही रैवा लागी। घर रौ सो काम करती अर म्हारौ पूरौ ख्याल राखती। कदैई म्हनै ओ महसूस नीं होवण दियौ कै दुनिया मे म्हारी मा कोनी।

म्हनै आछी तरयि याद है कै म्हारै ब्याव वाळै दिन वीं इत्ता हरख–कोढ कस्या कै पड़ोस री लुगाया ईसकौ करण लागी।

सीमा वडै घराणै री बेटी ही। आसै–पासै सदा नोकराणिया रही। कार सू नीचौ पग नीं दियौ।

अठै सुगनी बाई रै सिवाय दूजी कोई लुगाई घर में नीं हीं। सीमा नै हर बखत नौकराणी चाइजै। आ बाई रीज हिम्मत कै बीं सीमा री चाकरी मे ई कदैई कोई अभाव नीं आवण दियौ। वा हरदम सेवा मे त्यार रैंवती। पण सीमा न जाणै क्यू, बाई सू सदा अकडी रैंवती। बा जो भी काम करती बीं रै माय मीनमेख निकाळया विना सीमा नै चैन नीं पडतो। बात–बात माथै बींनै तडकणै में मजौ आवतौ। तो भी बाई कदैई उफ तकात नीं कस्यौ। उल्टी सीमा री सगळी गळतिया आपरी झोली मे घाल लेवती। सीमा आयै दिन सहेल्या सागै घूमती–फिरती। कदै कीं रै अठै तो कदै कीं रै अठै।

पूछतौ कै सीमा कठै गई है ? तो उथळै मे बाई कैवती–दिन भर लायण अठै ई ही। अवार थोडी देर पैला ई कोई सहेली रै सागै मारकेट ताई गई है। अबार आय जासी।

बाई रै इण रूप नै सीमा कदै देखबा री कोसिस नीं करी। वा तो बाई नै कोसती ही रैंवती। छेकड लारलै महीनै बाई रौ जी उचटग्यौ। हुई आ कै अेक दिन मेज पर चाय री केतली टूट्योडी पडी ही। सीमा बारै सू आई तो बाई पर विगड पडी– 'बरतण धोवणै ई शऊर कोनी अर बेमतळब रा काम करवा रौ दिखावौ करै। म्हारै अस्सी रुपिया रै टी–सैट रो नाश कर दियौ। जी चावै कै चुट्टी झाल'र बारै काढ दू।

बाई कोई उथळौ नीं दियौ तो सीमा बडबड करती माय कमरै मे चली गई।

म्हैं बाथरूम सू बारै आ र बाई नै पूछ्यौ– 'काई बात है ?

बाई टूट्योडी केतली समेटती बोली– कोई बात कोनी बावू। केतली टूटगी जिकै रौ कैय रही हैं टी सैट रौ भौ बिगडग्यौ। बाजार मे पूछजौ इसी री इसी केतली कठैई मिल जावै तो।

बात म्हैं सू छिपी नीं ही। बाथरूम मे म्हनै सै सुणीजै हो। म्हैं वीं बगत ही सीमा नै जा र कैयौ हौ– 'केतली थोडी ताळ पैली म्हारै हाथ सू टूटी ही।

थारै हाथ सू ?– सीमा नै म्हारी बात पर विश्वास नीं आयो। जद म्हैं फेरू कैयो तो वा सुण र घबराई।

म्हैं बींनै हाथा मे झाली ही कै हेटै पडगी अर पडतै ई टूटगी। पण– 'तनै तो बाई पर झठौ आरोप लगाता लाज नीं आई ? किसी क ताती बळती होवै ही। इत्तौ भी नीं सोच्यो कै बाई रौ बूढौ शरीर है। जाणै अणजाणै मे केतली टूट भी गई तो काई प्रलय होयग्यौ ?

'तौ म्हैं इसौ काई कैय दियौ कै थानै इतरौ चिडकौ लाग्यौ। सीमा नै बोलौ रैवणो मजूर नीं हौ।

अबकाळै म्हैं बींनै डाटी– आइन्दा जे बाई नै काई कैय दियौ तौ म्हारै जिसौ दूजौ कोई भूडौ नीं होवैलौ। सुणै है नीं ?

'सुण लियौ। अबै म्हारी भी सुणल्यौ। म्हैं पढी–लिखी हू। फूहड कोनीं। म्हनै मूरख लुगाया री तरिया घुट–घुट र नीं जीणौ।

सीमा री बोली मे झूठौ अहकार देख र रीस तो म्हनै इस्सी आई कै दौ थाप री दे काढ। पण राड बधाणी आछी बात नीं ही। ओ सोच'र बोलौ रैयग्यौ।

बाई री आख्या आली होयगी। बोली – 'बाबू, अेकरकै म्हनै देसनाक छोड आ। म्हारी जिया मासी रौ पोतौ रामरखियौ केई बार कैवा चुक्यौ कै भुआ कदैई तो म्हारो टापरौ भी देख जा।

म्हैं बाई रै कैवा रौ अरथ जाणग्यौ। तुरन्त ही बोल्यौ– 'क्यू नीं इण मिस म्हैं भी रामरख सू मिल आसू।

दूजे ही दिन म्हैं बाई नै देसनोक पूगा आयौ।

म्हैं इण भात लारली बाता सोचतौ–सोचतौ कोचर री क्लीनिक जा पूग्यौ। डाक्टर कठैई दूर पर हौ। नाम लिखा र पगौपग ही पूठौ आयौ तो विनीता नै गोद मे लिया बाई नै बैठी देख र हाक–बाक सो होयग्यौ।

सीमा माय सू चाय री केतली लावती बोली– 'बाई नै म्हैं कागद देय'र बुला लीवी है।

म्हैं जद बाई रै पगा पड्या तो बाई गळगळी होयगी। म्हारै माथै पर हाथ मेलती बोली– 'बाबू, म्हारी दुनिया तो इण घर मे ही बसी हैं आखी उमर अठै ही काटी। ई घर रौ मोह तो मरिया ई छूटसी।

सीमा रौ माथौ पछतावै रै भार सू पूरी तरिया झुकग्यौ हौ।

□□

पलग पर पसवाडो फौरतै ही सुधीर फुसफुसायो–चाय।

आभा नै उण टैम बस झपकी लागी ही कै सुधीर रा बोल काना मे पडता ही हडबडा'र उठी अर फुरती सू रसोई में जाय'र बैगी सी चाय बणा र ले आयी।

बैठा होवो। चाय त्यार है।

[illegible] राख दै। नींद मे ही सुधीर बडबडायो अर [illegible] नकियो लेय'र पूठो सोयग्यो।

मेज पर चार कप पैला सू ही प्लेटा सू ढक्योडा मेल राख्या हा। ठडी चाय सू लबालब भर्‌या। ओ पाचवों कप भी आभा प्लेट सू ढक र राख दियो अर बोली–बोली आय'र आपरै पलग पर लेटगी। जाणती ही आ चाय भी ठडीडीप हो जाणी है।

अेक बज्या रै अेडै–छेडै ही तो सुधीर बारै सू आयो हो अर आतै ही पलग पर आडा होयग्यो। ना कपडा खोल्या ना कोई बात। इण बीच सूतै–सूतै ही पाच दफै चाय रो कैय चुक्यो। आभा चाय नीं बणाती या देर कर देती तो बींरी खैर नीं ही। गुस्सै मे उफणतो देर नीं लगातो

आभा उणरै सुभाव नै चोखी तरै जाणै हीं। बीं कदै पाछो उथळो नीं दियो। बींरै वास्तै हर घडी इमत्यान री घडी ही।

दो बरस होयग्या ब्याव होया नै। ओजू तई सुधीर अेक नोकराणी सू बेसी आभा नै कीं नीं समझी अर ना ही समझणो चायो। दूजो मान देणै री तो बात हीं दूजी।

आभा पलग पर अवार आडी हुई ही कै सुधीर उठ र बैठो होयग्यो। आभा भी चटकै सू उठी अर झट चाय रो कप झला दियो।

चाय रो घूट लेवता ही सुधीर री रीस गैस रै चूल्हैं दाईं भभक उठी। मू मायली चाय आभा रै मूढै पर पिचदैणी थूकतो कडक्यो– आ चाय है कै ठण्डो सरबत ! इया डोळा फाड'र काई देखै ? माय बळ'र दूजी बणा र ला। बाबूजी नीं जाणै काईं समझ र ओ काळो भाठो म्हारै लारै बाध दियो।

बेमतलब रो चीखणो अर कोरो हाको करणो बाबूजी नै बोत बुरो लागै। आपरै कमरै मे लेटया–लेटया जदे वा सुधीर री आ राफडलीला सुणी तो अेकर तो वांनै इस्यी रीस आयी के जाय'र सुधीर नै लाता सू कूट काढै। पण फर बोला रैयग्या। ओ सोच–सोच र वारो काळजो कळपवा लाग्यो कै आभा रै सागै न्याव नीं होयो। रचना री आखरी इच्छा रो ध्यान आयग्यो, नीं तो वै आभा नै ई बळद रै गाडे मे कदे नीं बाडवा। सुधीर मे मिनखपणै नाव री कोई चीज ही नीं है।

आभा जियाकली मूरत्या नै वेमाता कम ही घडया करै। आभा कनै सेवा रो अणमोल भडार है तो करम रै प्रति भी वींरी अटूट आस्था है। काळी–पीळी आधी भी वींनै आपरै कारज सू कदै नीं डिगा सकै।

सुधीर री मा रचना जद अस्पताळ मे भरती ही आभा बठै नरस रो काम कर्या करती। रचना रै दवा–दारू री सगळी जिम्मैदारी वीं रै ही माथै ही। जिकी निष्ठा अर अपणायत सू वीं रचना री सेवा करी वींनै देख र बाबूजी भी गद्गद् हायग्या। जद तइ रचना अस्पताळ मे रैयी आभा रात र दिन वींरी सवा मे लाग्योडी रैयी। इण काम मे बीं कोई कसर नीं छोडी।

आभा कैया करती– दुनिया बोत बडी है। कठै भी झाक'र देखो हर जीव दूखी है। कोई न कोई जरूरत आदमी नै हर टैम कचौटती रैवै। सेवा अेक इस्यी दवा है जो कैयी रो भी दुख हळको कर सकै।

आभा सगळा रो मन जीत लियो।

रचना घणा दिन जिदा नीं रैयी। वा आभा नै सुधीर री बऊ बणी देखणी चावै ही। मरती बेळा बीं बाबूजी नै कैयो भी कै मौको मिलै तो सुधीर रा कान कदै आभा नै ही झला दिया। बा हीज ई नै ठीक कर सकैली।

सुधीर ब्याव करवा म राजी नीं हो। बीं री मनसा आजाद रैवण री ही। घर–गिरस्थी रै झझटा मे बो पडणो नीं चावतो। पण मा री अतिम इच्छा रै आगै बीं नै छेकड झुकणो पडयो।

फेरा लेईजग्या पण आभा रै सागै सुधीर रो लगाव नीं जाग्यो। कारखानै सू छूटतै ही भायला सागे हो जावतो अर आधी–आधी रात तई कोरो रुळतो रैंवतो। घर री चिन्ता बीं नै कदै नीं सतायी।

बाबूजी चावै हा कै सुधीर नै जिम्मैदारया रो अहसास करायो जावै। करखानै रो सारो प्रबध बा सुधीर नै इण करणै ही सौंप्यो हो पण फेर भी सुधीर मे बदळाव नाव री कोई चीज नीं आयी। उळटो ओ होयो कै आभा सू बीं रै अळगाव री खाई दिनोदिन चवडी होवती गई।

आभा नै लखदाद है कै बीं बदी कदै आपरो धीरज नीं खोयो। अर ना ही इण बाबत कदै कोई सिसकारो न्हाख्यो।

बगत री गाडी इया ही चालती रैयी।

अेक रोज री बात। गगा रै बेटै रो नावकरण हो। चार बेटया रै लारै ओ बेटो होयो। साम्है मोडै ही बींरो घर।

आभा दिनुगै ही बठै हाथ बटाबा नै गई परी। बींरै नानकियै रा पोतिया धोवणा दाई रो काम पूजा रो बदोबस्त अर छोटा–मोटा निरा काम बीं नै ही निपटाणा हा। गगा लायण अेकली ही। धणी भी अधगैलो सो हो।

दूजा रो काम करबा मे आभा नै आणद री अनुभूति भी तो घणी होवै। दुपारै तईं बा इयै ही काम में लाग्योडी ही'कै केयी आभा नै कैयो कै सुधीर बाबू याद करै। घर में कोई मेहमान आवण वाळा है।

आभा चमकी। आ उळटी गगा कींकर ? इण बगत तो सुधीर कदै घरै ही नीं आयो। ना ही केयी भायलै नै बीं आज तईं कदै घरै बुलायो।

बात हियै नीं चढी । पण दूजी दफै जद सुधीर रो हेलो सुणीज्यो तो आभा न्हास'र घरै गई। कमरै मे पूगी तो देख्यो सुधीर फळा रो टोकरो खोल रैयो है। मिठाई रा डूगा राख्याडा है।

आभा नै देख र सुधीर पैला तो थोडो मुळक्यो। फेर आभा रै नेडै जाय'नै ऊभो–ऊभो बीं नै अेकटक देखबा लाग्यो जाणै कोई अजूबो होवै। आमा तो आकळ–बाकळ होयगी। बीं री समझ में कीं नीं आयो। बीं रै इचरज रो जद थागो ही नीं रैयो तो छेकड बीं नै पूछणो पडयो– इया काईं देखो हो ?

थारी आख्या मे म्हैं म्हारी जगै दूढ रैयो हू। तैं कठै लुका'र राखी है ?

आभा नै सुधीर री अै बाता कीं अटपटी सी लागी। बा बार–बार आख्या नै मींचै–खोलै। देखै दिन रै उजाळै में कोई रात रो सुपनो तो नीं देख रैयी।

सुधीर हिचकतो सो बोल्यो– बात आ है आभा कै आज म्हैं म्हारै अेक भायलै नै जीमण रो न्योतो दे आयो। बीं रै वास्तै बढिया सू बढिया खाणो त्यार करणो है। इण वास्तै तनै तकळीफ दे रैयो हू।

ईं में तकळीफ क्यारी ? म्हैं अबार खाणो बणादू। म्हारा बडा भाग'कै आज थे म्हनै इण जोगो कीं समझ्यो तो सरी। आभा रै कैणै मे सहजता ही।

म्हारो ओ भायलो मुबई सू आयो है। मैनेजमैंट रै कोरस मे म्हे बठै दोनू सागै हीज हा। दोनू अेक ही कमरै में रैंवता।

बारो अठै कींकर आणो होयो ?

अठै बो आपरी बैण रो पतो लगावण नै आयो है। दो साल होया बा घर छोड नै गई परी।

क्यू ? अेडी काईं बात होयी ?

पूरी बात री तो म्हनै ठा नीं पण इत्तौ जाणू हू कै बींरा बापूजी कीं लालची किस्म रा जीव हा। पइसै रै बदळै बै बेटी रो सौदो करणो चावै हा। अेक

दलाल सू वा दस हजार अगूच ले लिया अर वींरो व्याव कोई दूजवर सू कराणै री हा – भरदी। बेटी नै ठाह पडी तो वा चुपकै सी निकळ भागी अर पता नीं कठै गई परी। पण वींरो भाई बोत समझदार है। ओ जद हादसो होयो वो कठै वारै गयोडो हो। अर वींनै ही बैण सू सगळा सू बेसी प्रेम हो। वोहीज वींनै दूढतो फिरै। अबै बीं नै कोई बतायो कै वा अठै दिल्ली मे है तो दूढवा नै अठै आयग्यो।

था सू कठै भेट हुयी ?

कारखानै जातै बेळा भवानी होटल रै आगै टकरग्यो। मिल्यो तो व्होत राजी होयो। मोकळी ताळ तईं बाता हुई। फेर वींनै म्है अवार रै खाणै वास्तै न्योतो दे आयो।

आछो कर्यो। देणो ही चइजै।

आभा तू नीं जाणै वींरी बैण बात बिरलियैंट ही। आपरी कालेज मे वा हर काम मे अगाडी रैंवती। पढाई मे इत्ती हुसियार'कै मत पूछो। बीअेससी में तो वींनै गोल्ड मैडल मिल्यो हो।

था किस्यी बीं नै देख राखी है ?

देखवा रो मौको तो नीं मिल्यो पण बीं रै वारै मे ठाह सो रैंवती। म्हनै आछी तरिया याद है अेक वार यूनिवरसीटी रै यूथ फेस्टीवल मे जद वींनै बैस्ट आर्टिस्ट रो अेवार्ड मिल्यो तो मौजद्दीन म्हनै मावै रा लाडू खडाया हा।

काईं ? – मौजद्दीन रो नाव सुणता ही आभा अचम्भै भरगी। दिल धडकवा लागग्यो।

हा आभा थारो भाई मौजद्दीन ही म्हारो सहपाठी भायलो है। – सुधीर बात नै अबै घणो उळझायो नीं राखणो चावतो हो। जेब सू आभा री कॉलेज टैम री फोटू निकाळ'र दिखाणी – आ तू हीज है नीं। मौजद्दीन री बैण सलमा।

फोटू देखतै ही आभा री हालत इयाकली होयगी जाणै रगै हाथा पकडीजगी होवै। अेकदम ठगी सी रैयगी। सुधीर रै हेज रो बाध भी टूट पडयो। आभा नै गळै लगातै बोल्यो – आभा आज म्हारी आख्या रै आगै सू काळो पडदो हटग्यो। अबै म्है पैला वाळो सुधीर नीं रैयो। बीं बगत म्हैं तनै परख नीं पायो। आज म्हनै ठाह पडी'के म्है तो इत्ता बरस अधकार मे ही भटकतो रैयो। सलमा म्हारै अठै आभा बण'र आयी अर म्हनै पतो ही नीं लाग्यो। अबै तू सलमा नीं आभा है। म्हारी ऊजळी आभा जिकै म्हारै घर रो अधियारो मेट काढयो। म्हनै अेक नूवो जीवण दे दियो।

सेवा री मूरत आभा रै सूखै होठा पर लाज री लाली छायगी।

□□

निपूती

अदाळत सू घरै पूगता–पूगता म्हारी हालत उण सुसियै सरीखी होयगी जिकै नै स्सै जणा अपडणो चावै अर वो है'क सगळा सू आख्या चुराय'नै आपरी छुरी में घुसवा नै भाजै। लोगा रै व्यग्य बाणा सू म्हारा प्राण गळै में अटकता–अटकता रैयग्या। म्हैं आ कदै नीं सोची कै आ सू अदाळती अळगाव होंवता ही म्हनै अेक कटियोड़ी किन्नी दई आभै अर धरती रै बीच इण तरै अणचाया हिचकोळा खावणा पड़सी।

घर में बडतै ई सोचवा लागी– इण अणचींतै अळगाव सू तो मरणो चोखो। इस्यो म्हैं कठैई कोई माथे रै बोरियै रो पाणी उतार आयी कै म्हनै लुगाई जात सू ही परणै कर दियो। पाच बरसा सू कोख खाली होवण री सजा दिरावण वास्तै सासूमा म्हनै कोटकचेडी तईं घसीट'र लेयग्या अर अै बोला–बोला सारो नजारो देखता–रैया। आ सू इत्तो भी नीं कैयीज्यो कै ईं अेकली रो कसूर कोनी कीं कसूर म्हारो भी हो सकै। आ नीं सोची कै म्हनै धक्को लागण सू आरी जीवनगाड़ी भी तो पटरी सू उतर सकै है। पण आ सू मू ही नीं खोलीज्यो। वकील साब बहस करता रैया अर अै मूढो टेर्‌या अेक कानी बैठया रैया।

पाच बरस तो अेक–दूजै री गाठ मे कदैई सळ नीं पडया अर आ लारलै पाच दिना में ही म्हैं आरै खातर इत्ती परायी होयगी कै बीं गाठ नै ही आ काट काढी। बडेरा रो कैवणो सही है कै मरद सदा सू लुगाई नै पगा री पगरखी ही समझै अर जद चावै उतार फेंकै। आज ठाह पडी कै आदमी री असली ओळखाण काईं है ? इत्ता दिन म्हैं कोरै मरम मे ही जींवती रैयी।

खैर अबै म्हैं म्हारै वास्तै नीं इण पेट रै माय पनपण वाळै नुवै जीव सारू जरूर जीऊली। कालै तईं तो म्हनै खुद नै ही खबर नी ही कै म्हैं दो जीवा सू होयगी। आज दिनुगै जद जी मचळावण लागो अर कीं उळटिया हुई जणै वैम होयो कै कठै म्हारा पग तो भारी नीं है ? सफ्फाखानै जाय'र चैकअप करायो जणै बेरो पडयो झगडै री जड नै मेटणवाळो बीज पडग्यो है। रीस रै मारै आ बिजा नै कैवणो ठीक नीं समझ्यो। बिसवास जद गुचळकी खा जावै तो फेर मन में सायती नीं रैवै। सोच्यो अै मा–बेटा आपरा अळगा भला अर म्हैं

म्हारी ठौड भली। अबै सासूमा रा आयै दिन रा ताना तो नीं सुनणा पडसी। रोज अेक ही रट रैंवती म्हैं दादी कद बणसू, म्हैं दादी कद बणसू ? हा अेक बात कैवणी पडसी कै आपरी मा नै समझावण मे आ कोई कसर नीं राखी। बरोबर कैंवता रैया– मा सा इत्तो अणेसो ना करो। बेमाता रै लिख्यै नै कोई टाळ नीं सकै। धीरज राखो। जित्ता दिन आगणो खाली रैवणो है बो रैवणो है। हा ओ बिसवास राखो अेक न अेक दिन थे दादी जरूर बणसो। पण सासूमा रो धीरज तो पौते री अडीक मे कदैई रो कझळाइजग्यो।

अेक दिन सासूमा जद म्हारै माथै बाझडी रो अणचींतो ठप्पो लगायो तो आ सू सह्यो नीं गयो। उण दिन सासूमा नै आ इस्सी खरी–खोटी सुणाईं कै म्हैं तो देख र दग रैयगी। फेर तो म्हनै तुरताफुरती मे सफ्फाखाने लेयग्या अर म्हारी सगळी जाच करवायी। दूजै दिन अै जाच री रपट हाथ में लिया जद घर मे बडया तो आ रो मूढो उतर्योडो सो हो। म्हैं समझगी कै रपट म्हारै पख मे नीं है। उण दिन रै बाद म्हनै लाग्यो अै जाबक ही टूटग्या। फेर तो आ म्हारै सू इस्यी आख्या फरी कै आज दिन तइ साम्ह ही नीं जोयो। छेकड आ सासूमा रै आगै आपरो आपो ही न्हाख दियो। बारै कैया–कैया चालणै रो जाणै सकळप ही ले लियो होवै। अबै सासूमा री मनचायी होवण मे कोई अडचण नीं रैयीं। इणी कारणै आज आ नै ही नीं म्हनै भी कोटकचेडी जावण री पगडडी देखणी पडी। भाग भुआळी खावता कोई जेज थोडै ही लागै। आनै अर म्हनै ओ दिन देखणो हो देख लियो।

अबै म्हनै आगै री सोचणी हैं। भूखीनागी तो हू कोनी कै म्हनै जगै–जगै भटकणो पडै। इसकूल मे मास्टरनी हू। इण सू भी मोटी बात आ कै अबै म्हैं कोई अधूरी लुगाई नीं रैयी। बस अब तो म्हनै पैलो काम ओहीज करणो है कै ईं घर सू म्हारा बोरिया–बिस्तर समेट'र अठै सू खिसक जाणो है। सासूमा रा बडबडाटा सुणू, इण सू पैला बिरजा भुआसा रै घरै चली जासू। जठै तईं दूजी जगा तबादळो नीं हो जावै रैवण री अेक ठौड तो है।

तागै मे सामान मेल'र म्हैं बैठबा लागी कै अै कचेडी सू आया अर अेक निजर म्हारै माथै न्हाख'र चुपचाप घर री चौखट चढग्या। उण बगत रीस तो म्हनै घणी आई पण मन मे नुवी आसा रै जागणै रो सतोष चुपकै सी इस्यो चूटियो बोडयो कै बोली रैयगी।

आ नै म्हैं सू मुगती तो मिळगी पण आख्या री नींद जावती रैयी। दिन री बेळा खुद रो सायो तो सागै रैवै रात री टैम बो भी साथ छोड देवै। दिन कट जावै पण रात कटणी ओखी। घर सू बारै रैवै तो कम सू कम मायला रै बिचाळै बोल–बतळावण तो हो जावै। घर में तो बडता ही हर बगत मासा रो रेडियो सुणणो पडै– अरे लाडेसर रिडमळजी री भाणजी नै अेकर देख तो आ। आछी

भणी गुणी है। सुरेख भी लागणी बतावै। देखवा मे तो कोई हरज कोनी। वै खुद चला'र आया है तो वीं उथळो तो आपा नै भी देणो है। वीं नासपीटी सू नीठ तो लारो छूटयो है अर तू है'कै मन नै मसोस'र बैठग्यो। इया किया काम चालसी ? दस दिना मे थारै उणियारै जठै नुवो तेज तडकणो चइजै वठै बळी घास ऊगगी। इया जावक ही इसी मत उडवा। म्हारी मान वीं मरी नै भूल जा अर नुवैसर सू घर बसावण री सोच।

अै मासा नै वीं धीरज धरणै रो कैंवता तो वै फेर उवळ पडता— तो काईं बुढापै में ब्याव करसी ? वीं सोच तो सरी। अबार थारी ऊमर ही काईं है ? बिरादरी में दो—चार जगा बेरो पड़सी तो रिड़मळजी री तरिया दूजै लोगा कानी सू भी तेडा आवणा सरू हो जासी। अेक—अेक सू बढ—बढ र रिस्ता नीं आवै तो म्हनै कैये। थारै जिस्यो मोटियार कोई नै ढूढया नीं मिळै। तू म्हारो कैयो मान वीं छोरी नै अेक निजर देखलै अर फेर म्हनै बता। दाय आ जावै तो वा नीं जणै दूजी कोई देखसा। म्हैं सोचू, घर बैठया लिछमी आ जावै तो घणो ही चाखा। वीं निपूती सू नीठ तो पिण्ड छूटयो है। अबै दूजा ब्याव करणै मे देर नीं करणी।

म्हारी मासा ब्याव रो कोई तसियो कोनी। थे कै सो तो कर लेसू। पण वा भी जे निपूती रैयगी जणै ?— आ नै मासा रै मूढै सू म्हारै वास्तै निपूती सबद बोत कोजो लाग्यो।

बोलो रैय। इस्यी कुजबान मत काढ। सगळी बाझडी हो जावै तो उधड़ग्या नीं भाग। ससार री रचना बाझड़या सू नीं होवै।

सासूमा रा कड़वा बोल सुणता—सुणता अै अेकदम आखता होयग्या। चावतै थका भी म्हनै अै आपरै मन सू निकाळ नीं सक्या।

तलाक सू पैला अेकर आ अेक बीचळो रस्तो भी काढणो चायो। म्हारै आगै बात भी टोरी कै म्है जे 'हा भरू तो अै आपरी मासा नै राजी राखवा खातर कोई दूजी लुगाई ले आवै। दोरी—सोरी वा म्हारै सागै रैय लेसी। पण म्हैं राजी नीं हुयी। फेर भी अै आज भी म्हनै भूल नीं सक्या आ म्हैं जाणू हू। म्हारी भी आहीज हालत है।

सच तो आ है कै अेक—दूजै नै बिसरै भी कींकर ? हियै रै माय अेक दफै जिकी मूरत थरपीज जावै बा सारै सास उखड नीं सकै।

खैर म्है म्हारो काळजो सागीडो काठो कर राख्यो हैं। बिरजा भुआ सा म्हारी सायणी हीज है। दोनू अेक ही घाट री नहायोडी। इण कारणै म्हा दोना में पटै भी खूब। भुआसा नै भी फूफाजी सू जुदा हुया निरा बरस होयग्या। अबै वारै सागै म्हैं भी रळगी। हा आ बात न्यारी है कै वारै आगै म्हारो रुतबो कीं बेसी है। क्यूकै म्हैं अबै अधूरी नीं रेयी। इया भी भुआसा जाणै है कै थोडै अरसै बाद

म्हारो तलाक तार–तार हो जासी अर म्हैं पूठी म्हारै घरै जासू परी। ओ अळगाव सूनी कोख नै लेय'र होयो है। या अवै जद भरीजगी तो फेर राड़ ही खतम।

सिझ्या री वेळा। इसकूल सू आय'नै म्हैं भुआसा कनै वैठी हसी–ठिठोली करै ही कै अेकाअेक सासूमा वठै पधारग्या। म्हैं हड़बड़ा'र ऊभी हुयी'कै भुआसा हाथ जोड'र वानै नमस्कार कर्‌यो अर कुरसी पर वैठवा री अरज करी।

सासूमा माफी मागता कैवण लागा– ऊपर वाळै म्हा लोगा रै सागै अवकै इस्यी मसखरी करी है कै बखाणी नीं जावै।

काई हुयो ? – भुआसा जाणतै थका भी डबूचा लेवणा सरु कर दिया।

सासूमा वोल्या– अजी काई बतावा ? जिण दिन बीनणी सफ्फाखानै गई जाच करवावण खातर उण दिन भायैजाग ईं रै ही नावरासी री अेक दूजी लुगाई भी वियै ही काम सू बठै पूग्योड़ी ही। उणरै धणी रो नाव आर किसन अर म्हारे म्हारै वेटै रो नाव रामकिसन ! गळती सू दोना री जाच–रपटा पळटीजगी। वीं री जाच रपट तो म्हारै अठै आयगी अर ईं री बारै कनै पूगगी। बाद मे वीं रै घरवाळै जद रपट में लुगाई री ऊमर छब्बीस साल देखी तो ठणक्यो। बा तो बाईस वरसा री हीज है।

जाच रपट लेय'र बो तो पाधरो सफ्फाखानै ढूक्यो। बठै बेरो पडयो'कै रपट तो सरासर बदळीजगी। त्यायी पूछतो–पाछतो आज दिनुगै म्हारै अठै आयो अर म्हनै सारी हकीकत बतायी। जद म्हैं म्हारै रामकिसन री दराज सू बीनणी री रपट त्या'र दिखाई तो बींनै पतो लाग्यो'कै बींरी लुगाई री असल रपट तो आ है। जद कै आ रपट तो कीं रै ही पख री कोनी ही।

जणै वीं रपट नै तो देखता ही बींरो तो मढो उतरग्यो होवैला ? भुआसा पूछ्यो।

बो तो उतरणो ही हो।

जिकी रपट बीं आपनै झलाई उण मे काई हो ? – भुआसा दूजो सवाल कर बैठया ।

वा म्हारी बीनणी रै पख री है। सासूमा राजी होवता सा बोल्या।

इण रो मतलब है कै म्हारी ईं भतीजी मे कोई खोट कोनी। भुआसा झट कैंवता ही होया। बिल्कुल कोनी। – सासूमा रै चैरे माथै पछताव री रेख्या साफ झलकै ही। कैवण लागा– अबै तो आ कदै न कदै मा जरूर बणसी।

भुआसा भरम रो पडदो हटाता बोल्या– माजी अबै तो बात बिखरगी नीं जणै थानै आज ओ जाण'र घणो हरख होवतो कै म्हारी ईं भतीजी रै भाग री खिडकी तो पैला ही खुलगी। ईं नै तो मईनो भी दूजा चढियोडो है अर सात मईना रै बाद तो आ मा भी बण जासी।

दुनिया दीखै जैडी कोनी

वाट जोवती बिरहण रा बिखर्‌योडा काळै केसा दाई अधियारो चारू कूट पसर्‌योडो। धुरव तारो बतळावै हो कै झाझरको होयग्यो। पण रात रो सण्णाटो ओजू तई धरती रो पिण्ड नीं छोडयो।

भीखलो आख्या मसळतो आसै–पासै कुई टटोळतो उठ'र बैठो होयो। कनै ही दूजी खाट पर मा सूती टसकै ही। दो दिना सू ताव बींनै जिझ नीं लेवण दै ऊपर सू रात वाळी रीस खाय'नै माथो खराब कर दियो। जणै डील तो खळभळ करणो ही हो। लारलै अेक पखवाडै सू सरदी भी सागीडो मू फाडया ऊभी है। तावडै नै तो निकळया ही नौ दिन होयग्या। सूरज बादळा मे इण तरै लुकतो फिरै कै कीं नै आख्या ही मीं दीखै। ठारी अेडी कै मत पूछो। ठडी पूण बाजती थमै ही नीं। तावडियै बिना बीं बळी नै बरजण वाळो भी तो कोई कोनी।

इस्सी कडाकै री ठड मे भीखलै रो मन करै हो कै अबार उठै हो नीं। पण उठया बिना सरै भी तो कोनी। सिराणै बीडी रो बडल ढूढ र निकाळै। फेर अेक बीडी काढ र सुळगावै। जद दो–चार कस खींचै जद जाय नै डील में थोडी फुरती आवै।

पगरखी पैन्ह र होळै सी किवाड खोलै अर बारै झाकै तो आभो सारो घुघळो–धुघळो निजर आवै।

अबार बींनै दूध लेवण नै जाणो है। मा उठसी जद बीं नै चाय बणा'र तो देणी है। इणी खातर तो बैगो उठणो पड रैयो हैं।

काबळियो ओढ र बारै निकळै अर किवाड उडका र हाथ मे बरणी लिया दूधवाळै कानी टूर पडै। आगै रस्तै मे पींपळ रै हेटै दो गडक मर्‌योडा दीखै तो थोडी कपकपी सी छूटै पण फेर हिम्मत राख नै आगी नै बध जावै।

चालतो–चालतो रात मे मा री कैयोडी सारी बाता बुदबुदावण लाग जावै। मा री निजरा मे जीवणी काई सचमुच ही आछी लुगाई कोनी ? बींरी बात छिडतै ही मा नै कित्तो गुस्सो आयो होय राम। किस्सी क कडकती बोली– बा जे ई घर री चौखट पर चढगी तो म्हनै मरयोडी देखैलो। भळै बा भी कोई लुगाई है। आखै दिन यार–भायला सागै बेलगाम घूमती फिरै। इस्यी कुळखणी

रो तो म्हैं मू ही नीं देखणो चावू। जिकी आपरै माइता रो नाव काळी धार डूबोवण मे नीं हिचकै या अठै आय'नै काईं न्याल करसी ? तनै–म्हनै बेचर जगात नीं भरै। इस्सी ही बीं री भुजाई है। दोनू अेक ही माजणै री है। भुजाई भी धणी रै मर्‌या बाद अेक दिन भी सिचळी नीं रैयी। जिस्या लखण बींरा है बिस्या ही जीवणी रा। ब्याव होयो कोनी अर जणै–जणै सागै फेरा लेवती फिरै। दो–तीन दफै तो इस्यो काळो मूढो करा चूकी'कै पेट मे पळतै पाप नै बेटैम बारै न्हखवाणो पडयो। बीं हरामजादी नै घर तो रैयो दूर म्हैं तो ईं गळी मे ही नीं घुसणै दू। म्हनै तो बीं रै नाव सू ही नफरत है।

भीखलो सोचण लागो'कै काईं कर्‌यो जावै ? बींरै तो जीवणी अेकदम चित्त चढयोडी ही। मा नै बीं घणो ही समझायो कै जीवणी इस्यी–बिस्यी नीं है। बीं रै फुटरापै नै देख'र घणकरी लुगाया बीं सू ईरस्या राखै अर बैहीज बीं रै बारै में उळटी–सुलटी बाता फैलावै। बीं री भुजाई री साख तो बीं गिरयोडी हो सकै है। पण बीं रै भटकणै री बात गळै उतरणै वाळी नीं है। बीं नै तो जाणबूझर बदनाम करणै रा कुचक्कर रच्यो जा रैयो हैं। बस बींरा कसूर इत्ता हा हैं'कै बा भोळी है।

भोळी कैंवता ही मा दूणी भडक उठी। बोली– अरे बावळा भोळी बा नीं है भोळो तू है जिको बींरै लारै बेमतळब रो लटटू हो रैयो है। तनै बीं ठाह ही कोनी। बीं लखणा री लाडी नै सगळी दुनिया जाणै है। बा कोई सू छानी कोनी। दिन में ही जद लोगा नै उल्लू बनावण मे चूकै कोनी तो रात री राणी बण'र बडा–बडा नै तारा दिखळावण मे कोई सू कमती क्यू रैवै ? बा कबरी आख्या री अेक इस्यी बिल्ली है जिकी रात नै तो सौ–सौ चूहा खावै अर दिन में हज जावती दीखै।

मा री बाता सुण–सुण'र भीखलै रो तो भेजो ही सूनो होयग्यो। माथै नै कई ताळ झझोरतो रैयो। फेर बीं नै बो दिन याद आयो जीं दिन जीवणी बींरी जान बचायी ही। डेढ महनै पैला अेक रोज गोधुली री बेळा वो खेत सू आवै हो कै पाछै सू कोई गाय रै लारै तीन–चार गोधा न्हासता आवै हा। बो आपरी मस्ती मे चालै हो। बीं नै पतो ही नीं लाग्यो कै लारै डागर भाजता आवै। पगडडी बीं सकडी ही अर आटी–टेढी भी। धोरा न्यारा। अेकाअेक गाय अर गोधा पाछै सू माय आ पडया। भीखलै नै अेक गौधै सींगा पर उठा'नै इस्यो परणै न्हाख्यो कै जावक ही चेताचूक होयग्यो। जे उण टैम जीवणी पतो नीं कींरै खेत माय सू आवै ही भाज'र बठै नीं पूगती तो आज बो कोई नै जिन्दा नीं दीखतो। बीं हिम्मत कर नै भीखलै नै सभाळयो अर ठरड़ती थोडी अळगी लेयगी। बींनै जद चेतो आयो तो साम्है जीवणी नै देख'र अेकर हकबको सो रैयग्यो। फेर जद असलियत रो बेरो लाग्यो तो बींरा हाथ जीवणी रै हाथा नै आपैई छू लिया।

आज वो उण दिन नै अर जीवणी रै उपकार नै किया भूल जावै। वो दिन अर आज रो दिन जीवणी वींरै हियै में थरपीजती ही रैयी। इण वीच वींनै आ सोचणै री फुरसत नीं ही कै जीवणी भी वींनै चावै है क नीं। वो तो वस अेकतरफै प्रेम मे ही डूब्यो रैयो। स्सै सू मजै री वात तो आ कै उण दिन रै वाद कुजोग सू जीवणी नैं वीं दुवारै देखी भी कोनी। आ वात नीं ही कै वो वींरो घर नीं जाणतो होवै। पण वींरी आ आदत नीं ही कै कोइ री तरफ ताकझाक करै। वो तो सदा आपरै काम सू ही मतळव राखतो।

रात मे जद मा वींरै ब्याव री वात टोरी तो वो जीवणी नै झट वीच में ले आयो। इणी कारणै ही इत्ती राफडलीला मची।

दूधवाळै री लारली गळी में ही जीवणी रो घर हो। भीखलै चालतै-चालतै सोच्यो कै आज वीं री गळी कानी सू ही होवतो चालू। जे दीख जावै तो म्हारा भाग। वींनै घरै आवणै रो न्यूतो दे आऊ। वा अर मा दोनू आम्हैसाम्है हो जावै तो कोई बात रो सळटारो होवै।

जीवणी रै घर रै [illegible] तो वीं नै दो अनजाणा सा मोटियार उण रे घर सू बारै निकळता दीख्या। पैला तो भीखलो चमक्यो कै अै माटा कुण है ? फेर वांरै लारै-लारै ही आगै बधतो गयो। वै आपस मे बाता करता चालै हा। वानै आ ठा नीं हीं कै लारै कोई आवै है। अेक बोल्यो- जीवणी में अबै आ बात कोनी जिकी पैला ही। दूजो कैवण लागो- थारी बात सही है। पचास रिपिया चूर लेवै अर भेळी भी होवती दोरी होवै।

अै अणचींती री बाता सुण र भीखलै रै पगा रो तो सत्त ही निकळग्यो। बोलो-बोलो मू लटकायै दूधवाळै री गळी कानी मुडणै रै सिवाय अब वींरै कनै कोई काम नीं हो। छेकड वीं नै मानणो पडया के मा कैयी जिकी साची कैयी। दुनिया दीखै जैडी कोनी।

□□

जोग री बात

भीनासर बस स्टैण्ड पर मामाजी नै नागौर वाळी बस मे बैठाय नै पूठो आवण सारू अेक टैक्सी वाळै नै हेलो मार्‍यो।

टैक्सी ड्राइवर झटसी कनै आय'नै पूछयो–'कठै जावणो ?

'चोथरा चौक। – म्हैं बोल्यो।

'चालो बाबू साब।

'काईं लेसी ?

'तीन रिपिया। पण आगै बैठणो पडसी। लारै अै दो सवार्‍या बैठी है। आनै जैन कोलेज छोडणी है।

'जणै तू आनै ले जा। म्हैं कोई दूजी टैक्सी देखसू।

अजी थानै पैला छोड देसू। आनै पछै ही सरी। थे बैठ तो जावो। अठै – म्हारै पाखती। – टैक्सी वाळै म्हनै आपरै कनै बैठा लियो।

दसेक मिन्टा में ही म्हैं म्हारी ठौड पूगग्यो।

इयै रै ठीक दूजै दिन री बात। दिनुगै–दिनुगै ही कालबैल बाजी। उठर जाय'नै दरवाजो खोल्यो। साम्है जद कीं जाणी–पैचाणी सी सूरत देखी तो मू बायो सो देखतो ही रैयग्यो। इचरज रो कोई थागो ही नीं। आ अठै कींकर ?

'माया .. तू। म्हनै बिसवास ही नीं हो रैयो हो कै म्हारै मू अगाडी माया ही सापरतेक ऊभी है।

'हा मदन। म्हैं हू माया। इया अपळ–गपळ किया हो रैयो है ? काईं म्हनै पैचाणी कोनी ? –माया रा अै बोल सुणता ही म्हनै चेतो होयो कै आ तो साची माया ही है। कोलेज में म्हारै सागै पढणै वाळी अर म्हा सू बेहद हेत राखणै वाळी माया मैनी।

'तू आज अठै कींकर ? .. म्हैं बींनै माय बुलावतै पूछयो।

वा बोली – 'ऊपर वाळै री मरजी। अठै जैन कोलेज में म्हारो लेक्चरार रै रूप में अपोयटमैंट होयग्यो। कालै ही आयी हू। अदाळ अेक सहेली सरोज रै अठै ठैरी हू।

'पण म्हारो ओ ठिकाणो तनै कुण दियो ?

'देवतो कुण ? आपैई बेरो लगा लियो। — होठा पर थोड़ी हसी विखेरती माया बोली।

'कींकर ?

'कींकर काई ? मिळणै रा जोग हा तो पैली मोत तू ही निजर आयो।

'म्हनै तै कठै देख लियो ?

'कालै बस स्टैण्ड पर जद तैं टैक्सी वाळै नै आवाज दीन्ही उण वगत म्हैं वठै हीज ही।

'वठै–कठै ? म्हनै तो निजर नीं आयी।

'तनै कठै सू निजर आवती ? म्हैं टैक्सी मे बैठी ही।

'कुण सी टैक्सी मे ?

'जिकी टैक्सी मे तू आगै री सीट पर जाय'र बैठयो हो।

'उण मे तो दो लुगाया बैठी ही।

'हा। ओक म्हैं ही अर दूजी म्हारी सहेली सरोज। दोनू ओकैसागै ही भीलवाडा सू आयी ही। उण रै कारणै ही तो म्हैं तैं सू बोल नीं सकी। ओकर तो सोच्यो वतळावू। फेर सकगी। टैक्सी वाळै तनै अठै लाय'नै उतार्‌यो तो म्हैं आ जगा नोट कर लीन्ही। जणैई तो अताळ म्हनै अठै आवण मे कोई घणी दिक्कत नीं आयी।— सोफै पर तसल्ली सू बैठ नै माया आपरी सारी गाथा सुणा दी।

'हूँऽऽ। तो जणै आ बात है। पण इया भोरा भोर क्यू चली आयी ? इत्ती काई खतावळ ही ?

'परायी जगा जद कोई आपरो दिख जावै तो फेर उण सू मिळया बिना चैन नीं पडै। जगै देख्योडी ही। ओकर तो सिझ्या ही अठीनै आवण रो मतो कर लियो हो। सरोज रै सागै घूमती–घामती अठीनैकर निकळी भी ही। पण थारै वाण्डै ताळो लाग्योडो हो। जणै पूठी मुडगी।

'कालै तो बैंक सू आयो ही लेट हो। थारी सहेली सरोज अठै कीं जगै रैवै ? — म्हैं जानणो चायो तो माया वोली– अठै पाखती हीज वींरी मौसी रो घर है। महादेवजी रो जिको मदिर है उण रै डावै कानी।

'तैं बीं नै आपणै बारै मे कीं बतायो तो कोनी ?

'नीं तो।

'जणै तो वा। अठै कोई बात नै फैलता देर नीं लागै। खैर अबार बींनै काई कैय नै आयी ?

'बा तो ओजू नींद सू ही को उठी नीं। बीं री मौसी जी नै कैय'नै आयी हू कै थोडो घूम'र आऊ हू।

'बोत आछो कर्‌यो। — फेर थोडो अणैसै में उळूझतो म्हैं बोल्यो— 'साची कैवू माया म्हैं तो सोच मेली ही कै अबै तैं सू ईं जळम में तो कदैई

मिळणो नीं हो सकै। आठ साळ सू वेसी होयग्या। जीवण री पोथी रा घणकरा पाना पळटीजग्या। लारली सै वाता रद्दी री टोकरी मे न्हाखीजगी। ओळू रा तार भी तडकीजण जेडा हो रैया है ।

पण तडकीज्या कोनी ओ तो सच है नीं । – माया की चूटिया बोडती सी बोली।

'बस आ इत्ती भलै ही समझलै। बाकी कीं बाकी नीं रैयो।

थारै मन री तो तू जाणै। म्हनै तो पूरो बिसवास हो कै अेक'न अेक दिन म्हे जरूर मिळाला। आज म्हारो ओ बिसवास सही निकळयो। अरे हा म्हैं तो पूछणी ही भूलगी। मैडम–वैडम कोनी काईं ?

'मैडम फेर कुणसी ?

'क्यू ? अेक सू दो नीं होयो काईं ?

'लागै थारी मसखरी करणै री आदत नीं गई।

'ईं में मसखरी री काईं बात है ? घर तो सगळा ही बसावै।

'घर तो जणै बसै जद बसावण वाळी सागै होवै। म्हैं तो सरु सू अेकलो हीज रैयो। आज भी अेकलो ही हूँ। नीं जणै इत्ती ताळ में अठै चाय नीं आ जावती ?

'तो साची तैं ओजू तईं ब्याव ही नीं करयो ?

'नीं तो।

'क्यू ? आ बात तो जची कोनी। म्हैं तो आयी ही इण मिस ही कै थारै टाबरा सू मिळणो हो जासी। माया झोळै माय सू रमतिया रो अेक पैकट निकाळ'र मेज पर राखती बोली– औ देख बारै वास्तै ही तो सिझ्या बाजार सू खरीद र ल्यायी।

अै अबै थारै टाबरा वास्तै पूठा लेजा। अच्छा आ बात तू भी अजकाळै री लुगाया दई होयगी काईं ?

आ तैं किया सोची ?

'इण कारण'कै घणी पढी–लिखी घणकरी लुगाया माथे पर बिंदी अर माग में सिदूर नीं भर्‌या करै।

'म्हैं आ बात नीं मानू। परणीजण रै बाद माग तो स्सै भरै। कोई सी'क ही होवै जिकी आ तकळीफ नीं करे।

'हुऽऽ ! अबै समझयो। मतलब तैं भी अवार तईं माग नीं भरी ?

'कठै सू भरती ? माग भरणै वाळो कोई मिळतो जद नीं ?

रैबा दै। कुवारा री कोई कमी कोनी। चावती तो कोई भी गळै में माळा पैन्हा सकतो हो ? हा तू जे ब्याव रै पचड़े मे ही नीं पडणी चावै तो बात दूजी है।

अवै तू नीं मानै तो थारी मरजी।

'साची बताये ईं दुनियाँ मे तनै कोई भी भलो मोटियार नीं दीखयो ?

'जणैई तो।

'फेर तो म्हनै ही अवै कोई होणहार नै ढूढणो पडसी है।

'तो ढूढे नीं।

'ठैर पैला म्हैं थारै वास्तै वारै जाय'मैं कोई नै चाय वास्तै कैयर आऊ। – म्हैं उठ र बारैं कानी गयो परो।

लारै माया बैठी अेकदम गुमसुम सी होयगी।

'काईं सोचवा लागगी ? – पाछो आय'नै जद म्हैं थोडी चुटकी ली तो बा हडबडाती सी बोली– 'कीं नीं।

'ठैर सबसू पैला तू आ बता बाबोसा रा काईं हाल है ? बडियाजी रो गुस्सो ओजू तईं बिया ही बरकरार है या कीं थोडो कमती होयो ?

'बा दोना री बात करवा रो तो अवै कोई अरथ ही नीं रेयो।

'क्यू !

'क्यूकै अवै बै दोनू ही नीं रैया। तीन साळ पैला बापूजी चल्या गया अर लारलै साळ मा भी गुस्सै नै सागै लिया ही बापूजी रै लैर गई परी। – कैवती–कैवती माया री आख्या भरीजगी।

ओऽऽ ! जणै तो माफ करये माया। आ दुखदायी बाता रो तो म्हनै बेरो ही नीं लाग्यो। नीं जणै बतळावण करबा नै तो थारै कनै जरूर आवतो।

'कठै आवतो ? म्हारो पतो हो थारै कनै ?

'क्यू, अबै जोधुपर नीं रैवै काईं ?

'रेया रे रेया। जोधुपर छोडया नै ही सात बरस होयग्या।

'तो फेर कठै ही ?

भीलवाडा। बापूजी अर मा दोनू म्हारै कनै ही छेकड तईं रैया। तनै तो बापूजी हमेसा याद करता।

अर बडियाजी ?

'हाँऽऽ ! बा रै बारै मे तो तू जरूर पूछसी। – फेर थोडी कझळाइती माया बोली– 'बारो ही जे थारै पर मन होवतो तो म्हनै आज अै दिन देखणा नीं पडता।

अवै बीती बाता नै भूल जाणो ही आछो। आज तू इत्तै बरसा रै बाद मिळी बा भी अेडै बगत जद घर मे कीं नीं हैं। इया देखै तो ओ घर ही कोनी। घर तो बो होवै जिको सूनो नीं रैवै। अठै तो सून रै सिवाय और कीं निजर ही नीं आवै। म्हारै खातर तो ओ बस अेक बसेरो है। बो भी उण टैम रो जद रात में कुत्ता भूकता होवै।

'म्हैं थारी बात नै समझ रैयी हूँ। पण जीवण नै जाबक ही इया पागळो ना समझ। आदमी आपरी कमजोरी सू बत्तौ कदैई कमजोर नीं होवै। इण वास्तै अै कमजोरी री बाता करणी आछी कोनी।

'तो तू ही बता काईं करू ?

करै काईं घर माडणै री सोच।

'कींकर ?

आ तू सोच।

'पण अेकलै सू तो घर माडीजै कोनी !

'तो अेकलो रैवण रो तनै कैयो कुण ?

'कैवै तो कुण ? पण कोई निजर आवै जद नीं !

'देख काना में तो कवा लै मत। अेकर निजर घुमा तो सरी। जिको आपणो है वो मतैई दीख जासी। बाकी तो आप-आपरा भाग।

माया री बात रो मरम समझता ही म्हैं म्हारा दोनू हाथ जद उण रै आगै बधाया तो बा आपैई म्हारै आगोस मे आयगी।

□□

पळोटण वाळो चाइजै। मा री याद आवतै ही वा जद रोवणो सरू कर देवै तो फेर चुप ही नीं होवै।

छोटी भी तो निरी है।

जणै हीज तो। इण वास्तै सोचा कै कठै कोई भली जुगाड बैठ जावै तो पीरू नै फेरू परणा देवा। ताकै घर भी सूनो नीं रैवै अर टाबरा नै अेक दूजी मा मिळ जावै।

हणूताराम बेटै रो दुखदरद वतळावण मे कोई कमी नीं राखणो चावतो।

आपरी सारी बाता सुणली। म्हनै आ जाण'र खुसी है कै था म्हैं सू कोई भी बात ओळी छानी नीं राखी। जठै हिडदो साफ होवै बठै कोई भी पाप नीं पळै। म्हनै म्हारी भतीजी आपरै अठै देवण मे कोई दिक्कत कोनी। हा अेक बात है जिकी म्हैं आपरै साम्हैं राखणी चावू।

हुकम करो नीं। आपरी जो भी बात होसी म्हनै मजूर है।

फेर तो लाधू झट बोल्यो ही– म्हारै कनै कुवारी कन्या रै सिवाय देवण नै की नीं है। ना तो था लोगा री घणी खातिरदारी कर सकाला अर ना ही म्हा सू थे कोई दायजै री आस राख्या। आप तो जाणो हो मैंगाई इस्यो मू फाड राख्यो है कै चावता थका भी कीं नीं कर सका।

म्हानै आपरी वात मजूर है।

जणै वा। आखातीज रो अणबूझ सावो है। कोई नै पूछणो भी कोनी। उण दिन ब्याव माड देवा। क्यू काईं जचै ?

आप फरमावो जिकी सही है।

आखातीज नै आप तडकै ही बारात लेय'नै आ जाया। पैला खोळ भरीजण रो दस्तूर हो जासी अर रात नै फेरा। दूजै दिन समठूणी होयी नीं कै सगळा नै ब्हीर कर देसा। क्यू, ठीक है नीं ?

ईं सू दूजी सवाई बात कोई हो ही नीं सकै। म्हे बगतसर पूग जासा। अदाळ म्हैं चालू।

हणूताराम सींथळ चल्या जावै।

लाधू मन ही मन खुस होवै कै खरचै रो पचडो टळग्यो। सवा रिपियो नेगचार रो भी नीं देवणो पड्यो। अबै छू–छा मे भतीजी रा हाथ पीळा हो जासी। टंटो मिटसी। बींनै और काईं चइजै ? जमा रकम नै छेडणै री दरकार नीं पडै। बिया तो बीं री जाण मे बनडी रै बनावै अर मू दिखाई मे ही इत्ता तो पईसडा आ जासी'कै ब्याव रो सारो काम सरजाणो चइजै। अपूठा कीं न कीं बचो भला ही। कम सू कम अटी सू तो ढेलो भी खरच नीं करणो पडै।

पतो नीं लाधू नै इस्यी सीख कुण दी कै पईसो भेळो करणै में ही जीवण रो सार है। इणी वास्तै तो बीं आपरो ब्याव नीं करयो। ब्याव करतो तो

गीदकी

लाधू आपरी बरसाळी मे सींथळ सू आया हणूताराम सू गीदकी रै ब्याव बाबत बाता करै हो। बाडै री ओट मे ऊभी गीदकी ध्यान सू सारी बाता सुणै ही।

हणूताराम कैवै हा– कूड क्यू बोला ? रामजी नै जी देवणो है। म्हारो बेटो पीरू चाळीसा नै पूग रैयो है। लारलै बरस ओकाओक जद बींरी लुगाई चालती रैयी तो म्हारै माथै जाणै कोई बीजळ कडक'र गिरगी होवै। चार–चार टाबरिया। मा नै नीं देख र इण्या गेवै कै बडा–बडा रा हिया पसीज जावै। कोई सभाळण वाळो नीं है वानै ! जिया–तिया थोडा क दिन तो दोरा–सोरा काढया। पण आगै पार पडणी ओखी होयगी। रोटी पोवण रा ही सासा पडग्या। सेवट कोई रै कैवण सू सावतसर री ओक बेवा बीजकी नै नातै लाय'नै घर मे बिठाणी पडी। डूबतै नै तिनकै रो सायरो तो चइजै ही।

मईनै ओक तो गिरस्थी की जमती सी दीखी। पण आगै कुजोग की बात भरोसै रो भाड भच्च दैणी फूटग्यो। बीजकी मरजाणी जावक ही हरामजादी निकळी।

क्यू, काई होयो ?

बळी ओक दिन मू अधारै हाजत रो कैय नै बारै गई अर फेर पूठी आयी ही कोनी। बाद मे ठा पडी कै बा आपरै कोई भायलै सागै दूजी ठौड भाजगी। भाजी जिकी तो भाजी नागडीखादी पीरू री पैली वाळी लुगाई रा गैणागाठा भी लुका र लेयगी परी।

जणै तो थीं जबरी करी। इस्यी गई बीती राड नै अपड'र वीं रो मूढो काळो कर देवणो चइजै। थाणै में कोई रपट नीं लिखवाई काईं ?

ना ओ। बात नै घणी चवडी करता तो बिरादरी में कोरा थूक–फजीता होवता। नीं कोई आणी न जाणी। म्हे तो कठै निस्कारो ही नीं न्हाख्यो। आज थारै आगै तो इण खातर ईं री चरचा करी है कै जठै नुवो सम्बन्ध करणो है बठै कोई बात छिपा र काईं राखणी।

ओ तो थारो बडप्पन है। था जिस्या सीधा आदमी इण्या–गिण्या ही है।

काईं बतावा लाधूजी। किस्मत पर बेमतळब रा हथौडा पडणा लिख्या हा सो पडग्या। बिजी तो कोई बात कोनी। छोटी वाळी नानकी नै कोई न

पळोटण वाळो चाइजै। मा री याद आवतै ही वा जद रोवणो सरू कर देवै तो फेर चुप ही नीं होवै।

छोटी भी तो निरी है।

जणै हीज तो। इण वास्तै सोचा कै कठै कोई भली जुगाड बैठ जावै तो पीरू नै फेरू परणा देवा। ताकै घर भी सूनो नीं रैवै अर टाबरा नै अेक दूजी मा मिळ जावै।

हणूताराम बेटै री दुखदरद बतळावण मे कोई कमी नीं राखणो चावतो।

आपरी सारी बाता सुणली। म्हनै आ जाण'र खुसी है कै था म्हैं सू कोई भी बात ओळी छानी नीं राखी। जठै हिडदो साफ होवै बठै कोई भी पाप नीं पळै। म्हनै म्हारी भतीजी आपरै अठै देवण मे कोई दिक्कत कोनी। हा अेक बात है जिकी म्हैं आपरै साम्हैं राखणी चावू।

हुकम करो नीं। आपरी जो भी बात होसी म्हनै मजूर है।

फेर तो लाधू झट बोल्यो ही– म्हारै कनै कुवारी कन्या रै सिवाय देवण नै की नां है। ना तो था लोगा री घणी खातिरदारी कर सकाला अर ना ही म्हा सू थे कोई दायजै री आस राख्या। आप तो जाणो हो मैंगाई इस्यो मू फाड राख्यो है'कै चावता थका भी कीं नीं कर सका।

म्हानै आपरी बात मजूर है।

जणै वा। आखातीज रो अणबूझ सावो है। कोई नै पूछणो भी कोनी। उण दिन ब्याव माड देवा। क्यू काईं जचै ?

आप फरमावो जिकी सही है।

आखातीज नै आप तड़कै ही बारात लेय'नै आ जाया। पैला खोळ भरीजण रो दस्तूर हो जासी अर रात नै फेरा। दूजै दिन समळूणी होयी नीं कै सगळा नै ब्हीर कर देसा। क्यू, ठीक है नीं ?

ईं सू दूजी सवाई बात कोई हो ही नीं सकै। म्हे बगतसर पूग जासा। अदाळ म्हैं चालू।

हणूताराम सींथळ चल्या जावै।

लाधू मन ही मन खुस होवै कै खरचै रो पचडो टळग्यो। सवा रिपियो नेगचार रो भी नीं देवणो पड्यो। अबै छू–छा मे भतीजी रा हाथ पीळा हो जासी। टटो मिटसी। बींनै और काईं चइजै ? जमा रकम नै छेडणै री दरकार नीं पडै। बिया तो बीं री जाण मे बनडी रै बनावै अर मू दिखाई मे ही इत्ता तो पईसडा आ जासी'कै ब्याव रो सारो काम सरजाणो चइजै। अपूठा कीं न कीं बचो भला ही। कम सू कम अटी सू तो ढेलो भी खरच नीं करणो पडै।

पतो नीं लाधू नै इस्यी सीख कुण दी कै पईसो भेळो करणै में ही जीवण रो सार है। इणी वास्तै तो बीं आपरो ब्याव नीं करयो। ब्याव करतो तो

गिरस्थी खिडती अर गिरस्थी खिडती तो खरचै रा आकडा बधता। आकडा बधता तो बीं रो लोई बळतो। जणै इस्यो काम करणो ही क्यू ?

बिया घर में कोई बात री कमी नीं है। आठ गाया अर पाच भैस्या दूहीजै। दो–दो खेत। बस कमी है तो अेक बात री बीं री पईसै री भूख नीं मिटै। हर बगत पईसो ही पईसो सूझै। पईसै रै आगै बीं रै वास्तै रिस्ता–नाता भी कोई मायनो नीं राखै। इण सू ओछी दूजी काईं बात होसी कै जद भाई–भाभी अचाणचकै अेक सडक हादसै मे चालता रैया तो बींनै ज्यादा रोवणो ईं बात रो आयो कै बै आपरै लारै बींरी भतीजी नै क्यू छोडग्या ? बीं नै जे सागै ले जावता परा तो काईं बिगडतो ? बा बेमतळब री गळै री हडडी तो नीं बणती।

साची काळजै रो इस्यो काठो मिनख तो कठैई देखणै मे नीं आवै। भाई–भाभी रै लारै बीं तो दो दाणा कबूतरा नै भी नीं न्हाख्या। कोई पूछतो तो बीं रो अेक ही उथळो होवता– आ खोखळी बाता मे पड्यो काईं है ? म्हें कमनिस्ट हू। ठाकुरजी नै मानू कोनी अर कुरीत्या नै किनारै राखू। दान–पुण्य करणा सै ढकासला है।

घर मे कुल तीन जीव। दादाजी (लाधू रा जी सा) खुद लाधू अर अेकलपी भतीजी गीदकी।

गीदकी नै बाईसवो लागग्यो पण लाधू नै कोई चिन्ता नीं। चिन्ता करण वाळा बस अेक ही है दादाजी जिका आये दिन लाधू नै केंवता रैवै कै छोरी खातर कोई सरवरो टाबर देख। बीसा सू बत्ती बधगी है। काईं आ बूढी होसी जद ब्याव करैलो ? ईं री साईण्या तो दा–दो टाबरा री मा बणगी अर ईं रै माथै मे ओजू माग ही नीं भरीजी। आस–पडौस वाळा मैणो देवता थकै कोनी अर तू है कै काना मे डूजो दे राख्यो है।

लाधू पूठो जवाब देवतो कै जी सा मैणो तो बो देवै जिकै रो माजणो नीं होवै। थे चिन्ता ही ना करो। गीदकी आपरी पोती है तो म्हारी भतीजी भी है। ईं रै ब्याव री सगळी जिम्मैदारी म्हारै माथै है। इण खातर म्हें जाणू, म्हारो काम। कोई भलो सो छोरो देख्यो नीं कै गीदकी नै परणायी नीं।

दादाजी जाणै हा कै लाधू नै कोरी बाता आवै। इण सू कीं नीं होवै। बीं नै याद अणावता–अणावता थकग्या पण बीं बदै रै चोपडै घडै कदै छाट नीं पडी। छेकड बा अेक रोज लाधू नै अेडी सागीडी डाट पाडी कै बो थूक गिटणै लागग्यो। पाछो कोई जवाब नीं दे सक्यो। अबै नी चावतै भी बींनै गीदकी रै ब्याव कानी थोडो ध्यान देवणो पड्यो। अेक–दो जगै कीं सुरसुरी भी छोडी।

लिखमीसर मे गीदकी रै मासड छोगजी कनै बात पूगी तो बा अेक छोरो बतायो। बारै हीज गाव रो हो। जात भी दूजी नीं। छब्बीस–सत्ताईस बरस रो पूरो मोटियार जवान। गोरोचिटटो। सुरेख लागणी। कद–काठी रो हड़ीब अर

डील रो भी सैंठो। कोई अैब नीं। गाव में मिणियारै री दुकान करै। चोखो कमावै'नै चोखो खावै–पीवै। मा–बाप रो अेक ही बेटो। अेक बहण है जिकी नै परणा दीवी। दूजी कोई जिम्मैदारी नीं। खुद रो नाव जेठियो अर बाप रो नाव हीरजी।

दो–तीन दफै गीदकी नै मौसी रै अठै जावण रो काम पड्यो तो छोरो बीं री निजरा सू निकळयोडो हो। मासी रै घरै बींरो आवणो–जावणो बण्यो ही रैंवतो। अेकर मौसी कैयो भी 'कै लाघूजी हा भर दै तो ई छोरै नै गीदकी सारु रोक लेवा। उणा रै वो दाय आयोडो हो।

लाघू घणा दिना तईं टालमटोल करतो रैयो। छोगजी जद कीं घणो जोर दियो अर सनेसै पर सनेसो भेज्यो तो बीं जूझळ खावतै ओ कैय'नै पिण्ड छुडा लियो'कै छोरी गीदकी नै कठै दूर–दराज मे नीं फेकणो। लिखमीसर खासो अळगो है। इण वास्तै सैर रै आखती–पाखती री कोई छोरो देख रैया हा।

छोगजी काईं करता ? बा फेर बात नै पाछी टोरी ही कोनी।

अताळ जद गीदकी नै ठा पडी कै काको तो बींनै अेक दूज वर रै गळै बाधणी चावै तो बा अेकदम गपळाइजगी। गळगळी होय'नै पाधरी दादाजी कनै गई अर बारै सीनै सू चिपट'र रोवण लागगी। रोंवती–रोंवती ही बीं दादाजी रै आगै मन री सारी भडास निकाळ काढी। बोली– जे म्हनै सींथळ भेजणै री सोची तो म्हैं कोई कूवो–खाड कर लेस्यू। म्हैं लिखमीसर जावण नै त्यार हू, पण सींथळ कानी मूढो ही नीं करू। बठै तो फेर म्हैं मर्‌या ही जाऊली।

दादाजी धीरज बधायो। कैवण लागा– आखातीज नै ओजू बीस दिन बाकी है। तनै चिन्ता करणै री जरूरत कोनी। म्हारै माथै बिसवास राख। अठै बोहीज काम होसी जिको म्हारी लाडली पोती रै मन भावतो होसी।

गीदकी नेचींती होयगी। पण ज्यू–ज्यू आखातीज नैडी आवण लागी बीं रो मन कळझळ–कळझळ करबा लागग्यो। बैसाख सुदी अेकम तईं दादाजी कानी सू जद कोई बात ऊची उठती नीं देखी तो बा हिम्मत हार बैठी।

ब्याव री त्यार्‌या बरतीजै ही अर गीदकी रो काळजो रैय–रैय'नै माय सू कळपीजै हो कै दादाजी बींरी बात नै भूलग्या। सेवट बीं आपरो ओ मानस बणा लियो कै सींथळ वाळै सागै फेरा लेवणसू तो आछो है कूवै मे कूद'र मर जाणो।

पगडै बैसाख सुदी दूज ही। घर रै आगै तबू तणीज रैया हा। रसोवडै में मिठाया बणीजै ही। जात–बिरादरी वाळा रो जमावडो सरू होयग्यो। गीदकी सोच्यो लुगाया गीत गावण नै भेळी होवै उण सू पैला कठै कूवै मे नीं तो पिछवाडै कूडी मे ही कूद जाणो।

रात पसरणै लागी कै जी नै काठो कर्‌यो अर ओळैछानै लारलै बाडै सू पिछवाडै जा ढूकी। कूण्डी रै माथै राख्योडै लकडी रो पाटो हटायो हो कै अचाणचकै दादाजी लारै सू आयनै झट हाथ झाल लीन्हो। बै निरी ताळ सू गीदकी रा रगढग देखै हा। बोल्या– कूण्डी मे कूद'र काईं दादाजी रो नाव काढणो चावै ? बावळी आ तो बता इया बेमौत मरणै री तैं सोची कींकर ?

गीदकी बाको फाड'र रोवण लागी जिको रोवती गई–रोंवती गई। कैवण लागी– म्हनै मर जाणै दो। आपनै पैलाही केय दियो हो कै सींथळ री बारात आवण सू पैला ही म्हैं म्हारी जान दे देसू। म्हैं अबै जीणो नीं चावू।

तो काईं मरणै री पक्की धारली ? जे आहीज बात है तो म्हैं तनै रोकू कोनी। ईं गुवाडी नै सूनी करणै मे ही तनै सायती मिळती होवै तो फेर म्हैं थारै आडै कोनी आऊ। पण अेक बात सुण लै। बारात सींथळ सू नीं आ रैयी लिखमीसर सू आ रैयी है।

काईं ऽ ऽ ? !

हा बेटी तनै कोरो बहम हो रैयो है। सींथळ वाला नै कागद लिख र म्हैं पैला ही मनाही करा दी। अबै तो हीरजी आपरै बेटै जेठियै री जाण लेय'र आ रैया है।

आ सुणता ही गीदकी अेकर तो चमगूगी सी होयगी। फेर हेटै लुळ'र दादाजी रा चरण झाल लिया अर माफी मागबा लागगी।

□□

बायला बाई

दिनुगै जणैई म्हैं बालकानी में आवू, बायला बाई हेटै गळी मे कठै न कठै ऊभा निजर आ ही जावै। कणै आपरै घर रै आगै गाया नै रोटी देवता होवै तो कणैई रामदेवजी रै मिदर कनै ऊभा चबूतरै पर कबूतरा नै दाणा न्हाखता। छोरै नै इसकूल छोड़बा खातर भी म्हैं तो सदा बानै ही जावता देख्या।

बायला बाई नै जद म्हैं पैली दफै देखी तो अेक घरेलू लुगाई सू बत्ती बा नै नीं जाणी। उण्यिागे इस्यो'कै रामजी सू मिळयोडो। चिटोली आगळी ज्यू अेन दूबळा अर खेलरा दाई सफा सुख्योड़ा। माथो बायोडा होवतो फेर भी झींटा खिडियोडा सा लागता। इया दीखता जाणै कोई बावळी या सऊरबायरी नौकराणी होवै। घर में पैरणवाळा कपडा में ही बारै निकळ जावता अर सगळी जगा घूम–फिर आवता।

बै जित्ता दीखबा मे सूगला बारो छोरो बित्तो ही फूटरो अर सोवणो। देखता ही थुथकारो घातबा नै जी चावै। बीं नै जद भी देखती आख्या मे अेकदम ठडक सी बापर जावती। इस्यो तो गोरोगट्ट अर इस्यो ही डील रो गुदगुदियो। कोई कैय ही नीं सकै "कै ओ बायला बाई रो बेटो है।

बायला बाई म्हारै साम्है वाळी लैण में अेक किरायै रै मकान मे रैवै। बारो धणी कोठारी वूलन मिल में रोकडियै रो काम करै नै खुद अेक सरकारी इसकूल में मासटरणीं। बारी आ खासियत कै बै हर काम मे अगाडी रैवै। गुवाड में कठै भी कोई काम पडै बै हर बगत त्यार। बस इया समझो कै दिनुगै सू लेय'र सिझ्या ताईं कामकाज मे ही उळझ्योडा रैवै। नौकरी रै सागै–सागै घर रो सगळो खोरसो करणो कोई मसखरी नीं है। दूध ल्यावै तो बै साग भाजी लेबा नै जावै तो बै रासण री दुकान जाणो होवै तो बै अर बिजळी–पाणी रो बिल जमा करावै तो बै। इत्ता ढेर सारा काम अेक स्याणी–समझणी अर धीरज वाळी लुगाई ही कर सकै।

अेक रोज अधारै पडया बायला बाई न्हासता–न्हासता म्हारै अठै आया। बोल्या– बहनसा आज म्हैं अेक जरूरी काम सू आई हू। बुरो मत मान्या। बारै सू अेकाअेक म्हारो भाई आयग्यो है अर अै घर में है कोनी। आवैला जद तईं देर हो जासी। म्हानै अेक रात वास्तै थारो माचो चइजै। कालै ही पूठो नडा देसू।

म्हैं बोली– बैठो तो सरी। इया तो थे कदैई आवो हीज कोनी। अबै आया हो तो चाय पी नै जावो। कैवण लागी– अदाळ तो जळदी मे हू। फेर कणैई आसू। भाई खखोळी खावण नै न्हावण घर मे गयो कै म्हैं अठीनै आयगी। पूठी जाय नै वींरै खातर चाय–नास्तो त्यार करणो है।

माचो तो बो बरसाळी में पड्यो। चावो जद मगवा लिया। इया बगत–बेबगत कोई भी चीजबस्त चइजै बेझिझक होय'नै ले जाया करो। सकै री बात नीं है। पडौस मे रैवण रो और सुख ही काईं है ?

धन्यवाद देय'नै बै वीं बगत ही चल्या गया। फेर अेकाध बार भजना में भी भेट होयगी। रूप रग मे भलै ही बै आछा नीं लागता होवो बाकी मन रा बोत साफ हा। दियाळी सू दो दिन पैला आपैई म्हारै कनै आया नै बोल्या– बहनसा कुजी–पापडी बणाबा री बात हो तो म्हनै बोल दिया। म्हैं थानै मदद देबा नै आ जासू। आ कामा मे म्हारो हाथ घणो ही साफ है। म्हैं मन मे सोची नेकी अर पूछ–पूछ। म्हनै तो आज सिझ्या सू ही इयै ही काम मे लागणो है। आरी मदद मिळ जावै तो फेर कैणो ही काईं ? म्हैं बोली– थानै जे टैम मिळै तो सिझ्या आय'नै कीं सायरो दे जाया। ईं मिस अबकै थारै हाथ री बणायोडी चीजा भी खाबा नै मिळ जासी। बोली– आ जासू।

सिझ्या बै तो आय'नै काम मे फटाफट जुटग्या। फुरती इस्यी दिखाई कै म्हैं तो देखती ही रैयगी। सगळो काम इण तरै झटापट निपटायग्या 'कै म्हनै तो हाथ लगावण रो ही मौको नीं दियो। दो–ढाई घटा में सारो काम निवेडग्या। म्हैं अेकली सू तो ओ काम आखो दिन मे ही पूरो नीं होवतो।

उण दिन सू मानगी कै अे तो वाकई कोई निराळा हीज है। इत्ती भणी–गुणी होवण रै बाद इयाकला कामा मे हाथ बटावणो सहज कोनी। मजै री बात आ कै चैरै माथै सिकडण नीं। म्हैं जिस्यीं होवै तो माथो झाल र बैठ जावै जै इत्तो काम करणो पडै तो।

गोविंदजी गिरदावर री बेटी रो ब्याव। म्हानै भी न्यूतो। जान ढूकण री बेळा म्हैं भी आरै सागै–पूगगी। अै बारै मिनखा मे ऊभा बाता करबा में लागग्या तो म्हैं थोडी देर माय कानी चली गई। बठै देखू तो बायला बाई काम में ईं ढग सू उळझ्योडा 'कै जाणै खुद री भतीजी रो ब्याव होवै। गोविंदजी री घराळी तो सगळो काम ही बानै भोळा दियो। दो–तीन दिन बाद बायला बाई मिळया तो म्हैं बा सू पूछयो– गोविंदजी रै घर सू थारो कोई नजीकी रिस्तो है काईं ? उण दिन सारो काम थे हीज करता दीख्या। बोल्या– पडौसी रो रिस्तो घरवाळा सू बेसी होवै। बारी बेटी रो ब्याव। काम मे तो सायरो देवणो ही पडै। म्हैं म्हारो फरज समझ्यो तो हाथ बटावण नै गई परी।

बायला वाई री अै बाता म्हारै माय तईं खळबळगी। साची म्हनै तो कदै इत्ती उकत ही नीं आवै। बारो कैवणो सही है। अेडै मौकै पडौसी पडौसी रै आडो नीं आवै तो और कुण आवै। काम करणै सू हाथ नीं घसीज।

लारलै मगळवार री बात। म्हैं दोनू हडमाणजी रै मिदर गयोडा। हेमू घर में अेकलो बैठयो टीवी देखै हो 'कै बिजळी गई परी। टाबर हो अधारै मे डरग्यो। भाजर बैगो सो बारै आवण लाग्यो'कै ठोकर खा बैठयो। लढणदैणो पगोथिया सू हेटै गिर्‌यो कै माथो फूटग्यो। बीं रै गिरणै रो खुडको सुणर गळी रा छोरा भाजर आया। बायला बाई भी पूगग्या। देख्यो तो हेमू बेहोस। माथै सू खळखळ लोई व्हैवै। आगै बधर झट बा तो छोरै नै गोदी मे उठायो अर माथे पर पूर लपेटबा लागग्या। अेक छोरै नै भेजर टैक्सी मगवाई अर हेमू ने पाधरी अस्पताळ लेयग्या अर आपरै छोरै नै दोना घरा री रूखाळी वास्तै बठै ही छोडग्या।

अस्पताळ जाय'नै बैगा सा डाक्टर स् मिळया नै हमू रो इलाज चालू करा दियो। लोई री जरूरत पडी तो झट आपरो लोई दे दियो। घटै भर बाद म्हे जद बठै पूग्या उण टैम तो हेमू नै होस भी आ चूक्यो।

इण दफै बायला बाई री सेवा रो ओ अेक नुवो ही रूप देखबा नै मिळयो। हेमू रा बापूजी तो उणा नै अेक देवी रो साकसात अवतार ही समझबा लागग्या।

थोडा'क दिना बाद म्हे दोनू बायला बाई रै अेकर घरै गया। घर मे बडतै ही काईं देखा कै जगै–जगै गमला राख्योडा नै उणा में फूल खिल्योडा। छोटो सो घर'नै इत्तो साफ सुथरो 'कै कैवण नै सबद नीं। अेक–अेक चीज आप–आपरी ठावी ठौड। आसरम दाईं अेकदम सायती। कीं तरै रो कोई दिखावो नीं। ना सोफासेट है नां फ्रीज। बैठक मे अेक दरी बिछा राखी है। म्हे जायनै बठै ही बैठग्या।

भायैजोग सू बायला बाई रा धणी घरै ही हा। पैली दफै बानै नजीक सू देखबा रो मौको मिळयो। बानै देख र म्हे तो साची चकाचूध ही होयग्या। अेडो सुरेख लागणो चैरो तो म्हारी पूरी गुवाड मे ही नीं हो। आ तो सूआ रै चोच जैडी तीखी नाक कमल रै उनमान ओ रूपाळो उणियारो नै काळा नाग रै बिचिया जैडा काळा केस। सिनेमा रै हीरो दाईं हीज लागता। बोलबा में भी मधरा। उण टैम अै तो उणा रै सागै अेक दूजै कमरै मे गया परा अर म्है बायला बाई कनै बठै ही बैठी घरविध री बाता मे लागगी।

चाय पींवतै बेळा म्हारै बार–बार पूछणै पर बै आपरै जीवण री लारली पोथी रा पाना उगाड़ता बोल्या– म्हारा जी सा अेक साधारण सा बाबू हा। घर रो खरचो भी बडी मुसकिल सू चालतो। म्हे आठ प्राणी। म्हैं सू चार छाटी बहना नै अेक छोटो भाई। सगळा रै पढाई रो खरचो न्यारो। म्हैं अेम अे कर नै बी अेड री त्यारी करै ही कै माईता नै म्हारै ब्याव री चिन्ता सतावण लागगी। जगै–जगै छोरो देखबा नै गया। पगरख्या घिसी पण कठैई सगपण नीं ढूक्यो।

जोग री बात। अेक जणा खुद चलाय'नै आपरै छोरै खातर म्हारो हाथ मागबा नै घरै आयग्या। छोरो भी सागै। बीअे तईं मणीज्योडो। बाप रै सागै इसटील रै कारखानै रो काम सभाळै। लखपती घराणो। बापूजी रै जचगी नै म्हनै भी छोरो दाय आयग्यो। चट मगणी पट ब्याव।

सासरै आई। घणा ही हरख कोढ होया। इण बीच अेक बात म्हनै बोत बुरी लागी कै आवै जिको ही आरै सागै इस्यी गदी अर फीटी-फीटी बाता करै अर अै कीं नी बोलै। कोरा दात काढर रैय जावै। नणदोई सा भी आरै सागै भद्दी-भद्दी मसखर्‍या करता रैया। उण बगत म्हारै माय भमरोळा रा अेडा-अेडा गोट उठै कै मत पूछो। पण म्हैं कीं बोली कोनी।

रात नै जद पैली बार आ सू मिळणो होयो अर आ सू बाता करी तो असली बात सगळी चवडै आयगी। म्हैं जाणगी कै म्हारै सागै धोखो होयो है। पण अबै काईं होवै। फेरा लेइजणा हा लेइजग्या। धोखो समझो चावै सजोग। म्हैं आग बधना में बधीजगी। इया अै कोई जावक माडा नीं हा अर ना ही कोई इस्या बिस्या। आरै माय तो बस आहीज कमी ही'कै हद सू ज्यादा सीधा अर भाळा हा। हर कया नै साची अर खरी बात कैवण मे लखता कानी। लाग आरै भोळापै रो गळत फायदो उठावता। आ सू कुरेद-कुरेद'र नीं पूछणी होंवती जिकी बाता पूछ लेवता। आ नै आ ठाह नीं कै कीं रै आगै कुण सी बात कैवणी अर कुणसी नीं कैवणी।

दूजै दिन तो आरै सीधैपणै रै लारै लोग म्हारे माथै भी हसणो सरू कर दियो। म्हनै दखता ही मुळकण लाग जावता। नणदोई सा री तो म्हारै माथै निजर ही मैली होयगी। उणी बगत म्हैं समझगी के अठै म्हारा रैवणो नीं हो सकै। बैगो ही सासरो छोड'र कोई दूजो आसरो ढूढणो पडसी।

चौथे दिन ही म्हैं पीरै चली गई। बठै ही चुपचाप नौकरी री जुगाड बिठाई। रामजी भली करी म्हनै अेक गाव मे मासटरणीजी री नौकरी मिळगी।

पूठी सासरै जाय'नै सबसू पैला आनै बिसवास में लियो। अै म्हारै सागै चालबा नै राजी होयग्या तो फेर म्हनै कीं रो ही डर नीं हो। अेक रोज सगळा री फाटयोडी हसी माथै थूक उछाळती नै अगूठो दिखावती आरै सागै गाव गई परी जठै म्हारी नौकरी लागी। बठै म्हे पाच बरस रैया। दीपू भी बठै ही होयो। उण रै बाद तबादलो होवण पर अठै आयग्या। अबै ता आरै माय भी मोकळो बदळाव आयग्यो। अै भी समझग्या कै घरवाळा आनै अेक रमतिये सू बत्ती और कीं नी जाण्यो। जित्ता बरस गाव मे रैया आ पचायत समिति मे मुसीगिरी करी।

आज म्हे म्हारै पगा रै ताण खडया हा अर बात सुखी हा। जित्ती चादर है उतरा ही पग पसारा। जीवण नै सादगी मे ढाळबा रो पूरो जतन करा। इच्छावा रो कोई छेडो नीं है अर सतोस सू बत्तो कोई सुख नीं है।

बायला बाई री अै बाता सुणर म्हनै इया लाग्यो जाणै म्हैं धरती में धसती जा रैयी हू।

□□

चोखाराम रो चोळको

नापासर मे सेठ धनीरामजी री मोटी-ठाठी हवेली जिकी सदा आभै सू बाता करै। धन्ना सेठा में धनीरामजी रो नाव सरु सू सिरैमौर रैयो। हवेली मे बडता ही च्यारुमेर लिछमीजी साकसात विराजती निजर आवै।

आखै गाव में सेठजी रो आछो-खासो मान। सकट पडया हर कोई मदद सारु बारी ही चौखट चढै। ब्याजूणा उधार देवण मे सेठा री अेक न्यारी ही साख ही। हजार-डेढ हजार सू बत्ती कीं नै उधार नीं देवता जिण कारण पईसो पूठो आवण मे कोई दिक्कत नीं रैंवती। जे कठै आवती भी तो अडाणै पडी चीज नैं जब्त करणै रो डर दिखाय देंवता। कैवै बतावै सेठा रै अठै लोगा रा दस किलो गैणा अडाणै मेल्योडा है। बाकी चीजा री गिरणती ही कोनी।

घतराई में भी बै सै सू आगै। गिरस्थी नै बा इण वास्तै बधणै नीं दी कै कालै खरचो नीं बध जावै। इण मामलै मे बै हमेसा चौकन्ना रैंवता। चावै बारै माय कमी समझो या खूबी बा सू खरचो बरदास्त नीं होंवतो।

सेठ जी रै एक भाणजो हो राजू, बडी बहण रो बेटो। बहण-बैन्दोई दोनूं अेक हादसै में चालता रैया। राजू उण बगत जाबक ही छोटो हो। काका-बाबा राखण सू मना कर दियो तो सेठजी रै सबदा में धिगाणै री अलबत गळै मडगी। जदकै सेठाणी रो तो राजू नै देखता ही खून बधग्यो अर इया लागण लागो कै आगै रो जीवण सुधरग्यो। बीं रो पेट तो कदै खुलणो नीं हो। खुलै तो कींकर ? टाबर खिडणै रै डर सू सेठजी तो ब्याव रै बाद आज तईं सेठाणी रै भेळै ही नीं होया। सोच्यो भेळो होयो नीं कै टींगरा री फौज खडी होई नीं। जिण रो मतळब है खरचो बधणो जिको सेठा नै कतई मजूर नीं। इणी कारणै सेठजी सरु सू ही सेठाणी सू अळगा ही सोंवता।

राजू जद छोटो हो सेठाणी बीं रो बोत लाड राखती। आछो खुवावती आछो पैरावती। सेठजी टर्ड-टर्ड करता रैंवता पण सेठाणी बारै कानी ध्यान ही नीं देंवती। सेठजी राजू नै छठी-सातवीं सू आगै पढावण रै पख में नीं हा पण सेठाणी बींनै लगोलग आगै पढावती रैयी। राजू भी पढणै मे बोत होसियार हो। वैगो ही पढ-लिखर त्यार होयग्यो। आज वो बीकानेर में अेक बैंक में बाबू

है। वठै सेठाणी रै भाई चोखाराम रै अठै इण ढग सू रैवै जाणै वोहीजी वींरो नानाणो है। चोखाराम भी वींनै सगै भाणजै दई ही राखै। इया भी वींरै दो छारया ही है छोरो कोनी। फेर वहण रो खोळायत इण कारणै भी चोखाराम रो राजू रै माथै मन भी मोकळो हो।

बीकानेर में सेठजी रै नाव आठ मकान हा जिका वारै नानैजी री तरफ सू दियोडा हा। वा स्सै नै सेठजी किरायै माथै चढा राख्या हा। चावता तो अेक मकान राजू खातर खाली करवा सकता हा। पण इण कारणै आ बात वारै नीं जचीं कै किरायै री रकम मे घाटो पडसी। चोखाराम रै अठै रैसी तो किरायो भी नी देवणो पडै अर खाणै–पीणै रो भी सुभीतो। मतळव दोनू कानी सू वचत ही वचत। दस–वीस हाथखरचै रा टाळ'र वैंक री तिरखा छेडणै री जरूरत नीं पडै।

मकाना रो किरायो वसूल करणै अर राजू री तिनखा लावण वास्तै सेठजी हर मईनै सेठाणी नै बीकानेर भेजता तो वा सगळा सू मिळ जावती अर सुख–दुख री जो भी बात हावती कैय जावता।

राजू ब्होत होणहार अर समझदार हो। सेठजी रै लाळचीपणै री वींनै पूरी जाणकारी ही। वींनै आ भी ठाह ही कै सेठजी रै अणूतै कजूसपणै रै कारणै ही सेठाणी री अणचींती दुरगत होई है। हफ्तै–दस दिना सू बो नापासर जावतो अर सेठाणी सू मिळ र पाछो आ जावतो। सेठा रा अेकर पग जरुर छूवतो पण फेर वारै कानी मुड र ही नीं देखतो। सेठाणी री आख्या रो चमकतो तारो हो तो सेठजी वास्तै खजानै नै अखूट बनावण वाळो हो। अेक रो लाडेसर तो दूजै रो कमाऊ पूत।

विचाळै सी क रतनगढ सू अेक लूठी आसामी हरखचन्द जी आपरी छोरी रै सगपण सारु सेठजी रै दौलत–खाणै पूग्या। बारी अेक हीज बेटी। ब्याव में बीस लाख रिपिया तईं खरच करबा नै त्यार। माय सू तो ओ रिस्तो आयो देख र सेठजी फूल्या नीं समाया पण फेर दूर री सोच र अेक अणओपती फाडी घात दी। कैवण लगा– म्हनै सारी बाता मजूर है पण अेक बात म्हारी भी मानणी पडसी। हरखचन्द जी बोल्या – 'हुकम फरमाओ।

'मुकळावो पाच बरसा बाद कराला। इण बीच थारी बेटी नापासर नीं आवैली।

'सेठा आ काईं कैवो ? ब्याव कर्या बाद जवान बन्ना–बन्नी नै अळगा किया राख सका ? भळा ईं मे काईं तुक ? – हरखचन्द जी नै बिसवास ही नीं हो रयो हो कै सेठजी अेडी अनरथ री बात कैय सकै।

'जणै वा। थारै नीं जची तो म्हनै आपरै अठै ओ सगपण नी करणो। – केय नै झट दौलतखाणै सू उठ'र माय चाल्या गया।

हरखचन्द जी मन मसोस र रैयगया अर सेठजी नै सिरफिरो समझ र आपरो रस्तो लियो।

सेठाणी औ सारी बाता बाडै री ओट मे ऊभी सुणै ही। बा भी छाती म धमीड़ा लेय'र रैयगी।

अगली दफै सेठाणी जद बीकानेर गई तो हरखचन्द जी सागै सठजी री जिकी बाता होई बै सारी चोखाराम नै बता दी अर रोवण लागगी। चोखाराम बीं नै थावस बधायो अर बोल्यो – 'बईसा चिन्ता ना करो। राजू तो बिया भी अैडी–बैडी जगा ब्याव नीं करै। बीं आपरै वास्तै अेक छोरी पैला सू ही देख राखी है। आपणी ही जात री हैं। छोरी रो बाप मनसुख बोत भलो आदमी है। बडै बाजार मे कपडे री दुकान है। छोरी आछी भणी–गुणी अर अेक इसकूल मे मास्टरणी है। दो–च्यार दफै आपणै अठै आयोडी है। म्हा स्तै नै बा पसद हैं मनसुख भी इण रिस्तै सू राजी है। म्हारै आगै अेकर बात भी टारी ही। अबै म्हें बींनै सारी बाता जिकी बैन्दोईजी रै मन–रळती री है समझा र बारै कनै सगपण री बात करबा नै भेज देसू। आगै बै आपैई देख लेसी ईं चोखाराम रो चोळको।

सेठाणी नै भाई रै चोळके री बात जद समझ मे आयी तो बा ब्होत राजी होई।

मनसुख अेक रोज सेठजी रै अठै नापासर पूगग्यो। सेठजी नै बीं आपरी बात बतायी अर सेठजी आपरी बात बीं नै। दोनू सगपण करण नै त्यार होयग्या।

छेकड आखातीज रै दिन राजू अर मनसुख री बेटी रीता दोनू बींद–बीनणी बणग्या।

परणीजण रै बाद राजू री बऊ नै अेक दिन भी सासरै नीं बुलवाई। सेठजी नेचीता हा। बै आहीज चावता कै पाच साळ तईं बीनणी नापासर नीं आवै। सेठाणी भी इण बाबत कोई जोर नीं दियो। बींनै जिका हरख कोड करणा हा बै भाई रै अठै कर लिया। रातीजोगै रो दस्तूर बठै ही राख्यो हो। सेठजी नै तो ईं री भणक ही नीं पडणै दी।

चोखाराम रै अठै राजू–रीता री जीवणगाडी भलैसर चालै ही। सेठजी आपरै मन में खुस तो सेठाणी आपरै मन में खुस।

अचाणचकै अेक रोज सेठजी कनै तार आयो कै राजू रै बेटो होयो है बधाई। तार देख्यो'क सेठजी आकळ–बाकळ। ओ काईं होयो ? ओजू जद राजू री बऊ अठै आयी ही कोनी अर मुकळावो ही नीं होयो तो अेकाअेक ओ पाचवो कुण आयग्यो ? म्हारै घर मे जीवा री गिणती बधगी अर म्हनै बेरो ही नीं पडयो।

तार आयो है ओ सुणता ही हरख सू उमड़ती सेठाणी कनै आय'नै बोली– अजी कीं उळटी ना सोचो। थाळी तो जठै बाजणी ही बठै ही बाजी है। थे बेराजी क्यू होवो ? आपणै अठै तो सरू सू ही थाळी बजाणी या ठीकरी फोडणी मना है। म्हारै भाई चोखाराम रै अठै तो कोनी ?

'मतळब !

ओ म्हारै भाई चोखाराम रो चोळको है।

'साची !

'जो राम राची।

सेठजी जठै मूढो टेर'र रैयग्या बठै सेठाणी रै होठा पर पाळणै रा गीत गुनगुनावण लागग्या।

□□

जद सू हरखू समायो लेतू रो सैंस र सूनो होयग्यो। टाबर–टींगर तो हा कोनी लायण अेकली ई भवसागर रैं बीचे आपरी जीवण–डूगी खेवण खातर रैयगी। सासरै मे अेक नै छोड'र सगळा बीं रै लोई रा तिसाया हा। लेतू सैणसीलता री मूरत भगवान री भगत आयै–गयै रो आछी तरै सतकार करण आळी केई री माडी नीं चींतण आळी रात–दिन आपरै काम सू मुतळब राखण आळी अर [illegible] मिनखा री भली बात्यों समझण आळी ही। पण [illegible] [illegible] सासू, जेठ जेठाणी अर सगळा ई बीं नै हर बगत मैणा देवता रैंवता। लात्या अर चूटिया बिना सासू नै तो चैन ई कोनी पडतो। बळयोडै माथे लूण बुरकावण मे जेठाणी किसी कम ही ? आ राड तो हरखू नै गटका'र म्हा सगळा नै ई खा जासी' कैंवतो जेठ कदैई चूकतो कोनीं। पण आ काळा कागला में अेक धोळो हस भी हो। बो हो लेतू रो लाडलो देवर चम्पू।

चम्पू आजकाल रो पढयो–लिख्यो अर समझणो मोटियार हो। गोरो डील अर सुरेख लागणो चैरो। भगवान री किरपा सू आछी नौकरी मिल्योडी ही अर गुलाब रै फूल जूडी बीनणी फेर काई चईजतो ? दोनू धणी–बऊ परदेस रैंवता। छुटटी छपाटी दो दिना खातर घरै आवता अर सगळा सू मिल र दोनू पाछा जावता परा।

पो–माघ रो मईनो हो। सी अेडो डाढो पडतो कै कैवण मे नीं आय। जी चावतो कै आखो दिन चूलै कनै ई बैठयो रैवै।

टूटयोडै माचै माथै गूदडा मे लिपटयोडी लेतू रो सगळो डील थर–थर काप रैयो हो। बारै कडकडावतो सी बाको फाडै ऊभो हो। भखावटो होयग्यो। कूकडा कू–कू बोलण लागग्या।

लेतू नींद सू जागी। आख्या मसळती बारै आयी। घर में केई नै उठयोडौ नइ देख्यो तो जी मे जी आयो। अगूणो ओरो खोल्यो अर माय जा'र घटटी पीसण लागी घडड–घडड। पीसती–पीसती जी मे सोच्यो कै आज तो भगवान म्हारी सुणली। जे सासूजी पैला जाग जावता तो कैडीक होवती। म्हारा लत्ता लेईज जावता।

सूरज आभै सू मूढो बारै काढयो। सासूजी न्हा–धोय'र पूजा–पाठ मे वैठग्या। जेठ–जेठाणी ओजू सेजा मे ई पोढयोडा हा। तायडो आँगणै आवण लाग्यो। अबै जेठजी मन्तर बोलता हेटै उतरया 'राड ओजू चाय ई को बणाई नीं दीखै ? दूजा रो तो ई नै रत्ती भर ई ख्याल कोनी। मिणिया री माळा मेल'र सासूजी भी उठ र आयग्या। हाको सुण र जद लेतू बारै आयी तो जेठजी रा राता–राता नैण देख'र काळजो धडकण लाग्यो। पगा सू ज्यू धरती खिसकगी होवै। नीचो मू कर'र रसोई पासी जावण लागी तो सासूजी झटसी क उठया– 'कींणे वळै है ? न्हाया बिना जे रसोई मे पग ई टेक दियो तो म्है जेडी दूजी कोई भूडी कोनी होसी। ना तो न्हावणो सूजै अर ना काम करणो। आखो दिन गाडो रोटया खावती अर मौज उडावती फिरै अर जद काम रै खातर थोडो घणो कैवा तो राड नै मात आवै।

सासूजी अर जेठजी री काळजै चुभणी बात्या सुण र लेतू रो तो ज्यू सत ई निकळग्यो। बसका फाटण लागगी। आख्या में आसू टपकण लागग्या। जेठजी आपरै माळियै म गया परा। सासूजी–पूजा पाठ मे बैठग्या।

जद आख्या आडो चक्कर आवण लाग्यो तद लेतू रा पग सभळया कोनी अर लडखडावती लढणदैणी आगणै पडगी। माथो फूटग्यो। लोई रा खाळ वैयग्या। डील सगळो लोई सू लथपथ होयग्या। सासूजी झट दैणा उठया अर मालिये पासी जाय'र बेटैनै हेलो मारयो– 'खेमू ! लाडी देख तो सरी ! आ राड धींगाणे मर'र आपा रो मू काळो करासी। सावळ खडी–खडी कैडीक आगणै पडगी है ! कै र लारै पासी मुडया तो चम्पू नै धोती फाड'र लेतू रै पाटा–पोळी करतो देख र इचरज भरग्या। भोर आळी गाडी सू आपरी बऊ लिछमी नै लेय र चम्पू दस दिना री छुट्टी परदेस सू आयो अर घरै आ कळह देखी तो डयोढी मे ई ठहरग्यो।

अरे चम्पू तू ! कैंवता–कैंवता माजी थमग्या ! छोटोडै बेटै नै आपरै ख्याला सू विपरीत देख र थोडासाक सकग्या। फेर नरमाई सू बोल्या– 'बेटा म्हैं तो अबै ई सू धापगी। आखो दिन ई रो काई नै काई टटो रैवै ई हैं। कदैई तो रीसाणी होय'र आखै–आखै दिन रोटी कोनी खावै तो कदेई आवू पैरा रोवती रोंवती थमै कोनी तो कदैई ई रो डील सावळ को रैवै नीं। साची जाणै तो म्हैं जीऊ जद ताई म्हारै जी नै तो सोरप कोनी।

चम्पू बोलो बोलो सुणतो रेयो। लेतू रै माथै सू लोई बैंवतो थम्यो कोनी। चम्पू पाटी माथै पाटी बाधतो जावतो पण फेर बा आळी हो जावती। मा सा सुणावता गया– 'बेटा दिनूगै सू ई नै केवती–कैंवती थकगी कै थारो डील सावळ कोनी पीसणो थाम दै। पण केई री सुणै जणै। आपरै जची करै। भलाई म्हैं तो सारै दिन ई बकती रैऊ म्हनै कुण गिणै ?

'बस करो मा सा। आज म्हनै सगळी बात्या री ठाह पडगी। आ रै कारण था रै जी नै सोरप कोनी'क था रै कारण आ रै जी नै जिको म्हैं आछी तरै समझग्यो। इया तो थे म्हनै भोळावै मे घाल र मनमरजी वात्या कै र था रै कसूर सू छेडै हो जावता पण आज म्हैं निरी ताळ ऊभै ऊभै था रा सै रग ढग देख लिया। चीकणी–चोपडी सुणा'र अबै थे साची बात्या माथै पडदो ना नाखो। जे साची पूछो मा सा तो म्हनै आज ताई आ ठाह नीं ही कै थै आ भुजाईजी सागै अेडा कैवा काढो हो। कैंवतै चम्पू आपरी धोती री लीरी फेर फाडी अर लेतू रै माथै लपेटण लाग्यो।

जेठजी हेटै आया अर बोला–बोला मा सा रै सायरै ऊभग्या। मालियै में ढळयोडै ढोळियै माथै सू टाबर नै रमावता–रमावता बडोडा भुजाईजी काणी आख कर'नै बारी माय सू झाकता हा।

'भाईसा। थे तो सैणा–समझण हा। आ छोटोडा भुजाईजी अेडो काई कसूर करयो जिण रै खातर थे आ पर इत्ती रीस करी। मालियै मे पोढयोडा बडोडा भुजाईजी नै तो थे चाय खातर को कैय सक्या नीं अर लायण आटो पीसती अबळा माथै थे उबळ पडया। आ बात आपा नै सोभा को देवै नीं। कै र चम्पू लेतू रै माथै थोडा–थोडा पाणी रा छाटा देवण लागग्यो।

लेतू नै थोडो–थोडो सो चेतो होयौ। आख्या खोली। मू अगाडी चम्पू नै देख'र माथो ढकण खातर पल्लो उठावण लागी तो हाथ सभळया कोनी।

'म्हारो काय रो घूघटो ? थे तो म्हारै मा जेडा हो। कैंवतै चम्पू लेतू रै माथै रा बिखरयोडा केसा ने सावळ करण लागग्यो।

अेक गाय नै कसाई सू लारो छूटण सू जेडो आणद होवै लेतू नै भी वैडो ई हरख होयो। होळै–होळै चम्पू रो हाथ आपरै हाथ मे ले र झाल लियो। चम्पू आपरो दूजो हाथ लेतू रै माथै फेरतो रैयो। ममता रा आसू लेतू री आख्या सू खळळळ बै निकळया। बळता आसू चम्पू रै गाला माथै सू ढळक'र हेटै पडग्या। थोडी ताळ खातर वातावरण सात होयग्यो। फेर चम्पू लेतू रा आसू पूछया।

थे । चम्पू नै अचाणचक आयोडै देख र लेतू बोली।

अबार आयो ई हू, भोर आळी गाडी सू। जी नै जजमाओ। कैंवते चम्पू लिछमी नै आलो बटको लावण खातर कैयो। लिछमी आळो बटका लायी। चम्पू लेतू रै लोई लाग्योडै डील नै पूछतो–पूछतो बोल्यो– 'दस दिन री छुट्टी आयो हू। जद ताई थे आछी तरै सावळ होज्यासो। फेर म्हैं जावतो थानै म्हारै सागै ई ले जासू परो।

'नई म्हैं बठै नइ । कैंवते–कैंवते लेतू रो सास फूलण लागग्यो।

'घणा ना बोला। थोडा सुसताओ। बोलण जेडी अबार था री हालत कोनी कै र चम्पू लिछमी सू पाणी रो लोटो मगवायो। लिछमी लोटो भर'र लायी। चम्पू रै हाथ मे पाणी रो लोटो देख र लेतू हाथ सू ना करी कै म्हैं पाणी को पीऊ नीं। चम्पू लोटो एक पासी धर दियो।

'ला ल जी ? लेतू रै मू सू निकळयो।

'हा ! कैवो म्हैं थारै कनै ई बैठयो हू। चम्पू उथळो दियो।

'म्हैं अठै ई मा सा री सेवा । कैंवते ई लेतू नै हिचकी आयी। हिचकी री चाल वढगी। देखता–देखता जीभ अटकगी। चैरै रो रग फुरग्यो। डील लोथ होवै ज्यू होयग्यो। नसडी अेक कानी लुढकगी। पछी जावतो रैयो। चम्पू माथो पीटर रैयग्यो। लिछमी बाको फाड दिया। मा सा री आख्या भी आली होयगी।

□□

मा जी

अस्पताळ सू छुट्टी मिळता ई रामनाथ टैक्सी किरायै कर नैं माजौ नैं घरै ले आयो। डाक्टर परची में दवाया लिख दी अर कैय दियो कै डरणै जिस्यी कोई बात कोनी। कमजोरी रै कारण इया ई थोडो चक्कर आयग्यो। ज्यू-ज्यू उमर ढळै इयाकळी हारी-बीमारी तो कोई न कोई घेरो घाळती रै वै।

माजी नै बरसाळी में माचै पर लेटाय'नै रामनाथ बोल्यो- 'म्हैं बाजार जाय'नै थारी दवा ले आऊ जितै थे आराम करो। घडी'क नै बा भी इसकूल सू आ जावैली।

'पूठो आवतै बेळा कोठारीजी नै तो सागै लेवतो आये जिका रै बारे म तू बतावै हो कै बोत भला वकील है। सूता-सूता ई माजी अेक काम और भोळाय दियो। बारै कनै की पुराणा दस्तावेज हा जिका रामनाथ रा जी सा मरतै बगत छोडग्या। आ दस्तावेजा रै खातर ई यै सैर आया हा अर आवता ई बीमार पडग्या'नै अस्पताळ मे भरती होवणो पडयो।

'जे घरै मिळग्या तो लेवतो आसू।

'म्हारै भाग रा जरूर मिळ जासी। -माजी नै पूरो बिसवास हो।

आछी बात है। -पाणी री गिलास माजी रै कनै मेल नै रामनाथ फुरती सू बारै निकळग्यो।

इसकूल सू आय'नै मालती घर मे बडता ई सासूजी नै बरसाळी मे पोढयोडी देखी कै माथो ठणक्यो- आयगी भळै पूठी। भगवान भी झाली कोनी। नीं जाणै कद लारो छूटसी।

पाधरी आपरै कमरै में जाय'नै साड़ी बदळी'नै फेरू बडबडाटा चालू कर दिया जिकौ खासौ ताळ थमणै रो नाव ई किस्यो- 'पतो नीं आ नै कद अकल आसी। जाणबूझ'र माथे पर भारियो उठा ल्याया। अबै उखणता फिरो। म्हैं सू तो ई डोकरी री सेवा को होवै नीं। म्हैं ई रा गू-मूत धोवण नै नीं हू। गाव जावतै टैम कित्तो समझायो कै कठै माजी नै सागै मत ले आया। मिल-मिलाय'नै झट पूठा आ जाया। पण आरो तो हेज फाटै हो नीं। अबै ले आया तो करो ई री सेवा। म्हनैं काई ? म्हैं सू तो खोरसो को होवै नीं। नोकरी करू कै ईरी हाजरी

भरू। पाच भाया री मा है। कोई अेकलै रो ठेको कोनी। गाव में सुसरैजी रै नांव री इत्ती जायदाद है खेत हैं गैणा–गाठा है सै दबा मेल्या है चारू भाया। म्हानै तो दूध मे माखी जाण र बारै काढ दियो। सोच्यो अै सैर मे नोकरी करै आ नै ठाह ई मत घातो। पण म्हे सो जाणा हा वटवारो भी इण वास्तै नीं कर्‌यो कै *कठैई म्है म्हारो हक नीं जता देवा। आ सै ई माजी री चाल हैं। आ दीखै जिस्यी* सहजरी कोनी।

माजी ना नींद म हा अर ना ई कीं बोल्या। माचै पर लेटया–लेटया वोला–बोला सुणता रैया। बऊ री बाता री बळती सू काळजो की कझळाइज्यो तो जरूर पण चेरै पर कोई असर नीं होवण दियो।

रामनाथ बाजार सू पूठो आयो जद तईं मालती रो रेडियो चालू हो। बो कीं खखारो नीं करतो तो फेर बो रेडियो बद ई नीं होवतो।

रामनाथ आय नै माजी नै सायरो देय'र बैठायो अर फेर दवा दीन्ही। इण बीच होलै सी बोल्यो–कोठारीजी मिलग्या हा। अबार बस आवण आळा है।

आ जावै तो न्याल करै। अबै तू अेक काम कर। म्हारी बा कपडा री *गाठडी लेय'नै आ।*

'गाठडी री अदाळ काई जरूरत पडगी ?

'पैला ल्या तो सरी। बींरै माय म्हारी जोखम पडी है।

'जोखम पडी है ! *काई कैय रैया हो ?* रामनाथ इचरज सू आख्या फाडतै पूछ्या।

अरे तू नीं जाणै। अेक बोदै सी पूरियै मे लपेटियोडी है। निरै बरसा सू बींनै सगळा सू छानै मेल राखी है। सोचै ही कदै थारी बऊ गाव आसी तो *बींनै झला देस्यू। पण बीं लायण नै म्हारै कनै आवण री फुरसत ही कठै। नोकरी करै* कै म्हारै कनै आवैं –कैंवती बेला माजी रै चेरै पर हलकी सी हसी फिसळगी।

रामनाथ माय जाय'नै गाठडी दूढबा लागो।

'काई दूढो हो ? –मालती पूछ्यो।

'माजी री गाठडी। आवती बगत जिकी बारै सागै ही।

'बीं नै तो म्हैं ऊचली भखारी में न्हाख दी। अठै हेटै पडी कोजी दीखती। माजी काईं अबै बोदा पूरिया ई पैन्हता रैसी। बारै तो कीं नीं कोई देखसी तो लोग आपा नै भूडा कै सी। धूड आपणै माथै ई पडसी।

'इण सू तनै काईं ? तू काईं जाणै कै बोदी चीजा कित्ती काम री होवैं ? थारो मन तो बोदी चीजा नै हमेसा बारै फैकण रो ई रैवै। –भखारी सू गाठडी उतारतै रामनाथ कैयो।

'तो थे समझो बानै घर मे राखणै सू कोई स्यान बधै ?

'फेर माइता नै भी वोदा जाणर बारै काढ देणा चइजै। – ताना रो तण्णाटो छोड'नै रामनाथ पूठो माजी कनै चल्यो आयो।

'बऊराणी सू बेमतलब उलझणो कठै सू सीखग्यो ? थारै माय आहीज तो कमी है। चिनी सी वात नै लेयर अड़ जावै। वींनै अबार तग करबा रौ काई जरूरत ही ? –रामनाथ सू गाठडी लेय'नै मीठी झिडकी दी।

'तग करबा रौ वात नीं है माजी थे गलत समझ बैठया। थारी वऊ नै गरमी को सदै नीं। इसकूल सू आवै जद पसीनो–पसीनो हो जावैं इण टैम वीनै कीं कैवो खारो लागै। –रामनाथ मूल वात नै उघाडणो नीं चातो हो।

'फेर अेडी वात करै ई क्यू, जिकी वींनै खारी लागै। – माजी समझावती बोली।

अे'ल्यो माजी कोठारी जी पधारग्या। –कोठारीजी नै आवता देख'नै रामनाथ वात नै पलटो दियो।

'पावै लागू माजी। – माय आय'नै कोठारीजी माजी नै पावधोक दिया।

'जीवता रैवा। –माजा आसीस दीन्ही। फेर गाठडी खोल'नै कागद रा अेक लिफाफो निकाल्यो। कोठारीजी नै देंवता बोल्या– 'गाव रै मकान रो ओ अेक पट्टो है। रामनाथ रै जी'सा रै नाव है। ईंनै अवै ई रै नाव करणो है। वै तो अव रैया कोनी म्हारो कठै अगूठो लगवाणो हुवै तो लगवालो।

आछी वात है। ओ काम कालै हो जासी और कोई हुकम ! –कोठारीजी बात री मायली बात समझता बोल्या !

'दूजी बात' म्हैं परणीजी जद रा अै गेणा है। हुवैला कोई पच्चीस–तीस तौला। अै म्हैं ईं री वऊ नै देवणा चावू। कोई हरज तो कोनी। –गैणा दिखळावती माजी पूछयो।

'ई में कोई हरज कोनी। –कोठारी जी की राय मे कोई कानूनी अडचण कोनी।

'जणै थारी वऊ नै हेलो मार। वीं नै अे सभला दू तो म्हारै माथे रो भार मिटै। –माजी कोठारीजी रै साम्है ई मालती नै गैणा भोलावणा चाती ही।

रामनाथ हेलो मार्‌यो– अरे सुणै है। थोडी अठी नै आये। कोठारीजी आया है।

मालती माय आय'नै कोठारीजी नै नमस्ते कर्‌यो। फेर पूछयो– 'काई बात है ?

माजी गेणा री पोटळी सभळावता बोल्या–अठीनै आ म्हारै कनै। आ'ल्यै थारी अमानत। म्है म्हारै कनै राखती–राखती आखती होयगी।

देखतै ई मालती नै अेकर तो आपरी आख्या पर विसवास ई नीं हुयो– 'इत्ता गैणा।

'इत्ता–कित्ता है। पच्चीस–तीस तोला भी नीठ हुवैला। माजी थारै वास्तै ई मेल राख्या हा। अवै ता जी सोरो ? –रामनाथ चुटकी लेवतो सो'क बोल्यो।

पच्चीस–तीस तोला रो नाव सुणता ई मालती तो हकबकी होयगी। मूंढै सूं बोल ई नीं निकळया। जाणै तालो जड़ग्यो हुवै।गैणा साम्हीं इया देखती रैयी कै जाणै कोई अजूबो हुवै।

माजी कोठारीजी नै केयो– 'वकील साब कालै दुपारै तईं थे ओ काम करादो तो म्हारो अठै आवण रो मकसद पूरो हुवै। सिझ्या ताईं म्हैं गाव जावणो चावूं।

'ईं री थे चिन्ता ई ना करो। कालै पैलडकै में थारो हीज काम होसी। –कोठारीजी अेक–दो कागदा पर माजी रो अगूंठो लगावता बानै बिसवास दिरायो।

'जणै वा ! थारा गुण नीं भूलू।

अवै म्हैं चालू। कालै फेर हाजर होसूं। –कैय'नै कोठारी जी चल्या गया'कै मालती पाणी–पाणी होयगी।

□□